सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 156, नई दिल्ली, शुक्रवार 08 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

कौन कहता है कामयाबी किस्मत तय करती है, इरादों में दम हो तो मंजिले भी झुका करती है।

03 'मैकगफिन' - रोहित अरोड़ा की फ्लैट अर्थ डिटेक्टिव थ्रिलर...
06 कृषि प्लास्टिक प्रदूषण
08 सरायकेला मे अवैध बालू,क्वार्ट्ज खनन -परिवहन पर विभाग का जोरदार दबिश

द्वारका इंटरनेशनल स्कूल में "स्कॉलर बेज सैरेमनी" आयोजित

प्रियांशु कुंडू जो परिवहन विशेष समाचार पत्र की सह संपादक के पुत्र हैं द्वारा अपनी श्रेणी में सबसे ज्यादा अंक प्राप्त कर स्कूल का सम्मान बढ़ाया और उसके प्रति स्कूल द्वारा स्कॉलर बेज समारोह में सम्मान प्राप्त किया।

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जुलाई माह में जारी सभी राज्यों के परिवहन आयुक्त को पत्र

आरवीएसएफ द्वारा सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय तथा सीपीसीबी के दिशानिर्देशों का पालन ना करने के संबंध में

Annexure 2

RVSFs with more than 20% gap in CD generation in-comparison to procured vehicles

RVSF State	RVSF Name (Vscrap)	Difference (Procured vs CDs)	Audit Status
UTTAR PRADESH	Simran Recyclings Private Limited	24%	No Audit
UTTAR PRADESH	GLOBAL VEHICLE WASTE MANAGEMENT LLP	24%	No Audit
KARNATAKA	SUHAS AUTOMOTIVE PRIVATE LIMITED	29%	Audit submitted
HARYANA	SCRAP VEHICLE ELV INDIA PRIVATE LIMITED	30%	Audit submitted
UTTAR PRADESH	BHARAT WASTE MANAGEMENT	31%	No Audit
PUNJAB	Bless Green Steel Pvt Ltd	37%	No Audit
UTTAR PRADESH	National Enterprises	42%	No Audit
MAHARASHTRA	B M MOTORS PVT LTD	44%	No Audit
HARYANA	CHUNK RECYCLING INDIA PRIVATE LIMITED	48%	Audit submitted
HARYANA	ORISSA STEELMETALIKS PVT LTD	48%	No Audit
MADHYA PRADESH	Shivam Disposal	50%	No Audit
ANDHRA PRADESH	Hindustan Recycling Hub	50%	No Audit
GUJARAT	Shuchaye Recyclers Private Limited	51%	No Audit
MAHARASHTRA	BHAGYALAXMI ROLLING MILL PVT LTD	51%	No Audit
UTTAR PRADESH	SEVEN STAR AUTO SCRAPING INDIA PRIVATE LIMITED	51%	No Audit
CHANDIGARH	Select Technical Services	53%	No Audit
UTTAR PRADESH	SARAL AUTO SCRAPING INDIA PVT LTD	55%	No Audit
RAJASTHAN	WORTECH ENGINEERS PRIVATE LIMITED	65%	No Audit
MAHARASHTRA	TATA INTERNATIONAL VEHICLE APPLICATIONS PVT LTD	66%	Audit submitted
MADHYA PRADESH	Kakda Stone Crusher	68%	No Audit
UTTAR PRADESH	GRAND GLOBAL JUNKYARD AND RECYCLING LLP	75%	No Audit
HARYANA	RE SUSTAINABILITY AND RECYCLING PRIVATE LIMITED	76%	No Audit
MAHARASHTRA	BHOSALE AUTOMOTIVE	79%	No Audit
HARYANA	SG JUNKYARD AND RECYCLING LLP	83%	No Audit
MAHARASHTRA	Re Vahaan Recyclers Private Limited	85%	No Audit
MAHARASHTRA	Automotive Manufacturers Private Limited	98%	No Audit

Annexure 3

RVSFs proposed to be debarred from Govt. vehicle auctions

State	RVSF Name	Audit
ANDHRA PRADESH	Hindustan Recycling Hub	No
GUJARAT	Shuchaye Recyclers Private Limited	No
HARYANA	SG JUNKYARD AND RECYCLING LLP	No
MAHARASHTRA	BHAGYALAXMI ROLLING MILL PVT LTD	No
MAHARASHTRA	Automotive Manufacturers Private Limited	No
RAJASTHAN	WORTECH ENGINEERS PRIVATE LIMITED	Yes
UTTAR PRADESH	SARAL AUTO SCRAPING INDIA PVT LTD	No
UTTAR PRADESH	Simran Recyclings Private Limited	No
UTTAR PRADESH	GRAND GLOBAL JUNKYARD AND RECYCLING LLP	No

परिवहन विशेष न्यूज

इस पत्र के माध्यम से सड़क परिवहन एवम्-राजमार्ग मंत्रालय ने सभी राज्यों के परिवहन आयुक्तों को सूचित किया की अनुपालन में कमियों के आधार पर कुछ आरवीएसएफ को एमएसटीसी और जीईएम नीलामी पहुंच से तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जा रहा हैं जिनका नाम समेकित सूची के अनुलग्नक 3 पर है।

इसी के साथ सड़क परिवहन एवम्-राजमार्ग मंत्रालय ने राज्यों के परिवहन आयुक्तों एवं संबंधित राज्य पंजीकरण प्राधिकारियों से भी अनुरोध किया है कि वह आवश्यकतानुसार इन आरवीएसएफ पर कार्यवाही करे।

साथ ही इस पत्र के माध्यम से बताया की ई नीलामी पहुंच केवल तभी बहाल की जाएगी जब यह संतोषजनक प्रमाण प्रस्तुत कर पाएंगे की यह आरवीएसएफ सड़क परिवहन एवम्-राजमार्ग मंत्रालय द्वारा अधिसूचित नियमों और सीपीसीबी के दिशा निर्देशों का अनुपालन करते हैं।

यहां आपकी जानकारी हेतु बताना अति आवश्यक है की इनमें से अधिकतर वही आरवीएसएफ है जिन्हें दिल्ली परिवहन आयुक्त द्वारा अपने पद की शक्ति का दुरूपयोग करते हुए जनता के वाहनों को ना सिर्फ परिवहन विभाग द्वारा अपितु दिल्ली नगर निगम और दिल्ली यातायात पुलिस द्वारा भी सुपुर्द करवाया और परिवहन विभाग द्वारा बार बार नोटिस जारी करने के बाद भी प्राप्त वाहनों का स्क्रैप मुल्य ना तो वाहन मालिकों को दिया और ना ही विभागों में जमा कराया और परिवहन आयुक्त की शय पर जनता से लूटकर अरबोपति बन गए।

इस समाचार लेख के साथ आपकी जानकारी हेतु सड़क परिवहन एवम्-राजमार्ग मंत्रालय द्वारा परिवहन आयुक्तों को जारी पत्र की हिंदी रूपांतर प्रति एवम्-जारी समेकित नामों की सूची के प्रति अनुलग्नक 2 एवं 3 प्रस्तुत

संख्या आरटी-23013/1/2022-टी-भाग(1)
भारत सरकार
सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय
परिवहन अनुभाग परिवहन भवन, 1, संसद मार्ग, नई दिल्ली - 110001जुलाई 2025 को

1. सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के अपर मुख्य सचिव/प्रधान सचिव/सचिव (परिवहन)।
2. सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के परिवहन आयुक्त।

3. संबंधित आर.वी.एस.एफ. के मालिक/संचालक अनुलग्नक के अनुसार।

विषयः आरवीएसएफ द्वारा सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय तथा सीपीसीबी के दिशानिर्देशों का पालन न करने के संबंध में।

सर/मैडम,

मुझे यह बताने का निदेश हुआ है कि सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) ने स्वैच्छिक वाहन-बेड़े आधुनिकीकरण कार्यक्रम (V-VMP) या 'वाहन स्क्रैपिंग नीति' नीति शुरू की है जिसका उद्देश्य अनुपयुक्त और प्रदूषणकारी वाहनों को चरणबद्ध तरीके से हटाने के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है। पर्यावरण के अनुकूल तरीके से वाहनों को स्क्रैप करने के लिए पंजीकृत वाहन स्क्रैपिंग सुविधाओं (RVSF) का एक नेटवर्क स्थापित किया जा रहा है। मंत्रालय ने मोटर वाहन (वाहन स्क्रैपिंग सुविधा का पंजीकरण और कार्य) नियम, 2021 को GSR 653 (E) दिनांक 23.09.2021 (GSR 695 (E) दिनांक 13.09.2022 और GSR 212 (E) दिनांक 15.03.2024 द्वारा आगे संशोधित) के माध्यम से अधिसूचित किया है।

2. आरवीएसएफ को अपने द्वारा स्क्रैप किए गए वाहनों के प्रमाण के रूप में जमा प्रमाणपत्र (सीडी) और वाहन स्क्रैपिंग प्रमाणपत्र (सीवीएस) जारी करना आवश्यक है। वाहन के अनुसार, जारी किए गए सीवीएस की संख्या, सीडी की संख्या से काफी कम है। आरवीएसएफ द्वारा सीवीएस जारी न करना वाहन स्क्रैपिंग नीति में परिकल्पित उद्देश्यों के विरुद्ध है और जीएसआर 653 (ई) के नियम 11 और इसके आगे के संशोधनों का अनुपालन नहीं करता है। जिन आरवीएसएफ ने 500 से अधिक वाहन स्क्रैप किए हैं, लेकिन जारी किए गए सीडी की तुलना में सीवीएस जारी करने में 20% से अधिक का अंतर है, उनकी सूची अनुलग्नक 1 में संलग्न है।

3. एमएसटीसी और जीईएम पोर्टल से स्क्रैपिंग के लिए ई-नीलामी के माध्यम से खरीदे गए सरकारी स्वामित्व वाले वाहनों के लिए, स्क्रैपिंग के लिए नीलामी में खरीदे गए वाहनों की संख्या और आरवीएसएफ द्वारा उत्पन्न सीडी की संख्या में बड़ा अंतर है, जो एक अनिवार्य आवश्यकता है। उन आरवीएसएफ की सूची, जिन्होंने नीलामी के माध्यम से 500 से अधिक वाहन खरीदे हैं, लेकिन नीलामी के माध्यम से खरीदे गए वाहनों की तुलना में सीडी जनरेशन में 20% से अधिक का अंतर है, अनुबंध 2 में संलग्न है।

4. मोटर वाहन (वाहन स्क्रैपिंग सुविधा का पंजीकरण और कार्य) नियम, 2021 के नियम 14 के अनुसार, आरवीएसएफ को ऑडिट करना आवश्यक है। प्रत्येक वित्तीय वर्ष में 31 मई तक (वित्तीय वर्ष पूरा होने के दो महीने के भीतर) एनएसडब्ल्यूएस पोर्टल पर ऑडिट रिपोर्ट जमा करें। यह देखा गया है कि बड़ी संख्या में आरवीएसएफ वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए ऑडिट रिपोर्ट जमा करने में विफल रहे हैं। ऐसे सभी आरवीएसएफ से अनुरोध है कि वे एनएसडब्ल्यूएस पोर्टल पर तुरंत ऑडिट रिपोर्ट जमा करें।

5. इसके अतिरिक्त, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के ध्यान में यह भी लाया गया है कि राज्यों में कुछ आरवीएसएफ ईएलवी के पर्यावरणीय रूप से सुदृढ़ प्रबंधनर के सीपीसीबी दिशानिर्देशों का पालन नहीं कर रहे हैं (जैसे, कबाड़ हो चुके वाहनों से प्राप्त इंजनों को बेचना, स्थानीय कबाड़ विक्रेताओं से ई-नीलामी के माध्यम से खरीदे गए सरकारी वाहनों को कबाड़ में बदलना)। ऐसी प्रथाएँ नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए एक चुनौती हैं।

6. इसके अलावा, यह भी उजागर किया गया है कि आरवीएसएफ बिना डिजिटल हस्ताक्षर के सीडी जारी कर रहे हैं। इससे सीडी का व्यापार या उपयोग नहीं हो पाता, जिससे व्यक्ति नीति के तहत प्रोत्साहनों का लाभ नहीं उठा पाता। इसलिए, सभी आरवीएसएफ से अनुरोध है कि वे यह सुनिश्चित करें कि अब तक जारी और भविष्य में जारी की जाने वाली सभी सीडी पर डिजिटल हस्ताक्षर हों ताकि आगे कोई अनियमितता न हो।

7. अनुपालन में उपर्युक्त कमियों के आधार पर, कुछ आरवीएसएफ को एमएसटीसी और जीईएम नीलामी पहुँच से तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जा रहा है (समेकित सूची के लिए अनुलग्नक 3 देखें)। संबंधित राज्य पंजीकरण प्राधिकारियों से भी अनुरोध है कि वे आवश्यकतानुसार इन आरवीएसएफ पर कार्रवाई करें। ई-नीलामी पहुँच केवल तभी बहाल की जाएगी जब यह संतोषजनक प्रमाण प्रस्तुत किया जाएगा कि आरवीएसएफ सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा अधिसूचित नियमों और सीपीसीबी दिशानिर्देशों का अनुपालन करते हैं।

आपका विश्वासी,

(यतेंद्र कुमार)
भारत सरकार के अवर सचिव
ईमेल: us.transport@gov.in
दूरभाष: 011-23739028

भारत सरकार क्या कर रही है?

- क्या भारत सरकार स्वयं अपने द्वारा पारित विधेयक को ही लागू नहीं करवा पा रही?
- या पारित विधेयक को लागू करना/ करवाना ही नहीं चाहती ?
- वर्ष 2023 में भारत सरकार द्वारा विधि विधान सर्वसम्मति से' डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक' पारित किया था। इसके अनुसार, किसी भी संस्था को आपकी अनुमति के बिना आपका व्यक्तिगत डेटा उपयोग करने का अधिकार नहीं होना चाहिए। किन्तु व्यवहार में यह विधेयक आज भी कागजों तक ही सीमित है। ना तो कॉल्स रुके हैं, ना ही डाटा की चोरी रुकी और ना ही डाटा की दलाली थमी है
- "वाहन, ड्राइविंग लाइसेंस और चालान डाटा का लीक होना :,

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

एक बार फिर आपके सामने वाहन, ड्राइविंग लाइसेंस धारकों के व्यक्तिगत डाटा के साथ-साथ चालान डाटा के लगातार लीक होने पर गंभीर चिंता व्यक्त करने के लिए लिख रहा हूँ, जिसे अभी भी टेलीग्राम चैनलों पर खुलेआम शेयर किए जा रहा है और बेचा जा रहा है। हम आपको पहले भी सबूतों के साथ कई बार इससे अभाव कराते आए हैं और साथ ही संबंधित विभागों, मंत्रालयों एवम्-मंत्रियों तक को शिकायतें भेजने के बावजूद, अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है।

हर बार नए सबूत उपलब्ध रहते हैं जो साफ़ तौर पर दिखाते हैं कि कैसे निजी डेटा का सार्वजनिक रूप से व्यापार किया जा रहा है। यह देखना बेहद निराशाजनक है कि साइबर अपराधी खुलेआम अपनी गतिविधियाँ को बेखौफ जारी रख रहा है और ऐसे कार्यों को जो क्राइम है को उसके द्वारा बेखौफ जारी रखते हुए भी संबंधित अधिकारियों की ओर से कोई तत्परता या प्रभावी प्रतिक्रिया नहीं दिखाई जा रही।

यहां यह कहते हुए बुरा भी लगता हैं पर और चुप रहना भी गलत है और बेहद चिंताजनक है कि इस डाटा की सुरक्षा के लिए ज़िम्मेदार लोग बेपरवाह हैं और इन कर्ताओं से पूरी तरह से मिले हुए हैं। आपकी जानकारी के लिए बता दे की यह एक कृत्रिम उत्पीड़न है — जो यह उद्घोष करता है कि हमारे नाम, दूरभाष अंक और आवश्यकताएं अब बाज़ार की संपत्ति बन चुकी हैं।

इतनी बार सबूतों के साथ शिकायतों के बावजूद कार्यवाही नहीं करने के कारण जनता में यह संदेह भी बढ़ रहा है कि आंतरिक लापरवाही या उससे भी बदतर, जानबूझकर लीक - इस समस्या में योगदान दे रहे हैं।

सरकार क्या कर रही है? सरकार ने वर्ष 2023 में 'डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक' पारित किया था। इसके अनुसार, किसी भी संस्था को आपकी अनुमति के बिना आपका व्यक्तिगत डेटा उपयोग करने का अधिकार नहीं होना चाहिए। किन्तु व्यवहार में यह विधेयक आज भी कागज़ों तक ही सीमित है। ना तो कॉल्स रुके हैं, ना ही डेटा की दलाली थमी है। जब तक इन नियमों का पालन कराने के लिए कठोर दंड और स्पष्ट नियंत्रण नहीं होंगे, तब तक नागरिकों की निजता मात्र एक हास्यास्पद अवधारणा बनी रहेगी।

मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि इस मुद्दे को गंभीरता से लें और तत्काल एवं पारदर्शी कार्रवाई शुरू करें। लोगों को यह जानने का अधिकार है कि उनका डेटा सुरक्षित है और सिस्टम उन्हें बार-बार निराश नहीं कर रहा है। उचित प्रतिक्रिया और वास्तविक कदम की अपेक्षा है, एक और चुप्पी की नहीं।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट पंजीकृत द्वारा स्वयं सेवकों को जोड़ने के लिए गूगल फार्म जारी

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट पंजीकृत ज्वाइनिंग के लिए आधार कार्ड की फोटो, एक कलर फोटो एवं नीचे मांगे गए सभी दस्तावेज/पेपर व्हाट्सएप नंबर....., 9811732095 पर भेजने होंगे

Temple of Liberalization And Welfare Allied Trust Regd
टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

निवेदन
जो भी व्यक्ति ट्रस्ट से जुड़ना चाहता है वह अपना फार्म भरकर ग्रुप में भेजे
नाम_____
पिता का नाम _____
शिक्षा_____
पता_____
जिला_____
पिन_____
आधार नंबर _____
मोबाइल नंबर_____
व्यवसाय_____
पद_____
दो परिचित लोगों का फोन नंबर महत्वपूर्ण है।
1 -
.....
2 -
.....
उपरोक्त सभी विवरण जो मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है वह मेरी जानकारी में सही दिया गया है अगर किसी भी प्रकार की कोई जानकारी मेरी तरफ से छुपाई गई है तो उसका जिम्मेदार स्वयं मैं हूं - पूरी ईमानदारी व लगन से मैं ट्रस्ट के सभी सामाजिक कार्यों में साथ रहूंगा। मैं किसी भी तरह से ट्रस्ट के बाध्य नियमों एवं शर्तो के खिलाफ जाता हूं तो संगठन के मुख्य पदाधिकारी मेरे उपर कोई भी कार्रवाई कर सकते हैं

प्रार्थी
_____

दिनांक
_____

नोट - ट्रस्ट के द्वारा किया और कराए जाने वाले कार्य/ सभी पद अवैतनिक है। सभी कार्य/सभी पद सामाजिक सेवा व सुरक्षा के लिए है।
किसी के साथ गलत व्यवहार या गलत बात करने पर आइडी कार्ड स्वतः निरस्त हो जाएगा व आइडी धारक के उपर सख़्त से सख़्त कानूनी कार्रवाई ट्रस्ट द्वारा की जाएगी
आदेश - टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://forms.gle/fPscaf9Y5jHmph3x5

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

रक्षा बंधन की हार्दिक शुभकामनाए

रक्षा बंधन 9 अगस्त-

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को मनाया जाने वाला रक्षा बंधन पर्व इस बार 9 अगस्त शनिवार को मनाया जाएगा। इस बार भद्रा नहीं होने से पूरे दिन राखी बांध सकेंगे। इस बार रक्षाबंधन पर दोपहर 2 बजकर 24 मिनट तक श्रवण नक्षत्र व सर्वार्थ सिद्धि योग का विशेष संयोग रहेगा।जो कि शुभ फल देने वाला योग बन रहा है। राखी बांधने हेतू प्रातः7:49 बजे से 9:27 बजे तक शुभ वेला, दोपहर12:17 बजे से 1:09 बजे तक अभिजित वेला, दोपहर 12:43 से 5:37 बजे तक क्रमशः चल-लाभ-अमृत वेला में रक्षा बंधन का श्रेष्ठ मुहूर्त रहेगा।इस वेला में भाइयों की कलाई पर बहने बाँध सकेगी राखी। श्रवण पूजन सूंण मांडने व जीमाने के लिए 9 अगस्त को भद्रा नहीं होने से पूरा दिन श्रेष्ठ है। शुभेच्छुक।

भगवान शिव को अत्यंत प्रिय वस्तुएं

भगवान शिव तुरंत और तत्काल प्रसन्न होने वाले देवता हैं। इसीलिए उन्हें आशुतोष कहा जाता है। भगवान शिव को प्रिय 11 ऐसी सामग्री जो अर्पित करने से भोलेनाथ हर कामना पूरी करते हैं। यह 11 सामग्री हैं : जल, बिल्वपत्र, आंकड़ा, धतूरा, भांग, कर्पूर, दूध, चावल, चंदन, भस्म, रुद्राक्ष .....

जल : शिव पुराण में कहा गया है कि भगवान शिव ही स्वयं जल हैं शिव पर जल चढ़ाने का महत्व भी समुद्र मंथन की कथा से जुड़ा है। अग्नि के समान विष पीने के बाद शिव का कंठ एकदम नीला पड़ गया था। विष की ऊष्णता को शांत करके शिव को शीतलता प्रदान करने के लिए समस्त देवी-देवताओं ने उन्हें जल अर्पित किया। इसलिए शिव पूजा में जल का विशेष महत्व है।

बिल्वपत्र : भगवान के तीन नेत्रों का प्रतीक है बिल्वपत्र। अतः तीन पत्तियों वाला बिल्वपत्र शिव जी को अत्यंत प्रिय है। प्रभु आशुतोष के पूजन में अभिषेक व बिल्वपत्र का प्रथम स्थान है। ऋषियों ने कहा है कि बिल्वपत्र भोले-भंडारी को चढ़ाना एवं 1 करोड़ कन्याओं के कन्यादान का फल एक समान है। भगवान के तीन नेत्रों का प्रतीक है बिल्वपत्र।

आंकड़ा :शास्त्रों के मुताबिक शिव पूजा में एक आंकड़े का फूल चढ़ाना सोने के दान के बराबर फल देता है।

धतूरा : भगवान शिव को धतूरा भी अत्यंत प्रिय है। इसके पीछे पुराणों मे जहां धार्मिक कारण बताया गया है वहीं इसका वैज्ञानिक आधार भी है। भगवान शिव को कैलाश पर्वत पर रहते हैं।

यह अत्यंत ठंडा क्षेत्र है जहां ऐसे आहार और औषधि की जरुरत होती है जो शरीर को ऊष्मा प्रदान करे। वैज्ञानिक दृष्टि से धतूरा सीमित मात्रा में लिया जाए तो औषधि का काम करता है और शरीर को अंदर से गर्म रखता है।

जबकि धार्मिक दृष्टि से इसका कारण देवी भागवत पुराण में बतया गया है। इस पुराण के अनुसार शिव जी ने जब सागर मंथन से निकले हलाहल विष को पी लिया तब वह व्याकुल होने लगे।

तब अश्विनी कुमारों ने भांग, धतूरा, बेल आदि औषधियों से शिव जी की व्याकुलता दूर की। उस समय से ही शिव जी को भांग धतूरा प्रिय है। शिवलिंग पर केवल धतूरा ही न चढ़ाएं बल्कि अपने मन और विचारों की कड़वाहट भी अर्पित करें।

भांग : शिव हमेशा ध्यानमग्न रहते हैं। भांग ध्यान केंद्रित करने में मददगार होती है। इससे वे हमेशा परमानंद में रहते हैं। समुद्र मंथन में निकले विष का सेवन महादेव ने संसार की सुरक्षा के लिए अपने गले में उतार लिया।

भगवान को औषधि स्वरूप भांग दी गई लेकिन प्रभु ने हर कड़वाहट और नकारात्मकता को आत्मसात किया इसलिए भांग भी उन्हें प्रिय है। भगवा-शिव को इस बात के लिए भी जाना जाता हैं कि इस संसार में व्याप्त हर बुराई और हर नकारात्मक चीज़ को अपने भीतर ग्रहण कर लेते हैं और अपने भक्तों की विष से रक्षा करते हैं।

कर्पूर :भगवान शिव का प्रिय मंत्र है कर्पूरगौरं करूणावतारं.... यानी जो कर्पूर के समान उज्जवल हैं। कर्पूर की सुगंध वातावरण को शुद्ध और पवित्र बनाती है। भगवान भोलेनाथ को इस महक से प्यार है अतः कर्पूर शिव पूजन में अनिवार्य है।

दूध : श्रावण मास में दूध का सेवन निषेध है। दूध इस मास में स्वास्थ्य के लिए गुणकारी के बजाय हानिकारक हो जाता है। इसीलिए सावन मास में दूध का सेवन न करते हुए उसे शिव को अर्पित करने का विधान बनाया गया है।

अक्षत :चावल को अक्षत भी कहा जाता है और अक्षत का अर्थ होता है जो टूटा न हो। इसका रंग सफेद होता है। पूजन में अक्षत का उपयोग अनिवार्य है। किसी भी पूजन के समय गुलाल, हल्दी, अबीर और कुंकुम अर्पित करने के बाद अक्षत चढ़ाए जाते हैं। अक्षत न हो तो शिव पूजा पूर्ण नहीं मानी जाती। यहां तक कि पूजा में आवश्यक कोई सामग्री अनुप्लब्ध हो तो उसके एवज में भी चावल चढ़ाए जाते हैं।

चंदन : चंदन का संबंध शीतलता से है। भगवान शिव मस्तक पर चंदन का त्रिपुंड लगाते हैं। चंदन का प्रयोग अक्सर हवन में किया जाता है और इसकी खुशबू से वातावरण और खिल जाता है। यदि शिव जी को चंदन चढ़ाया जाए तो इससे समाज में मान सम्मान यश बढ़ता है।

भस्म : इसका अर्थ पवित्रता में छिपा है, वह पवित्रता जिसे भगवान शिव ने एक मृत व्यक्ति की जली हुई चिता में खोजा है। जिसे अपने तन पर लगाकर वे उस पवित्रता को सम्मान देते हैं। कहते हैं शरीर पर भस्म लगाकर भगवान शिव खुद को मृत आत्मा से जोड़ते हैं। उनके अनुसार मरने के बाद मृत व्यक्ति को जलाने के पश्चात बची हुई राख में उसके जीवन का कोई कण शेष नहीं रहता।

ना उसके दुख, ना सुख, ना कोई बुराई और ना ही उसकी कोई अच्छाई बचती है। इसलिए वह राख पवित्र है, उसमें किसी प्रकार का गुण-अवगुण नहीं है, ऐसी राख को भगवान शिव अपने तन पर लगाकर सम्मानित करते हैं। एक कथा यह भी है कि पत्नी सती ने जब स्वयं को अग्नि के हवाले कर दिया तो क्रोधित शिव ने उनकी भस्म को अपनी पत्नी की आखिरी निशानी मानते हुए तन पर लगा लिया, ताकि सती भस्म के कणों के जरिए हमेशा उनके साथ ही रहे।

रुद्राक्ष : भगवान शिव ने रुद्राक्ष उत्पत्ति की कथा पार्वती जी से कही है। एक समय भगवान शिवजी ने एक हजार वर्ष तक समाधि लगाई। समाधि पूर्ण होने पर जब उनका मन बाहरी जगत में आया, तब जगत के कल्याण की कामना वाले महादेव ने अपनी आंख बंद कीं।

तभी उनके नेत्र से जल के बिंदु पृथ्वी पर गिरे। उन्हीं से रुद्राक्ष के वृक्ष उत्पन्न हुए और वे शिव की इच्छा से भक्तों के हित के लिए समग्र देश में फैल गए। उन वृक्षों पर जो फल लगे वे ही रुद्राक्ष है।

रुद्राष्टकम 4th श्लोक और उसका अर्थ:

श्लोक

मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालम्
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्
चलत्कुण्डलं भूसुनेत्रं विशालम्
प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि

हिंदी अनुवाद :

1. जो हिरणराज (मृग) की खाल को वस्त्र के रूप में धारण करते हैं और जिनके गले में मुण्डों की माला है।
2. जिनका मुख प्रसन्न है, गला नीलकंठ (नीला) है, और जो करुणामय (दयालु) हैं।
3. जिनके कानों में कुण्डल झूल रहे हैं, भौंहें सुंदर हैं, और नेत्र विशाल हैं।
4. मैं उन प्रिय शंकर और सर्वनाथ (सबके स्वामी) का भजन करता हूँ।

हयग्रीव जयंती आज

हयग्रीव जयंती भगवान विष्णु के हयग्रीव अवतार की जयंती है, जिसे भाद्रपद शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन भगवान हयग्रीव की पूजा ज्ञान, बुद्धि और विद्या की प्राप्ति के लिए की जाती है। भगवान विष्णु के प्रमुख 24 अवतारों में से 'हयग्रीव' भी एक अवतार हैं।

हयग्रीव जयंती कब है ?

==========

हयग्रीव जयंती- 08 अगस्त, शुक्रवार (श्रावण, शुक्ल पक्ष पूर्णिमा)

पूर्णिमा तिथि प्रारम्भ - अगस्त 08, 2025 को 02:12 पी एम बजे से

पूर्णिमा तिथि समाप्त - अगस्त 09, 2025 को 01:24 पी एम बजे तक

हयग्रीव जयंती पूजा मुहूर्त- 04:27 पी एम से 07:07 पी एम मिनट तक रहेगा।

इसकी कुल अवधि - 02 घण्टे 40 मिनट्स की होगी।

हयग्रीव भगवान कौन हैं ?

==========

भगवान हयग्रीव, श्रीविष्णु के एक दिव्य अवतार हैं जिनका स्वरूप अश्वमुख यानी घोड़े के मुख वाला है। वे ज्ञान, बुद्धि, वेद और विद्या के देवता माने जाते हैं। शास्त्रों के अनुसार, जब दैत्य मधु और कैटभ ने वेदों को चुराकर पाताल में छिपा दिया था, तब भगवान विष्णु ने हयग्रीव रूप में अवतार लेकर वेदों की रक्षा की थी। हयग्रीव को विशेष रूप से विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं, और आध्यात्मिक साधकों द्वारा पूजनीय माना जाता है।

क्या है हयग्रीव जयंती ?

==========

हयग्रीव जयंती भगवान हयग्रीव के अवतरण दिवस के रूप में मनाई जाती है। यह दिन श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि को आता है और दक्षिण भारत विशेषकर तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, और कर्नाटक में बड़े श्रद्धा से मनाया जाता है। इसे वेदों की रक्षा और ज्ञान की विजय के प्रतीक दिवस के रूप में देखा जाता है।

क्यों मनाते हैं हयग्रीव जयंती ?

==========

हयग्रीव जयंती इस स्मृति के रूप में मनाई जाती है कि कैसे भगवान ने अज्ञान, भ्रम और असुरता पर विजय पाकर वेदों को पुनः प्राप्त किया। यह दिन विशेष रूप से विद्या, विवेक, स्मरण शक्ति और आध्यात्मिक जागरण की प्राप्ति के लिए मनाया जाता है। विद्यार्थियों के लिए यह दिन अत्यंत शुभ माना जाता है।

हयग्रीव जयंती का महत्व

==========

वेदों की रक्षा की प्रेरणा
ज्ञान और बुद्धि का प्रतीक दिन
साधकों व विद्यार्थियों के लिए विशेष दिन
आध्यात्मिकता में उन्नति का अवसर
श्रीविष्णु के दुर्लभ रूप की आराधना

हयग्रीव जयंती की पूजा विधि

==========

हयग्रीव जयंती पर भगवान विष्णु के हयग्रीव अवतार की पूजा करने का विशेष महत्व है। इस दिन की जाने वाली पूजा अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती है। इस दिन पूजा-पाठ करके आप भगवान हयग्रीव की कृपा पा सकते हैं।

हयग्रीव जयंती के दिन प्रातःकाल उठकर, स्नान तथा नित्य कर्मों से निवृत हो जाएं।

फिर इसके पश्चात स्वच्छ वस्त्र धारण करें। अब पूजा स्थल पर पूर्व दिशा व उत्तर दिशा की ओर मुख कर के आसन ग्रहण करें।

फिर सर्वप्रथम भगवान श्री गणेश जी की प्रतिमा को गंगाजल से साफ करके उन्हें वस्त्र अर्पित करें।

अब गणपति जी को गंध, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत आदि चढ़ाएं।

इसके बाद अब भगवान श्री हयग्रीव जी का पूजन करें। इसके लिए सबसे पहले हयग्रीव जी को पंचामृत और जल से स्नान कराएं।

फिर उनकी प्रतिमा पर पुष्प माला पहनाएं और

ॐ नमो भगवते आत्मविशोधनाय नमः॥

ॐ वागीश्वर्यै विद्महे हयग्रीवाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात॥

मंत्र का उच्चारण करते हुए, उनका तिलक करें।

इसके पश्चात, आप उन्हें धूप, दीप, अक्षत, मौसमी फल, भोग समेत संपूर्ण पूजा सामग्री अर्पित करें।

आपको बता दें, इस दिन विष्णु चालीसा, विष्णु सहस्रनाम का पाठ करना भी अत्यंत शुभ माना जाता है।

अंत में भगवान का ध्यान करते हुए प्रभु की आरती उतारें और किसी भी भूल के लिए क्षमा याचना करें।

पूजा संपूर्ण होने के बाद प्रसाद अवश्य वितरित करें।

कुत्ते ने काटा

कुत्ते ने काटा इंजेक्शन लेना है क्या?

कुत्ता पागल भी था अब इंजेक्शन लेना है क्या..???

पागल कुत्ता था या आप????

1970 से 2001 तक कुत्ता काटे तो 21 इंजेक्शन लगते थे, 2002 से 2007 तक 14 लगते थे, 2008 से 2009 तक 5, 2010 से 2014 तक 4 और अब 3 लगते है

अब आप सोचेंगे कि वैक्सीन पहले से अच्छी हो गयी होगी इसलिए इंजेक्शन कम हुए.....

क्या वैक्सीन ज्यादा अच्छी है अब.??.....नहीं

आप विश्वास नही करेगे लेकिन सच ये है कि,मांग बढ़ गयी है वैक्सीन की और सप्लाई कम है इसलिए इंजेक्शन कम हुए है, इसलिए WHO और JNC ने ये प्रोटोकाल बनाया है की चलो अब 3 ही इंजेक्शन लगा दो, 21 नही है तो, कुछ साल रुकिए केवल 1 इंजेक्शन ही लगा करेगा, क्योंकि जनसख्या बढ़ रही है तो इंजेक्शन कम होने ही है...मांग ज्यादा है।।

एक उदाहरण से समझिए।..

मान लीजिये 2 लोग एक का नाम A है दूसरे का B है, दोनो को कुत्ते ने काटा, अब डॉक्टर ने बोला कि रैबीज का इंजेक्शन लगेगा

अब व्यक्ति A और B को काटे कुत्ते की जांच की गई, तो पता चला व्यक्ति A को जिस कुत्ते ने काटा उसमें रैबीज का वायरस ही नही था ,जब कुत्ते को ही रैबीज नही था फिर आपको कैसे आएगा???

फिर जबरदस्ती का वायरस शरीर मे क्यों।...

और जिस कुत्ते ने B को काटा उस कुत्ते की जांच की गई तो पता चला उसमे रैबीज का वायरस था

फिर इंजेक्शन दोनो को क्यों..????

ज्यादा जरूरी ये है कि पहले उस कुत्ते की जांच की जाए कि क्या उसमें रैबीज था..???

अब बात आती व्यक्ति B की जिसे रैबीज वाले कुत्ते ने काटा है, क्या उसे रैबीज का इंजेक्शन लेना चाहिए..जवाब है नहीं

क्योंकि जिस इंसान B को रैबीज वाले कुत्ते ने काटा है उसे इंजेक्शन से और ज्यादा रैबेज क्यों दे रहे है?, आपके शरीर मे रैबीज के वायरस कुत्ते के काटने से जा ही चुके है फिर इंजेक्शन से और ज्यादा क्यों ले रहे...??

वैक्सीन कोई दवा नहीं है वह उन्ही बैक्ट्रिया का मृत रूप है जो शरीर मे जाकर सक्रीय हो जाएगा, जो और ज्यादा नुकसान करेगा,

अगर कुत्ते में रैबीज ही नही है तो इंजेक्शन की जरूरत ही नही, और अगर कुत्ते में रैबीज था तो और ज्यादा वायरस डालने की भी जरूरत नहीं

अब बात आती है तो रैबीज क्या..?

बेशक रैबीज से मृत्यु होती है ,लेकिन यदि आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर है तभी मृत्यु हो सकती अन्यथा कभी नही, क्योंकि शरीर मे हर रोग का एंटीवायरस है

बात अंत मे वही है कि रैबीज से जब कुत्ता नही मरा तो हम

और यदि कुत्ता काट भी ले तो क्या करना है उसकी पोस्ट मैं पहले कर चुका हूँ

हर शुक्रवार करें मां वैभव लक्ष्मी की पूजा, प्राप्त होनी धन-समृद्धि...

हिंदू धर्म में मां लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूपों की पूजा-अर्चना की जाती है। शुक्रवार को मां वैभव लक्ष्मी की पूजा की जाती है। कहते हैं कि पूरे मन से मां वैभवलक्ष्मी की पूजा करने से आर्थिक परेशानियां दूर होती हैं और भक्त की हर मनोकामना पूरी होती है। साथ ही घर में सुख शांति भी रहती है। आइए आपको बताते हैं कि शुक्रवार को मां वैभव लक्ष्मी की पूजा कैसे करें और व्रत का पालन कैसे करें।

अगर लंबे समय से कई कोशिशों के बाद भी आपका कोई सोचा हुआ काम नहीं बन पा रहा है या फिर धन के मामले में लगातार हानि हो रही है तो मां वैभव लक्ष्मी की पूजा जरूर करें। इसके अलावा यदि कोर्ट कचहरी के मामले से आप नहीं निकल पा रहे हैं या फिर विद्यार्थियों को सफलता नहीं मिल पा रही है तो कहते हैं कि शुक्रवार को वैभव लक्ष्मी का व्रत करने से उन्हें सफलता प्राप्त होती है। वैभव लक्ष्मी की कृपा से सभी मनोकामना पूरी होती है।

मां वैभव लक्ष्मी की पूजा विधि

शुक्रवार के दिन सुबह स्नान के बाद महिलाएं शुद्ध होकर साफ वस्त्र धारण करें। सुबह ही घर के मंदिर की साफ-सफाई करें और मां लक्ष्मी का ध्यान करके सारा दिन व्रत रखने का संकल्प लें। पूरे दिन आप फलाहार करके यह व्रत रख सकते हैं। चाहें तो शाम को व्रत पूर्ण होने के बाद अन्न ग्रहण कर सकते हैं।

शुक्रवार को पूरे दिन व्रत रखने के बाद शाम को फिर से स्नान करें। पूजन करने के लिए पूर्व दिशा की ओर मुख करके आसन पर बैठ जाएं। उसके बाद चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर वैभव लक्ष्मी की तस्वीर या मूर्ति स्थापित करें और श्रीयंत्र को तस्वीर के पीछे या बगल में रखें।

वैभव लक्ष्मी की तस्वीर के सामने मुट्ठी भर चावल का ढेर लगाएं और उस पर जल से भरा हुआ तांबे का कलश स्थापित करें। इसके बाद कलश के ऊपर एक छोटी सी कटोरी में सोने या चांदी का कोई आभूषण रख लें। वैभव लक्ष्मी की पूजा में लाल चंदन, गंध, लाल वस्त्र, लाल फूल जरूर रखें।

प्रसाद के लिए घर में गाय के दूध से चावल की खीर बनाएं। अगर किसी कारणवश खीर न बना सकें तो मां लक्ष्मी को भोग में आप सफेद मिठाई या फिर बर्फी भी दे सकते हैं। पूजा के बाद लक्ष्मी स्तवन का पाठ करें या फिर वैभव लक्ष्मी मंत्र का यथाशक्ति जप करें....

या रक्ताम्बुजवासिनी विलासिनी चण्डांशु तेजस्विनी।

या रक्ता रुधिराम्बरा हरिसखी या श्री मनोल्हादिनी॥

या रत्नाकरमन्थनात्प्रगटिता विष्णोस्वया गेहिनी।

सा मां पातु मनोरमा भगवती लक्ष्मीश्च पद्मावती॥

वैभव लक्ष्मी के व्रत में श्रीयंत्र की भी पूजा करें। पूजा के वक्त श्रीयंत्र को लक्ष्मी माता के पीछे रखें और पहले उसकी पूजा करें और उसके बाद वैभव लक्ष्मीजी की पूजा करें। उसके बाद व्रत कथा पढ़ें और फिर गाय के घी से दीपक जलाकर आरती करें। कथा पूजन के बाद मन ही मन कम से कम 7 बार अपनी मनोकामना को दोहराएं और मां लक्ष्मी का ध्यान करें। उसके बाद मां लक्ष्मी का प्रसाद ग्रहण करके घर के मुख्य द्वार पर घी का एक दीपक जलाकर रखें।

दबाव में नहीं, संवाद में विश्वास: भारत का वैश्विक संदेश

भारत की धरती, जो कभी गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी थी, आज विश्व मंच पर अपनी सशक्त आवाज और अडिग संप्रभुता के साथ खड़ी है। लेकिन अमेरिका, जो खुद को विश्व का नेतृत्वकर्ता मानता है, भारत की इस स्वतंत्रता और रूस के साथ उसकी अटूट दोस्ती को पचा नहीं पा रहा। डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर 25% अतिरिक्त टैरिफ थोपकर कुल 50% शुल्क का बोझ डाल दिया है, यह कहते हुए कि भारत रूसी तेल की खरीद के जरिए रूस की युद्ध मशीन को ईंधन दे रहा है। यह कदम न केवल भारत-अमेरिका संबंधों को तनाव की ओर धकेलता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि अमेरिका अपनी भू-राजनीतिक दादागिरी को आर्थिक हथियारों के जरिए लागू करना चाहता है। लेकिन भारत, जो सदियों से हर तूफान को झेलकर और मजबूत हुआ है, इस बार भी न झुकेगा, न रुकेगा।

भारत और रूस का रिश्ता केवल व्यापार का नहीं, बल्कि विश्वास और आपसी सम्मान का प्रतीक है। जब 2022 में यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिमी देशों ने रूस पर प्रतिबंधों की बौछार कर दी, भारत ने रूसी तेल की खरीद को बढ़ाया। जनवरी 2022 में जहां भारत रूस से मात्र 0.2% तेल आयात करता था, वहीं अगस्त 2025 तक यह आंकड़ा 40% तक पहुंच गया। भारत अब रोजाना 20 लाख बैरल से अधिक रूसी तेल आयात करता है, जिसने न केवल भारत को अरबों डॉलर की बचत कराई, बल्कि घरेलू ईंधन कीमतों को स्थिर रखने में भी मदद की। यह सस्ता तेल भारत की ऊर्जा सुरक्षा का आधार बना, जिसने 1.4 अरब लोगों की जरूरतों को पूरा करने में अहम भूमिका निभाई। भारत का यह कदम वैश्विक तेल बाजार में स्थिरता लाने वाला साबित हुआ, क्योंकि रूसी तेल की आपूर्ति ने विश्व में तेल की कीमतों को नियंत्रित रखा। लेकिन अमेरिका, जो खुद रूस से यूरेनियम और पैलेडियम जैसी सामग्रियों का आयात करता है, भारत को निशाना बनाकर अपनी दोहरी नीति का परिचय दे रहा है।

ट्रंप का दावा कि भारत रूस की युद्ध मशीन को समर्थन दे रहा है, न केवल आधारहीन है, बल्कि हास्यास्पद भी है। यूनाइटेड स्टेट्स ट्रेड रिप्रेजेंटेटिव (USTR) के आंकड़ों के अनुसार अमेरिका ने 2024 में रूस के साथ 30 हजार करोड़ रुपये से अधिक का व्यापार किया। अगर रूस से व्यापार युद्ध को बढ़ावा देता है, तो अमेरिका को पहले अपनी नीतियों की समीक्षा करनी चाहिए। भारत ने यह भी याद दिलाया कि बाइडेन प्रशासन ने स्वयं भारत को रूसी तेल खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया था, ताकि वैश्विक ऊर्जा बाजार में उथल-पुथल न हो। भारत ने रूसी तेल को रिफाइन कर यूरोप और अन्य देशों को सस्ता ईंधन उपलब्ध कराया, जिससे पश्चिमी देशों को ही फायदा हुआ। फिर भी, ट्रंप ने भारत को निशाना बनाकर यह साबित कर दिया कि उनकी अमेरिका फर्स्ट नीति वास्तव में "अमेरिका अकेला" बनकर रह गई है।

ट्रंप का 50% टैरिफ भारत के लिए आर्थिक चुनौती तो ला सकता है, लेकिन यह भारत की प्रगति को रोक नहीं सकता। 2024-25 में भारत ने अमेरिका को 87.4 बिलियन डॉलर का सामान निर्यात किया, जिसमें फार्मास्यूटिकल्स, कपड़ा, और आईटी सेवाएं शामिल हैं। इस टैरिफ से भारतीय कपड़ा और जूता उद्योग पर असर पड़ सकता है, क्योंकि अमेरिका इनका सबसे बड़ा बाजार है। लेकिन भारत ने पहले ही जवाबी रणनीति तैयार कर ली है। इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन और हिंदुस्तान पेट्रोलियम जैसी रिफाइनरियों ने रूसी तेल की खरीद पर अस्थायी रोक लगाई है और सऊदी अरब, इराक जैसे वैकल्पिक स्रोतों की तलाश शुरू कर दी है। इसके साथ ही, भारत ने मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियानों के जरिए स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा दिया है, जिससे वह वैश्विक व्यापार में अपनी स्थिति को और मजबूत कर रहा है।

भारत की कूटनीति इस पूरे प्रकरण में एक मिसाल बनकर उभरी है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए वही रास्ता चुनेगा, जो उसके नागरिकों के लिए सबसे लाभकारी हो। यह बयान भारत की उस रणनीतिक स्वायत्तता को दर्शाता है, जो किसी भी बाहरी दबाव के सामने नहीं झुकती। भारत ने रूस के साथ अपने रक्षा संबंधों को भी मजबूती से बनाए रखा है। एस-400 मिसाइल सिस्टम, सुखोई जेट, और ब्रह्मोस मिसाइल जैसे सौदे भारत की रक्षा ताकत का आधार हैं। ट्रंप की धमकी कि भारत को रूस से हथियार खरीदना बंद करना चाहिए, भारत की संप्रभुता पर सीधा हमला है। लेकिन भारत ने बार-बार साबित किया है कि वह अपने राष्ट्रीय हितों से समझौता नहीं करता। रूस ने दशकों तक भारत का साथ दिया, खासकर उन मौकों पर जब अमेरिका ने हथियारों की आपूर्ति से इनकार किया था।

ट्रंप की नीति को देखें, तो यह साफ है कि वह भारत पर दबाव बनाकर रूस को कमजोर करना चाहते हैं। लेकिन यह रणनीति उलटे उनके लिए ही भारी पड़ सकती है। भारत ने अप्रैल-जून 2025 तिमाही में अमेरिका से तेल आयात को 114% बढ़ाया है, जिससे यह साफ है कि भारत वैकल्पिक रास्तों को तलाशने में सक्षम है। इसके अलावा, भारत ने ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन जैसे मंचों पर अपनी सक्रियता बढ़ाकर वैश्विक कूटनीति में अपनी धमक स्थापित की है। ट्रंप का यह दावा कि भारत अमेरिकी सामानों पर 100% टैरिफ लगाता है, भ्रामक है। भारत का टैरिफ ढांचा विश्व व्यापार संगठन के नियमों के अनुरूप है, और अमेरिका भी अपने सामानों पर कई तरह के शुल्क लगाता है।

यह टैरिफ युद्ध भारत के लिए एक चुनौती है, लेकिन यह भारत की ताकत को और निखारने का अवसर भी है। भारत ने न केवल रूस के साथ अपनी दोस्ती को मजबूत किया, बल्कि वैश्विक मंच पर अपनी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता का परचम लहराया। अमेरिका की यह दादागिरी भारत को झुका नहीं सकती, क्योंकि भारत अब वह देश नहीं, जो विदेशी दबाव में अपने हितों को ताक पर रख दे। भारत ने सस्ते तेल से अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत किया, वैश्विक ऊर्जा बाजार को स्थिरता दी, और रूस के साथ अपने रणनीतिक संबंधों को अटूट रखा। यह समय है कि अमेरिका अपनी एकतरफा नीतियों को छोड़कर भारत जैसे उभरते विश्व शक्ति के साथ रचनात्मक साझेदारी की दिशा में कदम बढ़ाए। भारत की यह अडिग भावना न केवल इसके नागरिकों के लिए गर्व का विषय है, बल्कि यह विश्व को यह संदेश भी देती है कि भारत अब किसी के सामने सिर नहीं झुकाएगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

"मैकगफिन" - रोहित अरोड़ा की फ्लैट अर्थ डिटेक्टिव थ्रिलर 8 अगस्त को सिनेमाघरों में

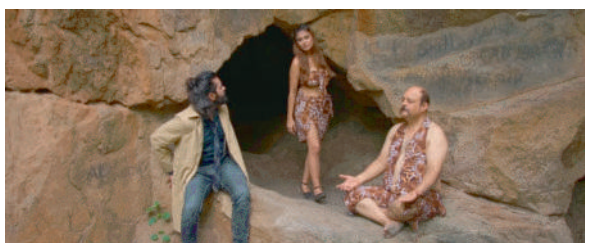

मुख्य संवाददाता

फिल्म निर्माता रोहित अरोड़ा इस हफ्ते अपनी अब तक की सबसे बोल्ड फिल्म - ₹मैकगफिन₹ के साथ बड़े पर्दे पर वापसी कर रहे हैं। यह एक ऐसी जासूसी थ्रिलर है जो हमारे समय के सबसे विवादास्पद षड्यंत्र सिद्धांतों में से एक की पृष्ठभूमि पर आधारित है। यह फिल्म 8 अगस्त को रोअर पिक्चर कंपनी के बैनर तले पूरे भारत के सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी, जिसका सह-निर्माण रोहित अरोड़ा और सारा दुर्गा ने किया है।

कहानी कहने के अपने गहन और गहन दृष्टिकोण के लिए जाने जाने वाले रोहित अरोड़ा न केवल अपनी फिल्मों का निर्देशन करते हैं - बल्कि उन्हें लिखते भी हैं, संपादित करते हैं, और अक्सर उनमें अभिनय भी करते हैं। इसलिए नहीं कि वह कैमरे के सामने आना चाहते हैं - दरअसल, उन्होंने इससे बचने की कोशिश की - बल्कि इसलिए कि उनका कहना है कि उनकी कहानियों को बनाने में लगने वाले वर्षों में उनके द्वारा मांगे गए भावनात्मक भार को कोई और नहीं उठा सकता। अरोड़ा बताते हैं, ₹ये किरदार बहुत कुछ झेलते हैं, और वे कहानी के अंदर इतने लंबे समय तक रहते हैं।₹ ₹यह अभिनय के बारे में नहीं है - यह पूरी तरह से संवेदनशील होने के बारे में है। यात्रा। किसी और से ऐसा चाहना मुश्किल है।"

मैकगफिन भारतीय दर्शकों द्वारा देखी गई किसी भी चीज़ से अलग है। यह एक निजी जासूस की कहानी है जिसे ₹मैकगफिन₹ नामक एक रहस्यमय व्यक्ति का पता लगाने के लिए काम पर रखा गया है। लेकिन वह जितना गहराई से खोजता है, दुनिया उतनी ही अजनबी होती जाती है - वास्तविकता, विश्वास और पागलपन को धुंधला करती जाती है। यह फिल्म एरिक दुबे की किताब द फ्लैट अर्थ कॉन्सपिरेसी से थोड़ी प्रेरणा लेती है, लेकिन उस आधार को अप्रत्याशित दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में ले जाती है।

आश्चर्यजनक रूप से हार के 6 माह बाद यह "आप" नेता अपनी हार का ठीकरा चुनाव आयोग पर फोड़ रहे हैं : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है कि आम आदमी पार्टी सांसद संजय सिंह के चुनाव आयोग पर आरोप प्रत्यारोप उनकी राजनीतिक हताशा का प्रमाण हैं। सचदेवा ने कहा है कि संजय सिंह ही नहीं खुद 'आप' अध्यक्ष अरविंद केजरीवाल भी देश में विपक्ष के राजनीतिक सर्कल में अपनी प्रसंगिता खो चुके हैं और चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठा कर वह खबरों में दिखना चाहते हैं। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है कि दिल्ली का चुनाव हारने के बाद से आम आदमी पार्टी नेता हारे हताश घूमते दिखते रहे हैं। अपनी सरकार की अराजकता, अकर्मण्यता और भ्रष्टाचार के चलते जनता द्वारा नकारे जाने के बाद से ₹आपइ नेता यह नहीं समझ पा रहे थे कि जनता एवं मीडिया को क्या जवाब दें पर आज आश्चर्यजनक रूप से हार के 6 माह बाद यह ₹आपइ नेता अपनी हार का ठीकरा चुनाव आयोग पर फोड़ रहे हैं। वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है कि संजय सिंह का आज का ब्यान लोकतंत्र का अपमान है और बेहतर होता कि ₹आपइ नेतृत्व हार के कारणों पर आत्मचिंतन करें और अपने शासनकाल की गलतियों के लिए दिल्ली की जनता से माफी मांगें।

मज़बूत व्यावसायिक गति और विशिष्ट उत्पाद इकोसिस्टम के सहारे, ब्रांड नवाचार-आधारित विकास के अगले अध्याय के लिए तैयार

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। भारत के अग्रणी कम्फर्ट-टेक ब्रांड दस्लीपकंपनी ने ने भारत की दो सबसे बड़ी और सबसे प्रतिष्ठित निजी इक्विटी फर्मों क्रिसकैपिटल और 360 वन एसेट के नेतृत्व में सीरीज डी फंडिंग राउंड से 480 करोड़ रुपये हासिल किए है।

यह निवेश कंपनी के विनिर्माण को बढ़ाने, ऑफलाइन मौजूदगी को मज़बूत करने, नई उत्पाद श्रेणियों में प्रवेश करने और को खोलने और नवाचार और प्रतिभा में निवेश करने की योजनाओं को गति देने के लिए इस्तेमाल होगा, जिससे कंपनी अपने विकास के अगले चरण में प्रवेश के लिए तैयार होगी।

कुछ ही वर्षों में दस्लीपकंपनी ने 700 करोड़ रुपये से अधिक का वार्षिक राजस्व रन रेट (ARR) हासिल किया है, वित्त वर्ष 2024-25 में 60 फीसदी सालाना वृद्धि दर्ज की और हाल ही में अपना 150वां एक्सक्लूसिव ब्रांड आउटलेट लॉन्च किया।

पिछली फंडिंग के बाद से कंपनी का मासिक राजस्व दोगुना हुआ है और टीम का आकार 650 से बढ़ाकर 1,500 से अधिक कर्मचारियों तक किया है, जो मज़बूत उपभोक्ता मांग और संचालन क्षमता को दर्शाता है।

नवीनतम पूंजी का रणनीतिक उपयोग निम्नलिखित क्षेत्रों में होगा:

कैपेक्स निवेश में तेजी लाना, जिसमें बढ़ती मांग को पूरा करने और उत्पाद गुणवत्ता पर पूर्ण नियंत्रण बनाए रखने के लिए नई विनिर्माण सुविधाओं की स्थापना शामिल है।

ऑफलाइन रिटेल उपस्थिति का विस्तार, विशेष रूप से मेट्रो और टियर-1 शहरों में, जहां अनुभव-आधारित खरीदारी निर्णायक होती है।

नयी कम्फर्ट कैटेगरी में प्रवेश, जो भारत में बैठने और सोने के तरीकों में परिवर्तन लाने के ब्रांड विज़न के अनुरूप हो।

अनुसंधान एवं विकास (R&D) और उत्पाद नवाचार में निवेश, विशेष रूप से कंपनी की पेटेंटेड SmartGRID® तकनीक को रोज़मर्रा के उपयोग में विस्तार करने पर ध्यान केंद्रित करना।

कोर टीम को मजबूत करना, उत्पाद, तकनीक, डिज़ाइन और रिटेल संचालन जैसे क्षेत्रों में कंपनी की अनूठी आरओपीओ (रिसर्च ऑनलाइन, परचेज ऑफलाइन) रणनीति रूपांतरण और वफ़ादारी को बढ़ा रही है, जिसमें ऑफलाइन खुदरा बिक्री का योगदान कुल राजस्व का 70 फीसदी है।

डिजिटल खोज और भौतिक अनुभव का यह सहज मिश्रण ब्रांड पर भरोसे और व्यावसायिक वृद्धि, दोनों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण साबित हुआ है। एवेंडस कैपिटल इस लेन-देन में स्लीप कंपनी का विशेष वित्तीय सलाहकार रहा है।

प्रियंका सलोट और हर्षिल सलोट, को फाउंडर, दस्लीपकंपनी ने कहा, "यह फंडिंग हमारे सफर के अगले चरण को ऊर्जा प्रदान करती है, ताकि हम भारत में कम्फर्ट-टेक क्रांति का नेतृत्व कर सकें। हम तेज़ी से विस्तार कर रहे हैं, ग्राहकों के करीब पहुंचने के लिए अधिक स्टोर खोल रहे हैं, बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए क्षमता बढ़ा रहे हैं, और ऐसे इनोवेटिव उत्पाद लांच करने पर दोगुना जोर दे रहे है, जो सचमुच भारत के बैठने और सोने के तरीके को बदल देंगे।

उन्होंने आगे कहा, "पिछले कुछ वर्षों में, हमने भारत में नींद और स्वास्थ्य के प्रति दृष्टिकोण में स्पष्ट बदलाव देखा है, जो कभी कम भागीदारी वाली खरीदारी थी, वह अब जीवनशैली का हिस्सा बन गई है। अब उपभोक्ता सक्रिय रूप से प्रीमियम, शोध-समर्थित समाधानों की तलाश कर रहे हैं, जो वास्तविक और ठोस लाभ प्रदान करते हैं। यह फंडिंग हमारे लिए भारत का सबसे प्रिय कम्फर्ट-टेक ब्रांड बनने की दिशा में एक अहम मील का पत्थर है। शुरुआत से ही हमारा मिशन रहा है—कम्फर्ट को फिर से परिभाषित करना—कुछ ऐसा जिसे अक्सर नज़रअंदाज़ किया जाता है—विज्ञान, नवाचार और गहन उपभोक्ता अंतर्दृष्टि के माध्यम से।"

राजीव बत्रा, डायरेक्टर एवंर कंज्यूमर सेक्टर लीड, क्रिसकैपिटल ने कहा, "क्रिसकैपिटल दस्लीपकंपनी के साथ इस निर्णायक समय पर साझेदारी करके उत्साहित है, जब वे भारत में कम्फर्ट-टेक को नई परिभाषा दे रहे हैं। कम समय में, संस्थापक हर्षिल और प्रियंका ने प्रबंधन टीम के साथ मिलकर एक श्रेणी परिभाषित ब्रांड बनाया है,

दस्लीपकंपनी की सफलता के केंद्र में है इसकी पेटेंटेड SmartGRID® तकनीक—एक क्रांतिकारी नवाचार जो मानव शरीर के अनुसार वैज्ञानिक रूप से तैयार कम्फर्ट प्रदान करता है। इसकी शुरुआत गद्दों से हुई थी, अब वह कुर्सियों, रिक्लाइनर्स, कुशन, सोफा और अन्य में विस्तारित हो चुकी है—आधुनिक जीवनशैली के लिए एक व्यापक एर्गोनोमिक समाधान पोर्टफोलियो का निर्माण करते हुए। मज़बूत आधार, कैटेगरी-फर्स्ट इनोवेशन और बढ़ते ऑफलाइन नेटवर्क के साथ, दस्लीपकंपनी भारत में कम्फर्ट-टेक परिदृश्य को नई परिभाषा दे है—सिर्फ उत्पाद नहीं, बल्कि बेहतर जीवन पर आधारित एक आंदोलन का निर्माण कर रही है।

सत्ता के लालच में भाजपा 14 दलित पार्षदों के अधिकारी छीनने का काम किया है, ताकि वह दलित समाज की आवाज न उठा सकें- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम में दलित पार्षदों का अधिकार छीनने की कोशिश कर रही भाजपा सरकार के खिलाफ आम आदमी पार्टी ने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया और मजबूर होकर भाजपा सरकार को एससी कमेटी का चुनाव रद्द करना पड़ा। इसके साथ ही भाजपा पार्षद द्वारा चुनाव के दौरान मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने का विरोध करने पर खेल समिति का चुनाव भी रद्द कर दिया गया। एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने कहा कि भाजपा के मेयर असंवैधानिक तरीके से 35 सदस्यीय एससी कमेटी को 21 सदस्यीय बनाकर चुनाव कराने की कोशिश कर रहे थे। सत्ता के लालच में भाजपा 14 दलित पार्षदों के अधिकारी छीनने का काम किया है, ताकि वो अपनी आवाज न उठा सकें। जब तक मेयर एससी कमेटी को 21 की जगह 35 सदस्यीय बनाकर चुनाव नहीं कराते हैं, ''आप'' का विरोध जारी रहेगा।

उन्होंने कहा कि आज एडॉप कमेटी के चुनाव थे। हमने सकारात्मक विपक्ष की भूमिका निभाई और सभी चुनाव कराए। हमने न तो हॉर्स ट्रेडिंग की, न ही कोई और गलत काम किया। हमारे पक्ष में वोट भी आए। आश्वासन कमेटी, स्वास्थ्य कमेटी और आज संचयी परियोजनाएं कमेटी (आरपी सेल) में हमारे पक्ष में एक-एक अतिरिक्त वोट आया।

उन्होंने कहा कि सत्ता भोगने के लिए भाजपा ने यह दलित विरोधी गतिविधि की। दलित समाज हमेशा से भाजपा को नकारता रहा है। 2022 के चुनाव में 42 में से 36 सीटें "आप" जीतीं। भाजपा ने छह सीटें जीतीं और फिर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के दबाव में तीन और सीटें खरीदकर अपनी तरफ कर लीं। इस तरह उनके पास 9 पार्षद हो गए। लेकिन चूंकि उनके पास केवल 9 पार्षद हैं, इसलिए उन्होंने 35 सदस्यों की कमेटी को 21 सदस्यों की कर दिया।

अंकुश नारंग ने कहा कि अगर 35 सदस्यों की कमेटी होती, तो 14 और दलित पार्षद उसमें शामिल होते। वे अपने क्षेत्र और दलित समाज की आवाज उठाते। अगर 14 और पार्षद होते, तो "आप" का चेयरमैन बनता। लेकिन भाजपा सत्ता भोगने के लालच में आई और इसलिए उसने यह कमेटी बनाई। "आप" ने इसका पुरजोर विरोध किया। हमारे सभी पार्षद, जो एससी कमेटी में थे, खड़े हुए और उन्होंने कहा कि इसे 35 सदस्यों की कमेटी बनाओ। यह पूरी तरह जायज मांग है, क्योंकि भाजपा दलित विरोधी गतिविधि कर रही है। 35 सदस्यों की कमेटी बननी चाहिए। अगर यह हो जाएगी, तो दलित समाज का बेहतर प्रतिनिधित्व होगा और उनकी आवाज भी उठ पाएगी। मैं फिर से अनुरोध करता हूं कि अगली बार जब चुनाव हों, उससे पहले संशोधन होना चाहिए। जिस भी तरीके से संशोधन करना हो, इसे 35 सदस्यों की कमेटी बनाना चाहिए।

केते कोल परियोजना के विस्तार पर रोक की मांग : बृंदा करात ने लिखा केंद्रीय मंत्री को पत्र

(संजय पराते की विशेष रिपोर्ट)

नई दिल्ली। माकपा पोलिट ब्यूरो की पूर्व सदस्य और पूर्व सांसद बृंदा करात ने केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव को एक पत्र लिखकर छत्तीसगढ़ के हसदेव अरण्य क्षेत्र में केते कोल परियोजना के विस्तार पर रोक लगाने की मांग की है। इस पत्र में उन्होंने इस मामले में दी गई मंजूरी का कड़ा विरोध करते हुए कहा है कि यह मंजूरी संबंधित ग्राम सभाओं की राय और संविधान व कानूनी ढाँचे के प्रावधानों की अनदेखी करके और स्थानीय समुदायों की ओर से सरकार को 1500 से ज़्यादा लिखित आपत्तियों को नजरअंदाज करके दी गई है।

अपने पत्र में माकपा नेता ने कहा है कि इस वन क्षेत्र में ओपन कास्ट माइनिंग से पहले ही हज़ारों पेड़ नष्ट हो चुके हैं और पानी और ज़मीन प्रदूषित हो चुकी है। अब आगे इस परियोजना के और विस्तार से 1742 हेक्टेयर घने वन भूमि से कम से कम 4.5 लाख पेड़ काटे जाएँगे। ये पेड़ घने जंगल में हैं, जहाँ कार्बन अवशोषण के लिए महत्वपूर्ण देशी पेड़ बहुतायत में हैं। इससे पहले से ही बुरी तरह प्रभावित इन क्षेत्रों में और भी ज़्यादा तबाही मच जाएगी और इस क्षेत्र के बाहर के कई गाँव भी इससे बुरी तरह प्रभावित होंगे।

बृंदा करात ने अपने पत्र में केंद्रीय मंत्री का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया है कि केते एक्सटेंशन कोयला परियोजना को मंजूरी देने के पीछे कोई 'जनहित' नहीं है, जिसका दावा किया जा रहा है। उनका कहना है कि यह परियोजना राजस्थान सरकार के स्वामित्व वाली एक बिजली कंपनी को दी गई है, जिसने अडानी एंटरप्राइजेज के साथ मिलकर एक संयुक्त उद्यम स्थापित किया था, जिसमें अडानी की 74% हिस्सेदारी है। इस कंपनी को हसदेव-परसा कोयला परियोजना का एमडीओ (खनन विकास संचालक) नियुक्त किया गया था। इस बात के दस्तावेजी प्रमाण है कि इस परियोजना के अंतर्गत खनन किए गए कोयले की एक बड़ी मात्रा को 'अस्वीकृत कोयला' बताकर इसे निजी बिजली कंपनियों को बेच दिया गया है। इस प्रकार, यह परियोजना केवल निजी लाभ के लिए चलाई जा रही है और इसमें कोई जनहित नहीं है।

माकपा नेता ने 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के हवाले से केंद्रीय मंत्री के इस बयान की आलोचना की है कि वन अधिकार अधिनियम के कारण वन नष्ट हो रहे हैं। उन्होंने लिखा है कि वास्तविकता यह है कि विकास के नाम पर निजी खनन परियोजनाओं के कारण हमारे वन नष्ट हो रहे हैं और इन्हें कॉरपोरेटों से बचाने के लिए कड़े संरक्षण उपायों की आवश्यकता है। उनका कहना है कि हसदेव क्षेत्र के आदिवासियों ने एक बार फिर इस परियोजना का विरोध करके और पेड़ों तथा प्रकृति के विनाश को बचाने के अपने प्रयासों से साबित कर दिया है कि भारत में वनों के असली रक्षक वे ही हैं।

माकपा नेता बृंदा करात ने आशा व्यक्त की है कि केंद्रीय मंत्री निजी कंपनी के हितों को पूरा करने की जगह वनों, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई तथा समृद्ध जैव-विविधता वाले क्षेत्र के विनाश को रोकने का काम करेंगे।

संगम टॉक्स द्वारा अपने प्रथम भव्य वार्षिक सांस्कृतिक-आर्थिक आयोजन के पोस्टर का अनावरण

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। संगम टॉक्स के संस्थापक राहुल दीवान ने प्रथम भव्य सांस्कृतिक-आर्थिक आयोजन ₹स्वराज्य कॉन्क्लेव 2025₹ के पोस्टर का यहाँ स्थित प्रेस क्लब में बृहस्पतिवार को अनावरण किया।

यह एक दिवसीय आयोजन नई दिल्ली स्थित होटल द अशोक में 21 अगस्त को होगा, जहाँ संस्कृति, ज्ञान पद्धतियों और सांस्कृतिक मूल्यों के विभिन्न आयामों पर, ज्ञान और सम्पदा के सम्मिश्रण के परिप्रेक्ष्य में चर्चा होगी। इस आयोजन में केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार समिति के सदस्य संजीव सान्याल और अनेक प्रतिष्ठित लेखक, विचारक, कार्यकर्ता एवं इन्फ्लुएन्सर भाग लेंगे।

इनमें प्रसिद्ध लेखक अश्विन संघी, अमी गणात्रा, लेखक एवं विचारक पंकज सक्सेना, आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन के वाइस प्रेसिडेंट गौतम चिकर्मने, एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार के कुछ वरिष्ठ अधिकारी, राष्ट्रीय कैडेट कोर, तथा सेवानिवृत्त वरिष्ठ सैन्य अधिकारी भी भाग लेंगे।

पोस्टर का अनावरण करते हुए, राहुल दीवान, जो इस आयोजन के सह-मेजबान भी हैं, ने कहाः ₹₹स्वराज्य कॉन्क्लेव 2025' भारत के ज्ञान, संस्कृति और नवोन्मेष में विश्व नेतृत्व को पुनः प्राप्त करने के लिए बिगुल बजाने का कार्य करेगा।₹

आयोजन के दौरान होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा जारी करते हुए, दीवान ने कहा कि यह आयोजन मात्र संस्कृति ही नहीं, वरन ज्ञान और सांस्कृतिक मूल्यों के बारे में भी है। ₹इसमें हम नवोन्मेष करते हुए, और ऐसे विषयों का समावेश करते हुए जिन पर पहले अधिक बात नहीं हुई है, भारत को कैसे आगे ले जाएँ, इस पर गहन चर्चा होगी,₹ उन्होंने कहा।

इस आयोजन में पान्डुलिपियों और अभिलेखों के विषय पर सुस्पष्ट चर्चा होगी; भारतीय नौसेना और केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त उद्यम आईएनएसवी कौण्डिन्य (पाँचवीं शताब्दी ईस्वी के अजंता की गुफाओं में चित्रित सिले हुए पाल जहाज पर आधारित) पर भी चर्चा होगी, साथ ही एक ट्रेलर भी दिखाया जायेगा। भारत में ड्रोन और काउन्टर-ड्रोन प्रणालियों का विकास; और ₹भारत के सुरा उद्योग की सम्भावनाओं₹ पर भी इस आयोजन में चर्चा होगी। इसके अतिरिक्त दीवान के उपक्रम ₹₹ 1,000 करोड़ के हिन्दू फण्डइ पर भी एक प्रस्तुति दी जाएगी।

इसके अतिरिक्त उत्तर पूर्व के हिन्दू मन्दिरों और वहाँ की नैसर्गिक और सांस्कृतिक विविधता को लेकर भी दो सत्र आयोजित किए गए हैं।

संगम टॉक्स के बारे में: संगम टॉक्स (वार्ता) भारतीय इतिहास, सभ्यता और संस्कृति की कथाओं को वामपंथी इतिहासकारों और शिक्षाविदों के चंगुल से स्वतंत्र करने का एक पुरजोर प्रयास है। संगम टॉक्स का उद्देश्य वर्तमान में प्रचलित विकृत मतों को तोड़ना है, भारतीय मन को गुलामी की मानसिकता से स्वतंत्र करना है और भारतीय सभ्यता में भारतीय प्राण फेंकना है।

संगस टॉक्स इतिहास, अर्थशास्त्र, भारतीय भाषाओं, शिक्षा, संस्कृति, मंदिरों, धर्म, परंपराओं, लैंगिक मुद्दों और वर्तमान के ज्वलनशील व महत्वपूर्ण विषयों पर प्रतिष्ठित विद्वानों और विशेषज्ञों द्वारा बातचीत की एक श्रृंखला है। इन विषयों की विवेचना एक भारतीय या धार्मिक दृष्टि (पूर्वपक्ष) से की जाती है, ताकि उस विषयों पर भारतीय पक्ष पुनर्स्थापित हो, प्राचीन बौद्धिक परंपरा पुनर्जीवित हो हो और भारतीय सभ्यता पुनः जीवंत हो ताकि भारतीय अपने अतीत से सकारात्मक रूप से जुड़ सकें।

खेती के खिलाड़ी, खेल के मंत्री — नया मंत्रिमंडलीय गेमप्लान

[खेती से रिटायरमेंट, खेल से कमबैक — मंत्री जी की डिजिटल लीला]

महाराष्ट्र की राजनीति का मौसम वैसे तो हमेशा ही बदलता रहता है, लेकिन इस बार जो फसल उगी है, वह कुछ खास है। खेत की मेड़ से निकलकर सीधे मैदान में आ गए हैं माननीय माणिकराव कोकाटे। जी हां, जो कल तक बीज, खाद और सिंचाई की बात करते थे, अब बैडमिंटन, बॉक्सिंग और बॉल की बारीकियों पर ध्यान देंगे। कारण? एक छोटा सा रम्मी वाला वीडियो और उससे भी छोटा, पर घातक, जनता का ध्यान।

विधान परिषद की कार्यवाही चल रही थी। देश की कृषि स्थिति, प्याज की कीमत और किसान आत्महत्याओं पर चर्चा होनी चाहिए थी। पर इन सबके बीच माननीय मंत्री जी डिजिटल कृषि में व्यस्त थे — मोबाइल की स्क्रीन पर बुवाई (या कहें, पत्ते फेंटाई) कर रहे थे। कैमरे की आँख ने पकड़ा, और सोशल मीडिया की आँधी ने उन्हें उड़ा दिया। जो काम विपक्ष सालों से नहीं कर पाया, वो एक क्लिक ने कर दिखाया।

अब कोकाटे साहब ने सफाई दी — मैं तो बस ऐप बंद कर रहा था। बिल्कुल वैसा ही जैसे बच्चा कहता है, ₹मम्मी, मैं तो सिर्फ स्कूल से मिला होमवर्क देख रहा था, गेम अपने आप खुल गया। सरकार ने भी कमाल की फुर्ती दिखाई — एक ही चाल में मंत्री महोदय की कुर्सी तो नहीं बदली, पर उनका मंत्रालय जरूर बदल दिया। कृषि से सीधा खेल मंत्रालय!

सोचिए, ये कैसा अद्भुत मेल है — जो हाथ खेत जोतते थे, अब वही हाथ बैट उठाएंगे, रैकेट घुमाएंगे और शायद कोई राष्ट्रीय स्पर्धा में फार्म-टू-फिनिश रणनीति लेकर आएंगे। किसानों को अब खेत में पसीना बहाने के बजाय पसीना बहाने का प्रशिक्षण भी मिल सकता है — कुश्ती के अखाड़े में।

यह तो मानना पड़ेगा कि सरकार ने खेल मंत्रालय को खेती-बाड़ी से जोड़ा है, ताकि अगर कोई खिलाड़ी हार जाए, तो उसे कहा जा सके — बेटा, अब गांव जा और खेती कर। और कृषि मंत्री से निकले खेल मंत्री जब खिलाड़ियों की हौसला अफजाई करेंगे, तो शायद कहेंगे — खेलो बेटा, पर खाद-पानी का ध्यान भी रखना।

अब बात आती है उस वीडियो की। कुछ लोग कह रहे हैं कि वीडियो को गलत ढंग से पेश किया गया, जबकि कुछ का कहना है कि यह राजनीतिक साजिश है। पर एक आम नागरिक के तौर पर हम इतना जरूर पूछ सकते हैं — माननीय, अगर रम्मी ऐप गलती से खुल गया था, तो वह एप्लिकेशन पहले से फोन में था क्यों? और अगर खेल से इतना ही प्रेम है, तो पहले ही खेल मंत्रालय क्यों न लिया?

लेकिन सबकी बात छोड़िए, कोकाटे जी ने अब खेल मंत्रालय संभाल ही लिया है, तो उम्मीद है कि राज्य के खिलाड़ियों को अब मैदान में उतारने से पहले, पत्ते मिलाने की कला भी सिखाई जाएगी। रम्मी से निकले मार्गदर्शन में अब बैडमिंटन की बिसात भी बिछेगी और क्रिकेट में ब्लफ़ भी चलेगा।

इस घटना ने यह साफ कर दिया है कि डिजिटल इंडिया अब मंत्रियों तक भी पहुँच गया है — संसद में ऐप्स चलते हैं, और निर्णय सोशल मीडिया के ट्रेंड्स से होते हैं। कोई कहे या न कहे, लेकिन अब मंत्रालय मिलने की प्रक्रिया कुछ यूं हो गई है — जो पकड़ा गया, वही हारा। जो वायरल हुआ, वही तबादले के काबिल हुआ।

अंत में बस यही कहा जा सकता है कि कोकाटे जी की रम्मी से रवानगी और खेल से वापसी वाली यह यात्रा आने वाले समय के लिए नजीर बनेगी। शायद भविष्य में हर मंत्री को डिजिटल स्वच्छता प्रमाणपत्र देना पड़ेगा — मैं शपथ लेता हूँ कि कार्यवाही के दौरान कैंडी क्रश, रमी सर्कल, या लूडो किंग आदि का उपयोग नहीं करूँगा, चाहे ऑनलाइन हो या ऑफलाइन। जय हो लोकतंत्र की, जहाँ गेम भी गंभीर हो जाते हैं, और गलती से खुले ऐप से मंत्रालय की किस्मत बदल जाती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

प्रकृति की नाराज़गी हैं भयंकर...!

नाराज़ प्रकृति की नाराज़गी हैं भयंकर,
स्वार्थवश संसाधनों का 'दोहन' निरंतर।
प्रकृति-मानव का संबंध सदियों पुराना,
ऊपर उठाया लाभ चुरा लिया खजाना।
पिघल रहे ग्लेशियर जलवायु परिवर्तन,
असमय बाढ़, सूखा, तूफान, भूस्खलन।
प्राकृतिक विपदाओं से जूझ रहा मानव,
मानवीय हस्तक्षेप की भूमिका में दानव।
अचानक बाढ़ गांवों का अस्तित्व मिटा,
घटनाओं ने जन-धन का नुकसान लूटा।
इस भीषण तबाही के हम साक्षी बने हैं,
सालों की मेहनत 30 सेकंड लें चलें हैं।

संजय एम तराणेकर

राखी एहसासात और तहज़ीब का रेशमी धागा

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज

राखी एक निहायत ही मुक़द्दस और जज़्बाती बंधन है, जो सदियों से भाई-बहन के रिश्ते की मज़बूती, मोहब्बत, ईसार और बे-ग़रज़ अपनाइयत का मज़हर रहा है। इस रेशमी धागे में सिर्फ़ धागों की मजबूती नहीं होती, बल्कि इसमें लिपटी होती है बहन के दिल की हर दुआ, हर फ़िक्र और हर महसूस किया गया जज़्बा। राख़ी वह महीन सा रिश्ता है, जो नज़र नहीं आता, लेकिन दिलों को ऐसे बाँधता है कि उम्र भर की दूरी और शिकवे भी इस धागे के सामने बेमानी हो जाते हैं। यह पर्व हर वर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राख़ी बांधती हैं और उनकी लंबी उम्र, सुख-शांति और हर बुरे वक्त से हिफ़ाज़त के लिए दुआ करती हैं। बदले में भाई अपनी बहन की हिफ़ाज़त, सम्मान और हर ख़ुशी को अपनी ज़िम्मेदारी समझकर निभाने का वादा करता है। यह रस्म केवल एक सामाजिक परंपरा नहीं, बल्कि भारतीय तहज़ीब का वो अनमोल हिस्सा है जिसमें रिश्तों की गर्माहट, अपनापन और इंसानी जज़्बात गहराई से समाए होते हैं। राख़ी का दिन घरों में सिर्फ मिठाइयाँ और उपहारों तक सीमित नहीं होता। इस दिन हर कोना खुशियों से जगमगा उठता है। नन्हें बच्चे रंग-बिरंगे कपड़ों में सजते हैं, बड़े बुज़ुर्गों के चेहरों पर मुस्कान बिखरी होती है और घर में प्यार और अपनत्व का माहौल एक जश्न की सूरत इख़्तियार कर लेता है। इस मौक़े पर हमें यह भी याद रखना चाहिए कि राख़ी सिर्फ एक रस्म नहीं, बल्कि यह रिश्तों की उस बुनियाद का ज़िक्र है जो भावनाओं, विश्वास और ज़िम्मेदारियों पर टिकी होती है। जैसा कि कहा गया है — रिश्ते रस्मों से नहीं, बल्कि एहसासों से बनते हैं। यही एहसास राख़ी के दिन सबसे ज्यादा महसूस होता है। यह त्योहार हमें यह भी सिखाता है कि आधुनिकता के इस तेज़ दौर में भी पारिवारिक मूल्य, सांस्कृतिक विरासत और भावनाओं की अहमियत कभी कम नहीं होती। राख़ी का यह रेशमी धागा हमारे समाज को मुलायम लेकिन मजबूत डोर से जोड़ने का काम करता है। राख़ी सिर्फ एक त्यौहार नहीं, बल्कि यह हमारे तहज़ीबी शऊर, और रूहानी वाबस्तगियों का आइना है। यह वह दिन है जो हमें यह सिखाता है कि प्यार, फिक्र, और क़ुर्बानी ही रिश्तों की असल ताक़त होते हैं।

किसानों की आवाज उठाई : सुमित नागर

परिवहन विशेष न्यूज

नौगांव सादात- भारतीय किसान यूनियनलोक शक्ति की मासिक बैठक नौगांव सादात तहसील रामगढ़ में हुई इस मासिक बैठक की अध्यक्षता सुभाष चंद्र वह संचालन नरदेव कश्यप के द्वारा किया गया मासिक बैठक का नेतृत्व डॉक्टर सुमित कुमार नागर ने किया इस बैठक में किसानों व क्षेत्र की जो समस्या है उन समस्याओं के संबंध में जो अधिकारी मीटिंग में उपस्थित थे उनसे वार्ता व विचार विमर्श किया गया और एसडीम नौगांव सादात ने आश्वासन पर एक हफ्ते का समय में समाधान कर दिया जाएगा। सुमित नागर ने कहा कि यूरिया खाद की इस वक्त किस को सबसे अधिक आवश्यकता है लेकिन किसानों खाद नहीं मिल पा रहा अतः निवेदन है कि सभी गोदाम पर खाद्य बीज ठीक व्यवस्थित किया जाएं। गन्ने का पेमेंट सभी किसानों को दिया जाए। बिजली विभाग के द्वारा जो लाइन है अथवा नीचे लटक रहे टूटे खंभों उन सभी लाइन में खंभों को बदला जाए जिससे बारिश के मौसम में दुर्घटना होने से बचा जा सके। शहरों में गांव में घूम रहे हैं आवारा पशुओं को गौशाला में भिजवाया जाए ताकि किसानों की फसलों के नुकसान से बचा जा सके। वन विभाग के द्वारा सभी बंदरो को पड़कर कहीं सुरक्षित जगह पर छोड़ जाए। मांसाहारी दूध के हाथ पर प्रतिबंध लगाया जाए। जो व्यक्ति आवास के पात्र हैं उन व्यक्तियों को समय रहते आवास उपलब्ध एवं बनवा जाए। वहां पर जई साहब एवं खाद्य पूर्ति विभाग अफसर आए। इस मौके पर डॉ सुमित कुमार नागर राष्ट्रीय सचिव सुभाष यादव राजीव हनु जसवंत सुरेंद्र कलान रामपाल मुजाहिद हुसैन सजाद हुसैन शहीद यामिन सत्यवीर यादव राकेश त्यागी चरणसिंह भीष्म त्यागी ओमकार सिंह धीरज कुमार जुल्फिकार सलमान असलम अतीक भगवान दास राजपाल मकसूद आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे।।

अमृतसर में बच्चों और किशोरों के लिए निःशुल्क मानसिक स्वास्थ्य शिविर का सफल आयोजन

अमृतसर 7 अगस्त (साहिल बेरी)

अमनदीप हॉस्पिटल ने उजाला सिग्नस हेल्थकेयर सर्विसेज के सहयोग से बच्चों और किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य को समर्पित एक निःशुल्क चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया। यह शिविर अमनदीप हॉस्पिटल, मॉडल टाउन, जी.टी. रोड, अमृतसर में आयोजित किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में अभिभावकों और युवाओं ने भाग लिया और व्यवहारिक, भावनात्मक व विकासात्मक समस्याओं को लेकर विशेषज्ञ सलाह प्राप्त की।

इस शिविर का नेतृत्व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध मनोचिकित्सक डॉ. आस्तिक जोशी ने किया, जो अमेरिका से बोर्ड-प्रमाणित जनरल, चाइल्ड, अडोलेसेंट और फोरेंसिक सायकेट्री विशेषज्ञ हैं। वर्तमान में डॉ. जोशी वेदा क्लिनिक एवं फोर्टिस हॉस्पिटल शालीमार बाग, दिल्ली में लीड चाइल्ड एंड अडोलेसेंट सायकेट्रिस्ट के रूप में कार्यरत हैं और टेक्सास टेक यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मेडिसिन (अमेरिका) में एसिस्टेंट प्रोफेसर भी रह चुके हैं। उन्होंने अमृतसर आकर अपने वैश्विक अनुभव को यहां के परिवारों के हित में साझा किया।

डॉ. जोशी ने कहा, "हम देख रहे हैं कि आज के समय में बच्चों और किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी सहायता की मांग तेजी से बढ़ रही है। समय पर सही विशेषज्ञ की मदद उनके विकास के रास्ते को सकारात्मक रूप से बदल सकती है। मैं अमनदीप हॉस्पिटल और उजाला सिग्नस का आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस जरूरत को पहचाना और इस प्रकार की आउटरीच पहल के माध्यम से मदद उपलब्ध करवाई।"

सुबह 10:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक चले चार घंटे के इस शिविर के दौरान, डॉ. जोशी ने बच्चों और किशोरों को व्यक्तिगत परामर्श प्रदान किया। इसमें आक्रामकता, अवज्ञा, हाइपरएक्टिविटी जैसे व्यवहारिक मुद्दे, चिंता, मूड स्विंग, आत्मविश्वास की कमी जैसी भावनात्मक समस्याएं, और एकाग्रता में कठिनाई या सामाजिक कौशल की देरी जैसी सीखने और विकास संबंधी चुनौतियाँ शामिल थीं।

अभिभावकों ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में विशेषज्ञ चाइल्ड सायकेट्री सेवाएं आसानी से उपलब्ध नहीं हैं। डॉ. जोशी ने प्रारंभिक पहचान और हस्तक्षेप के महत्व पर ज़ोर देते हुए कहा कि बचपन और किशोरावस्था मानसिक स्वास्थ्य के भविष्य को आकार देने वाले अत्यंत निर्णायक चरण होते हैं।

हॉस्पिटल प्रबंधन ने भी भारी प्रतिक्रिया को देखते हुए यह जानकारी दी कि वे भविष्य में इस तरह के और भी शिविर नियमित रूप से आयोजित करने की योजना बना रहे हैं।

संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) के आह्वान पर एवम जगजीत सिंह डल्लेवाल जी के नेतृत्व में किसान महापंचायत का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

लुधियाना। आज पंजाब के लुधियाना जिले के जोधां गाँव की अनाज मंडी में संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) के आह्वान पर एवम जगजीत सिंह डल्लेवाल जी के नेतृत्व में किसान महापंचायत का आयोजन किया गया जिसमें हजारों किसानों ने भाग लिया। इस महापंचायत में पंजाब सरकार की लैंड पुलिंग पालिसी के खिलाफ प्रदेश स्तरीय आंदोलन का बिगुल बजाया गया एवम 25 अगस्त को नई दिल्ली में 1 दिन की किसान महापंचायत में किसानों से बड़ी संख्या में शामिल होने का आह्वान किया गया। किसान नेताओं ने कहा कि किसानों पर चौतरफा हमले किये जा रहे हैं, एक तरफ लैंड पुलिंग जैसी योजनाओं के माध्यम से किसानों की जमीनों पर कब्ज़ा करने की साजिशें रची जा रही हैं तो दूसरी तरफ अमेरिका जैसे देश भारत पर दबाव बना कर भारत के खेती, डेयरी, पोल्ट्री एवम मछली पालन सेक्टरों में प्रवेश करना चाहते हैं। किसान नेताओं ने कहा कि आज देश के किसानों को एकजुट होकर खेती क्षेत्र पर हो रहे चौतरफा हमलों का मुकाबला करना चाहिए। देश के किसानों को संगठित करने के लिए एवम 25 अगस्त को दिल्ली में आयोजित किसान महापंचायत की तैयारियों के लिए आगामी 10 अगस्त को पानीपत के इसराना में, 11 एवम 12 अगस्त को राजस्थान के श्रीगंगानगर एवम हनुमानगढ़ में, 14 एवम 15 अगस्त को मध्यप्रदेश के इटारसी एवम अशोकनगर में, 17, 18 एवम 19 अगस्त को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़, संभल एवम बागपत में किसान महापंचायतों का आयोजन किया जा रहा है। आज किसान महापंचायत में मुख्य तौर पर जगजीत सिंह डल्लेवाल जी, बलदेव सिंह सिरसा जी, सतनाम सिंह बेहरु, पी आर पाण्डयन (तमिलनाडु), वेंकेटेश्वर राव (तेलंगाना), राजबीर सिंह (उत्तर प्रदेश), अनिल तालान (उत्तर प्रदेश), इंदरजीत पन्नीवाला (राजस्थान), जरनैल सिंह चहल (हरियाणा), गुरदास सिंह (हरियाणा), अभिमन्यु कोहाड़ (हरियाणा), हरसुलिन्दर सिंह (पंजाब), सुखपाल डफर (पंजाब), अमरजीत राडा (पंजाब), हरिकेश क़ाबरचा (हरियाणा) आदि ने भाग लिया।

"हर घर तिरंगा" अभियान को जनआंदोलन बनाने की भावुक अपील

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा।संजय सागर सिंह। स्वतंत्रता की 78वीं वर्षगांठ के अवसर पर पूरे देश में देशभक्ति की भावना चरम पर है, और इसी कड़ी में ₹हर घर तिरंगा₹ अभियान एक बार फिर शहर से गांव तक, गली-मोहल्लों से लेकर सोशल मीडिया तक, हर कोना राष्ट्रभक्ति के रंगों से सराबोर हो रहा है, और जनमानस को प्रेरित कर रहा है। इस अभियान को राष्ट्रव्यापी आंदोलन का स्वरूप देने की दिशा में वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान ने एक गूंजती हुई भावुक अपील जारी की है, जो न केवल नागरिक कर्तव्य की ओर ध्यान आकर्षित करती है, बल्कि स्वतंत्रता की कीमत और उसके गौरव को भी रेखांकित करती है।

इस विशेष अवसर पर राष्ट्रवादी सामाजिक चिंतक एवं वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान साहब ने कहा कि ₹यह पहल अब किसी सरकारी आयोजन तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह एक राष्ट्रीय चेतना का उत्सव बन चुकी है। तिरंगे की शान, राष्ट्र का अभिमान - आइए इस 15 अगस्त को यादगार बनाएं। यह एक ऐसा पर्व है जो देश को एकसूत्र में बाँधता है और हर नागरिक को उसकी जिम्मेदारियों का स्मरण कराता है।₹

श्री खान ने विशेष रूप से युवाओं से आग्रह किया कि वे अपने सोशल मीडिया प्रोफाइल पर तिरंगे को स्थान दें और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से देशभक्ति का संदेश जन-जन तक पहुँचाएं। डिजिटल इंडिया के इस युग में सोशल मीडिया एक प्रभावी माध्यम है, जो नई पीढ़ी को हमारी विरासत और स्वतंत्रता संग्राम के मूल्यों से जोड़ सकता है।

साथ ही उन्होंने अपने संदेश में यह भी रेखांकित किया कि यह पर्व सिर्फ उत्सव नहीं है, बल्कि यह ₹राष्ट्र पहले₹ की भावना का जीवंत प्रमाण है। जब प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों का निष्ठा से पालन करेगा, तभी हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों का भारत साकार होगा। यह अभियान भावी पीढ़ियों को यह बताने का अवसर है कि आज़ादी सहज नहीं थी, यह लाखों बलिदानों की अमर कहानी है।

वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान की

साथी समेत जेल भेजे गये कानपुर के चर्चित अधिवक्ता अखिलेश दुबे, 50 लाख की रंगदारी का आरोप

सुनील बाजपेई

कानपुर। भाजपा नेता द्वारा .दर्ज कराई गई रिपोर्ट के बाद साथी लवी मिश्रा समेत गिरफ्तार किए गए चर्चित अधिवक्ता अखिलेश दुबे को आज गुरुवार को जेल भेज दिया गया। उन पर भाजपा नेता रवि सतीजा से 50 लाख की रंगदारी मांगने का आरोप है। यह भी आरोप है कि अखिलेश दुबे के कहने पर रवि सतीजा के खिलाफ धोखाधड़ी के झूठे मुकदमे दर्ज कराए गए जिनमें पाक्सो का मामला भी शामिल है।

पुलिस के अनुसार शिकायतकर्ता महिला बिहार की रहने वाली है और उसके साथ कोई घटना नहीं हुई थी।

पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक अधिवक्ता अखिलेश दुबे के खिलाफ भाजपा नेता रवि सतीजा को मुकदमे में फंसाकर वसूली के मामले में हुई कार्रवाई जमीनों पर जबरन कब्जे और अन्य गंभीर मामलों में भी गोपनीय जांच की जा रही है।

पुलिस द्वारा हड़कंप मचा देने वाली यह कार्रवाई भूमाफिया व वसूलीबाज दागी पत्रकारों और वकीलों के खिलाफ चले अभियान के बाद शुरू हुए आपरेशन महाकाल के तहत की गई। जिसके दूसरे दिन ही पुलिस ने शहर के चर्चित अधिवक्ता अखिलेश दुबे को गिरफ्तार कर लिया। अखिलेश दुबे के खिलाफ भाजपा नेता रवि सतीजा को मुकदमे में फंसाकर वसूली करने का आरोप है।

मुझे जानकारी में बताया गया कि पुलिस ने दुबे के तीन अन्य साथी भी पकड़े हैं, जिनसे पूछताछ की जा रही है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया है कि अखिलेश दुबे के खिलाफ जमीनों पर जबरन कब्जे और अन्य गंभीर मामलों में भी गोपनीय जांच हो रही है। जांच रिपोर्ट आने के बाद इन मामलों में भी कार्रवाई हो सकती है।

अब तक की जानकारी के मुताबिक आरोप है कि अखिलेश दुबे व उनके साथियों ने भाजपा नेता रवि सतीजा को झूठे मुकदमों में फंसाकर उनसे वसूली की। असल में पिछले साल रवि सतीजा के खिलाफ एक महिला ने अपनी बेटी के साथ छेड़छाड़ व दुष्कर्म के प्रयास का मुकदमा दर्ज कराया था। डीसीपी दक्षिण दीपेंद्र नाथ चौधरी ने बताया कि जांच के दौरान सामने आया कि उक्त मामला झूठा दर्ज हुआ था और इसे आधार बनाकर अखिलेश दुबे व लवी मिश्रा भाजपा नेता से महिला से समझौता कराने की एवज में 50 लाख रुपया मांग रहे थे। इसी बीच भाजपा नेता रवि स तीजा ने कमिश्नर अखिल कुमार से मिलकर पूरी बात बताइए जिसके बाद ही अधिवक्ता अखिलेश दुबे के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर यह कार्रवाई की गई ,जिससे पूरे जिले के माफियाओं में हड़कंप मचा हुआ है।

ठा. श्रीराधा दामोदर मंदिर में धूमधाम से संपन्न हुआ गौडीय सम्प्रदायाचार्य श्रील रूप गोस्वामी महाराज का तिरोभाव महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। सेवाकुंज क्षेत्र स्थित प्राचीन ठाकुर श्रीराधा दामोदर मंदिर में गौडीय सम्प्रदायाचार्य श्रील श्रीरूप गोस्वामी महाराज का तिरोभाव महोत्सव मंदिर की प्रधान सेवायत आचार्या श्रीमती तरुलता गोस्वामी (मां गुसाईं) की अध्यक्षता में अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ।सर्वप्रथम संतों व भक्तों के द्वारा श्रील श्रीपाद रूप गोस्वामी के चित्रपट के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित किया गया।तत्पश्चात भागवताचार्य गोपाल भैया महाराज द्वारा मंगलाचरण किया गया।

इस अवसर पर आयोजित संत-विद्वत सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए श्रीराधारमण मन्दिर के सेवायत आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी एवं पीपाद्वाराचार्य जगद्गुरु बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज ने कहा कि श्रीपाद रूप गोस्वामी महाराज ब्रज रस भक्ति के परम उपासक थे।उन्होंने अत्यंत साधनामय जीवन जीकर और असंख्य व्यक्तियों का कल्याण कर उन्हें कृष्ण भक्ति की ओर अग्रसर किया।

मन्दिर के वरिष्ठ सेवायत आचार्य करुण गोस्वामी एवं आचार्य कृष्ण बलराम गोस्वामी महाराज ने कहा कि ठाकुर श्रीराधा दामोदर मंदिर गौडीय संप्रदाय का प्रमुख केंद्र हैं।यह श्रीपाद रूप गोस्वामी महाराज की भजन स्थली रही है।साथ ही यहां उनका समाधि स्थल भी बना हुआ है।जहां असंख्य भक्तों-श्रद्धालुओं के द्वारा श्रीहरिनाम संकीर्तन का कार्यक्रम किया गया।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं पंडित बिहारीलाल वशिष्ठ ने कहा कि श्रीपाद रूप गोस्वामी महाराज गौडीय सम्प्रदाय के षट गोस्वामियों में सर्वप्रमुख थे।कलयुग पावनावतार चैतन्य महाप्रभु से प्रेरित होकर उन्होंने अपना मंत्री पद का त्याग कर अपना समूचा जीवन ब्रज में रह कर श्रीकृष्ण भक्ति में समर्पित कर दिया।

इससे पूर्व गौडीय संप्रदाय के चौंसठ महंतो के चित्रपट के समक्ष छप्पन-भोग भोजन का अत्यंत श्रद्धा से भोग लगाया गया।साथ ही संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य सूचक गायन किया गया।

इस अवसर पर ₹गौडीय वैष्णव सूचक संग्रह₹ नामक पुस्तक का लोकार्पण भी हुआ। जिसका प्रकाशन श्रीहरिनाम प्रेस से हुआ है और इसका प्रकाशक ठाकुर श्रीराधा दामोदर मंदिर है।

कार्यक्रम के अंतर्गत दिव्य शक्ति अखाड़ा परिषद के द्वारा परिषद के अध्यक्ष पंडित बिहारी लाल वशिष्ठ एवं उनकी टीम ने आचार्य करुण गोस्वामी, आचार्य कृष्ण बलराम गोस्वामी एवं आचार्य पूर्ण चंद्र गोस्वामी का उनके द्वारा धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में की गई अविस्मरणीय सेवाओं के लिए अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह और ठाकुरजी का पटका-प्रसादी-माला आदि भेंट कर सम्मान किया।

महोत्सव में श्रीकृष्ण बलराम मंदिर के अध्यक्ष भक्ति वेदान्त स्वामी मधुसूदन महाराज, भक्ति वेदान्त दामोदर महाराज, वैष्णव पद दास महाराज, सनातन दास महाराज, ठाकुर राधा रमण मंदिर के सेवायत आचार्य दिनेश चंद्र गोस्वामी, मदन बाबा, चार संप्रदाय आश्रम के महंत ब्रज बिहारी दास, आचार्य अच्युत लाल भट्ट, भक्ति वेदान्त साधु महाराज, हेमांग कृष्ण नांगिया, भागवत निवास के सन्त जुगल दास महाराज, श्याम सुन्दर गौतम, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, आचार्य ईश्वर चंद्र रावत आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।संचालन डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने किया।मन्दिर के सेवायत आचार्य पूर्णचंद्र गोस्वामी महाराज ने सभी विद्वानों का ठाकुरजी का चित्रपट,पटुका-प्रसादी-माला एवं स्मृति चिन्ह आदि भेंट कर सम्मान किया।महोत्सव का समापन संत,ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।

नाराज़ प्रकृति की नाराज़गी से भयंकर सैलाब- प्रकृति की मानवीय कृतिय क़े लापरवाही की चेतावनी तो नहीं?

धराली व किन्नौर में आपदा से तबाही - क्या यह आपदाएं प्राकृतिक चक्र है ? या इसके पीछे कहीं न कहीं मानवीय हस्तक्षेप की भूमिका भी है?- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

प्रकृति और मानव का संबंध सदियों पुराना है। जहां एक ओर प्रकृति ने मानव को जीवन जीने के लिए आवश्यक सभी संसाधन-जल, वायु,मृदा,खनिज, वन, जीव-जंतु आदि- प्रदान किए हैं, मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया,महाराष्ट्र यह मानता हूं कि मानव ने अपने स्वार्थवश इन संसाधनों का दोहन किया। आज जब पृथ्वी जलवायु परिवर्तन,ग्लेशियरों के पिघलने, असमय बाढ़,सूखा,तूफान, भूकंप, भूस्खलन जैसी तमाम प्राकृतिक विपदाओं से जूझ रही है, तो यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या यह केवल प्राकृतिक चक्र है या इसके पीछे कहीं न कहीं मानवीय हस्तक्षेप की भूमिका भी है? हम इसी प्रश्न की पड़ताल करेंगे और तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध करेंगे कि धराली व किन्नौर में आपदा से तबाही- क्या यह आपदाएं प्राकृतिक चक्र है या इसके पीछे कहीं न कहीं मानवीय हस्तक्षेप की भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता?

साथियों बात अगर हम,भारत के हिमालयी क्षेत्र,विशेषकर उत्तराखंड का धराली गांव और हिमाचल प्रदेश का किन्नौर, हाल ही में भीषण प्राकृतिक तबाही के साक्षी बने हैं, की करें तो बादल फटने, भूस्खलन, अचानक आई बाढ़, और गांवों का अस्तित्व मिटा देने वाली घटनाओं ने न केवल जन-धन का भारीनुकसान किया, बल्कि एक बड़ा सवाल भी खड़ा किया-क्या ये आपदाएं केवल प्रकृति की आपूर्ति थीं या मानवीय लालच, अंधाधुंध निर्माण, खनन और जलवायु परिवर्तन जैसे कारकों का नतीजा ?भारत के हिमालयी क्षेत्र, विशेषकर उत्तराखंड का धराली गांव और हिमाचल प्रदेश का किन्नौर, हाल ही में भीषण प्राकृतिक तबाही के साक्षी बने हैं। बादल फटने, भूस्खलन, अचानक आई बाढ़, और गांवों का अस्तित्व मिटा देने वाली घटनाओं ने न केवल जन-धन का भारी नुकसान किया, बल्कि एक बड़ा सवाल भी खड़ा किया-क्या ये आपदाएं केवल प्रकृति की आपूर्ति थीं या मानवीय लालच, अंधाधुंध निर्माण, खनन और जलवायु परिवर्तन जैसे कारकों का नतीजा ?इस लेख में हम धराली और किन्नौर की घटनाओं का विस्तारपूर्वक विश्लेषण करेंगे, और यह समझने की कोशिश करेंगे कि कैसे प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, असंवेदनशील विकास, और पर्यावरणीय चेतावनियों की अनदेखी ने इन शांत पर्वतीय क्षेत्रों को विनाश के मुहाने पर ला खड़ा किया। (1) बिना पर्यावरणीय मूल्यांकन के सड़कों और सुरंगों का निर्माण हो रहा है। (2) पहाड़ों को डायनामाइट से उड़ाकर हाईवे बनाए जा रहे हैं। (3) जलविद्युत परियोजनाएं नदियों के प्रवाह को रोककर क्षेत्रीय इकोसिस्टम को ध्वस्त कर रही हैं। (4) पेड़ कट रहे हैं, और कंक्रीट के जंगल उगाए जा रहे हैं।इनका परिणामः- (1) ज़मीन की पकड़ कमजोर हो जाती है। (2) पानी का स्तर गिरता है।(3) पारिस्थितिक असंतुलन बढ़ता है। (4) बाढ़ और भूस्खलन की घटनाएं आम हो जाती हैं। चार धाम सड़क परियोजनाः- उत्तराखंड में चार धाम सड़क परियोजना के नाम पर हज़ारों पेड़ों की कटाई की गई। पर्यावरणविदों ने पहले ही चेतावनी दी थी कि यह इलाका भूस्खलन-प्रवण है। फिर भी सड़कों को चौड़ा करने के लिए बड़े-बड़े हिस्सों को नष्ट कर दिया गया।पर्यटन का असंवेदनशील विस्तारः-किन्नौर और धराली जैसे क्षेत्र अब ₹टूरिज्म हॉटस्पॉट₹ बन गए हैं। इसके चलतेः (1) अवैज्ञानिक होटल निर्माण हुआ। (2) जैविक अपशिष्ट नदियों में फेंका गया। (3) वॉटर रीसोर्सेज़ पर अतिरिक्त दबाव पड़ा।(4) स्थायी जनसंख्या से अधिक वाहनों का प्रवेश हुआ।:- अवैध खनन और निर्माण कार्य(1) किन्नौर के पहाड़ों में अवैध खनन बहुत वर्षों से चल रहा है। (2) स्थानीय लोगों की शिकायतों के बावजूद प्रशासनिक चुप्पी रही। (3) यह गतिविधियाँ भूगर्भीय अस्थिरता को और बढ़ावा देती हैं, जिसे रेखांकित करना होगा।

साथियों बातें कर हम धराली उत्तराखंड के बाद किन्नौर हिमाचल प्रदेश में 6 अगस्त 2025 को बादल फटने की करें तोधराली के बाद हिमाचल प्रदेश में भी हालात खराब दिखाई दे रहे हैं,उत्तरकाशी में नदी के बढ़े जलस्तर व आस-पास के क्षेत्रों का स्थलीय निरीक्षण कर अधिकारियों को 24 घंटे अलर्ट मोड पर रहने के निर्देश दिए। धराली उत्तरकाशी में सभी सरकारी एजेंसियां, विभाग और सेना आपसी समन्वय से राहत एवं बचाव कार्य में लगे हुए हैं। बीती रात 130 से ज्यादा लोगों को रेस्क्यू किया गया है। बंद रास्तों को खोला जा रहा है और प्रभावितों को हर संभव सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। उत्तराखंड के सीएम का कहना है, पूरा धराली आपदा की चपेट में आ गया है, और कल की घटना के बाद वहां कई चरणों में मलबा आया है. मैंने आज वहां जाकर लोगों से मुलाकात की, उनसे बात की और घटना की जानकारी ली, आपदा से सब कुछ तबाह हो गया, इसके साथ ही शाम तक सेना के जवानों ने करीब 190 लोगों को बचा लिया है, उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया गया है, अभी घायलों को भी वहां से रेस्क्यू कर उत्तरकाशी लाया जा रहा है, कई जगहों पर भूस्खलन से पूरा संपर्क मार्ग पूरी तरह प्रभावित हुआ है।सरकार सभी व्यवस्थाएं करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है, प्रधानमंत्री ने भी हमें हर संभव मदद देने का आश्वासन दिया है, और उनके मार्गदर्शन में हम आपदा पीड़ितों की समुचित मदद करेंगे, यह स्पष्ट है कि पहाड़ी क्षेत्रों में हो रहे कटाव, भूस्खलन और सडक़ों के धंसने जैसी आपदाओं के लिए प्रकृति नहीं, बल्कि मानव की अविवेकपूर्ण योजनाएं, लालची विकास मॉडल और पर्यावरणीय उपेक्षा ही मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। जब तक विकास की दिशा में संतुलन और संवेदनशीलता नहीं लाई जाती, तब तक ऐसी त्रासदियां दोहराती रहेंगी।

साथियों बात अगर हम आज पृथ्वी पर पर्यावरण के संतुलनया पर्यावरण को अपने हिसाब से इस तरह महसूस करने की करें तो (1) हिमालय से ग्लेशियरों के पिघलनेकी तेज गतिके चलते समुद्रक़ाजलस्तर 1.5 मिली मीटर प्रतिवर्ष बढ़ रहा है,जिस कारण वायु प्रदूषण ग्रीन हाइड्रो गैसों के कारण यह सब हो रहा है, दूसरा धरती अपनी धुरी से एक डिग्री तक खिसक गई है,वन तेजी से कम हो रहे हैं व पर्यावरण कार्बन डाइऑक्साइड बढ़ रहा है (2) पांच जगह पर अधिक खनन हो रहा है,नदी के पास,पहाड़ की कटाई,खनिज धातु खनन, समुद्री इलाकोंमें खनन, पानी के लिए धरती क्षेत्र में बोरिंग रेत गिट्टी हीरा कोयला तेल पेट्रोल के लिए कई हजारों फीट खुदाई। (3) जलवायु में ऑक्सीजन का घटना भी कारण है, क्योंकि जंगलों में कटाई से ऑक्सीजन की मात्रा घटने स्वाभाविक ही है। (4) अल्ट्रा वायरस किरणों का खतरा भी बढ़ गया है। (5) सबसे बड़ा परिणाम हम देख रहे हैं कि जलसंकट गहराता जा रहा है क्योंकि विभिन्न प्रकार के बनाए गए बांध व मानवीय खुराफात के कारण जल अपव्यय हो रहा है।यह सबघटनाएं हम मानवीय खुरापात के कारण हो रही है और हम उन्हें रोकने में असमर्थ हो रहे हैं, अगर हमें पृथ्वी को बचाना है तो पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना होगा, क्योंकि धरती मां को पर्यावरण प्रदूषण से बचाना परम मानवीय धर्म है,

साथियों बातें अगर हम जलवायु परिवर्तन और मानवीय हस्तक्षेप की करें तो जलवायु परिवर्तन और उससे उत्पन्न प्राकृतिक आपदाएं अब केवल भविष्य की चेतावनी नहीं, बल्कि वर्तमान की सच्चाई बन चुकी हैं। हर वर्ष हम सैकड़ों जानें, करोड़ों रुपये की संपत्ति, और बहुमूल्य पर्यावरणीय संसाधन खोते जा रहे हैं। इन सबके पीछे यदि कोई सबसे बड़ा कारण है तो वह है- मानव का प्रकृति में अनियंत्रित हस्तक्षेप। अब भी समय है कि हम अपनी विकास की परिभाषा को पुनः गढ़ें-एक ऐसी परिभाषा जो सतत हो, समावेशी हो, और पारिस्थितिकी के अनुकूल हो। यदि हमने अब भी नहीं सीखा,तो प्रकृति का प्रतिशोध कहीं अधिक विनाशकारी होगा,जिसकी कीमत पूरी मानवता को चुकानी पड़ेगी।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि नाराज़ प्रकृति की नाराज़गी से भयंकर सैलाब-प्रकृति की मानवीय कृतिय क़े लापरवाही की चेतावनी तो नहीं?प्रकृति ने मानव को जीवन जीने के लिए आवश्यक सभी संसाधन दिए-मानव ने अपने स्वार्थवश इन संसाधनों का दोहन किया?धराली व किन्नौर में आपदा से तबाही-क्या यह आपदाएं प्राकृतिक चक्र है? या इसके पीछे कहीं न कहीं मानवीय हस्तक्षेप की भूमिका भी है?

होंडा की इलेक्ट्रिक बाइक का जल्द होगा ग्लोबल डेब्यू; मिलेगा TFT डैश, LED DRL और फ्यूचरिस्टिक डिजाइन

होंडा टू-व्हीलर 2 सितंबर को अपनी पहली इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल पेश करने जा रही है। कंपनी ने एक टीजर जारी किया है जिसमें बाइक कैमोफ्लेज में दिख रही है। टीजर में TFT डैश और हॉरिजॉन्टल LED DRL दिखाई दे रही है। उम्मीद है कि यह बाइक 500cc मोटरसाइकिल के बराबर परफॉर्मेंस देगी। कंपनी पहले इसे यूरोपीय बाजार में लॉन्च करेगी भारत में लॉन्च होने की संभावना कम है।

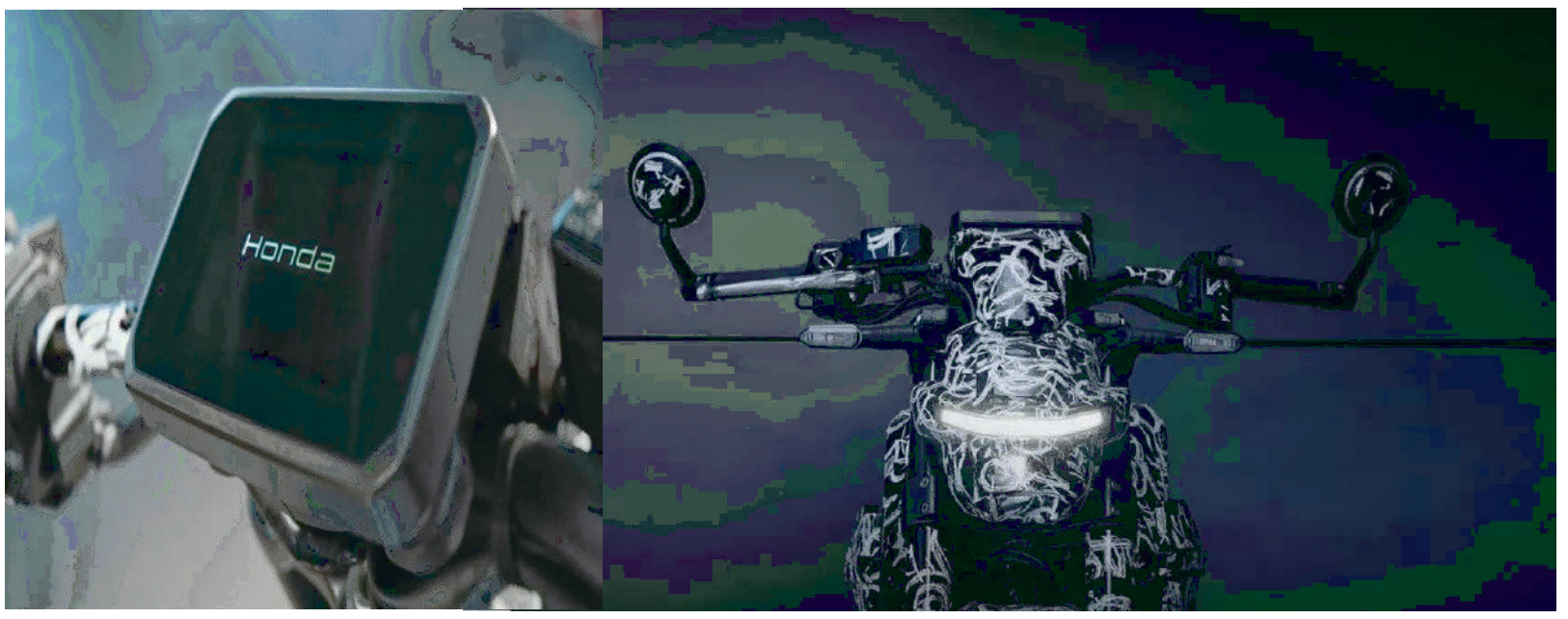

नई दिल्ली। होंडा टू-व्हीलर अपनी नई इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल लेकर आने वाली है। कंपनी अपनी पहली इलेक्ट्रिक बाइक को 2 सितंबर को ग्लोबल लेवल पर पेश करेगी। इसको लेकर कंपनी की तरफ से एक टीजर भी जारी किया गया है। इस टीजर में एक इलेक्ट्रिक बाइक को कैमोफ्लेज में दिखाया गया है। हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि होंडा की पहली इलेक्ट्रिक बाइक में क्या कुछ खास देखने के लिए मिल सकता है?

टीजर में क्या दिखा?

Honda ने हाल ही में एक टीजर जारी किया है, जिसमें एक ढंके हुए टेस्टिंग मॉडल को दिखाया गया है, जो बताता है कि बाइक अभी भी डेवलप के स्टेज में है। इसके टीजर के शुरुआत में TFT डैश को दिखाया गया है, जिसके बाद एक हॉरिजॉन्टल LED DRL भी देखने के लिए मिलती है, जो EV Fun कॉन्सेप्ट के जैसा ही है। इसमें 17-इंच के पहियों के साथ एक सिंगल-साइडेड स्विंगआर्म भी देखने के लिए मिलता है। इसमें ग्रिपी 150-सेक्शन पिरेली रोसो 3 टायर भी दिखाई देते हैं। वीडियो के आखिरी में एक ऑडियो क्लिप भी है, जो बताता है कि यह एक इलेक्ट्रिक बाइक होने वाली है।

कैसा होगा परफॉर्मेंस

पिछले साल EICMA में होंडा की तरफ से कहा गया था कि EV Fun कॉन्सेप्ट एक 500cc मोटरसाइकिल बराबर परफॉर्मेंस देगी। इसके आधार पर इसके प्रोडक्शन मॉडल में भी उसी लेवल का परफॉर्मेंस की उम्मीद की जा सकती है। यह पहली बार नहीं है कि होंडा टू-व्हीलर इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल लाने जा रही है। हाल ही में कंपनी ने टीन में Honda E-VO को लॉन्च किया था, हालांकि उसे कंपनी ने वुयांग के साथ मिलकर डेवलप किया है। वहीं, आने वाली इलेक्ट्रिक बाइक को होंडा ने पूरी तरह से खुद ही डेवलप किया है।

भारत में कब होगी लॉन्च?

होंडा की इस इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिस को पहले यूरोपीय बाजार में लॉन्च किया जाएगा। इसके बाद इसे धीरे-धीरे बाकी दूसरे देशों में बिक्री के लिए उपलब्ध कराया जाएगा। फिलहाल हाल के समय में इसके भारत में लॉन्च होने की संभावना कम है, क्योंकि कंपनी वर्तमान में घरेलू बाजार में अपने इलेक्ट्रिक स्कूटरों को पेश करने में लगी हुई है।

Harley-Davidson की इन दो बाइक पर ₹3 लाख तक की छूट, लुक और डिजाइन है सबसे अलग

ऑटो डेस्क के अनुसार Harley-Davidson अगस्त 2025 में अपनी दो क्रूजर मोटरसाइकिल Fat Boy और Fat Bob पर भारी छूट दे रही है। इन दोनों मोटरसाइकिलों पर करीब 2 लाख रुपये तक की छूट मिल रही है जो कुछ शोरूम में 3 लाख रुपये तक भी जा सकती है। ये डिस्काउंट 2024 मॉडल पर उपलब्ध है जो पावरफुल इंजन और प्रीमियम फीचर्स से लैस हैं।

नई दिल्ली। Harley-Davidson अगस्त 2025 में अपनी दो मोटरसाइकिल पर जबरदस्त डिस्काउंट दे रही है। यह दोनों ही क्रूजर मोटरसाइकिल है और कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है। इतना ही नहीं इनका इंजन बहुत ज्यादा पावरफुल है। इन बाइक का नाम Harley-Davidson Fat Boy और Fat Bob है। आइए विस्तार में जानते हैं कि हार्ले डेविडसन की इन दोनों मोटरसाइकिल पर कितना डिस्काउंट मिल रहा है और यह दोनों किन खास फीचर्स के साथ आती है?

Harley-Davidson पर डिस्काउंट

हार्ले डेविडसन की Fat Boy और Fat Bob पर अगस्त 2025 में करीब 2 लाख रुपये की छूट दी जा रही है। इन दोनों मोटरसाकिल पर कुछ शोरूम में एक्स्ट्रा ऑफर के साथ यह डिस्काउंट 3 लाख रुपये तक पहुंच सकता है। यह छूट दोनों के ही 2024 मॉडल पर मिल रहा है। यह दोनों ही मोटरसाइकिल पावरफुल इंजन के साथ प्रीमियम फीचर्स से लैस है।

Harley Davidson Fat Bob

2024 Harley-Davidson Fat Bob को भारत में 21.49 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जाता है। 2025 के लिए Fat Bob को बंद कर दिया गया है, जिसकी जगह Street Bob ने ली है। इसमें 1,868 cc Milwaukee-Eight 117CI इंजन का इस्तेमाल किया गया है। यह इंजन 93 HP की पावर और 155 Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

इसमें पूरी तरह से LED लाइटिंग दी गई है, जिसमें लो बीम, हाई बीम और एक खास सिग्नेचर पोजीशन लैंप शामिल है। इसमें इंटीग्रेटेड, मल्टी-फंक्शन LED स्टॉप/टेल/टर्न सिग्नल और इनकैन्डेसेंट बुलेट टर्न सिग्नल भी मिलते हैं। बाइक में 4-इंच का एनालॉग टैकोमीटर लगा है, जिसके साथ डिजिटल स्पीडोमीटर, गियर की जानकारी, ओडोमीटर, ईंधन का स्तर, घड़ी, ट्रिप और रेंज की जानकारी देने वाला डिस्प्ले भी मिलता है।

Harley Davidson Fat Boy

2024 Harley Davidson Fat Boy को भारतीय बाजार में 25.69 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जा रहा है, जो 94 HP की पावर और 155 Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

इसमें पूरी तरह से LED हेडलाइट दी गई है, जिसमें लो बीम, हाई बीम और खास सिग्नेचर पोजीशन लाइटिंग शामिल है। इसमें इंटीग्रेटेड और मल्टी-फंक्शनल LED स्टॉप/टेल/टर्न सिग्नल और इनकैन्डेसेंट बुलेट टर्न सिग्नल भी दिए गए हैं। बाइक में 5-इंच का एनालॉग स्पीडोमीटर लगा है, जिसमें डिजिटल डिस्प्ले पर गियर, ओडोमीटर, ईंधन का स्तर, घड़ी, ट्रिप, रेंज और टैकोमीटर की जानकारी दिखाई देती है।

डिस्क्लेमर- यह छूट विशेष रूप से पिछले साल के स्टॉक की बची हुई इकाइयों पर लागू होती है, इसलिए उपलब्धता के संबंध में अपने स्थानीय डीलरशिप से जरूर संपर्क करें।

केंद्रीय मंत्री एच.डी. कुमारस्वामी ने Tata Harrier.ev और Kia Carens Clavis EV का लिया टेस्ट

केंद्रीय भारी उद्योग और इस्पात मंत्री एच.डी. कुमारस्वामी ने हाल ही में Tata Harrier.ev और Kia Carens Clavis EV की टेस्ट राइड का वीडियो साझा किया। दिल्ली में उनके आवास पर इन इलेक्ट्रिक कारों का प्रदर्शन किया गया। कुमारस्वामी ने दोनों गाड़ियों को चलाकर देखा और सोशल मीडिया पर वीडियो पोस्ट किया। Harrier.ev और Carens Clavis EV दोनों ही इलेक्ट्रिक वाहन हैं जो भारतीय बाजार में उपलब्ध हैं।

नई दिल्ली। केंद्रीय भारी उद्योग और इस्पात मंत्री, एच.डी. कुमारस्वामी ने हाल ही में एक वीडियो शेयर किया है। इस वीडियो में वह Tata Harrier.ev और Kia Carens Clavis EV की टेस्ट राइड करते हुए दिखाई दे रहे हैं। इन दोनों ही इलेक्ट्रिक कार को उनके दिल्ली में उनके आवास पर दिखाया गया है। इस प्रकिया के दौरान कुमारस्वामी ने दोनों गाड़ियां का टेस्ट ड्राइव लिया और सोशल मीडिया पर वीडियो शेयर किया।

वीडियो में क्या दिखा?

वीडियो की शुरुआत में केंद्रीय भारी उद्योग और इस्पात मंत्री एच.डी. कुमारस्वामी एक तरफ खड़े हैं, जबकि Tata Harrier.ev को उसकी चाबी का इस्तेमाल करते पार्किंग से बाहर निकाला जाता है। इसके तुरंत बाद उन्हें टाटा मोटर्स के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करते हुए देखा जाता है। इस बातचीत के बाद, कुमारस्वामी को Harrier.ev को चलाते हुए देखा जाता है।

Harrier.ev की टेस्ट ड्राइव लेने से पहले उन्होंने टाटा अधिकारी से वाहन के बारे में मार्गदर्शन मिला, जिसके बाद उन्होंने सीट बेल्ट लगाई और इलेक्ट्रिक एसयूवी चलाना शुरू कर दिया। केंद्रीय मंत्री ने वाहन को ज्यादा देर तक नहीं चलाया। उन्होंने बस आगे चलाया, एक यू-टर्न लिया और फिर एसयूवी को पार्क कर दिया।

Kia Carens Clavis EV की भी टेस्ट ड्राइव ली

Harrier.ev के साथ ही कुमारस्वामी ने Kia Carens Clavis EV का भी अनुभव किया, जिसे हाल ही में भारतीय बाजार में लॉन्च किया गया है। इसकी उन्होंने ड्राइवर के बगल वाली सीट पर बैठकर इसके बारे में जाना। इसके साथ ही Harrier.ev की तरह ही इसमें बैठकर आगे चलाया, एक यू-टर्न लिया और फिर इसे पार्क कर दिया।

दोनों इलेक्ट्रिक कार की खासियत

Tata Harrier.ev को ऑल-व्हील-ड्राइव सिस्टम के साथ लेकर आया गया है, जो पहली स्वदेशी इलेक्ट्रिक एसयूवी है। इसे भारत में 21.49 लाख रुपये की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जा रहा है। इसमें 75 kWh बैटरी पैक का इस्तेमाल करके एक बार की चार्जिंग में 627 किमी तक की दूरी तय की जा सकती है।

Kia Carens Clavis EV को भारत में 17.99 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जा रहा है। यह सात-सीटर वाली इलेक्ट्रिक कार है, जिसे भारत में पूरी तरह से तैयार किया है। इसमें 51.4 kWh बैटरी पैक दिया गया है, जिसे फुल चार्ज करने के बाद 490 किमी तक की दूरी का सफर तय किया जा सकता है।

इन 7 इलेक्ट्रिक कारों पर ₹10 लाख तक का डिस्काउंट, टाटा से लेकर किआ की कार शामिल

भारत में इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री में भारी वृद्धि हुई है। जुलाई 2025 में 93% की वृद्धि दर्ज की गई जिसमें 15423 यूनिट्स बिकीं। बिक्री बढ़ने के बावजूद कार निर्माता कंपनियां अपनी इलेक्ट्रिक गाड़ियों पर भारी छूट दे रही हैं। Tata Motors अपनी इलेक्ट्रिक कारों पर 1 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दे रही है। Hyundai Creta Electric पर भी 1 लाख रुपये तक की छूट है।

नई दिल्ली। भारत में इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री में जबरदस्त बढ़ोतरी देखने के लिए मिली है। जुलाई 2025 में इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री में 93% की साल-दर-साल बढ़ोतरी देखने के लिए मिली है, जो 15,423 यूनिट तक पहुंच गई है। इलेक्ट्रिक कारों कि बिक्री बढ़ने के बावजूद कार निर्माता कंपनियां अपनी गाड़ियों पर भारी छूट दे रही है। हम यहां पर आपको ऐसी 7 इलेक्ट्रिक कारों के बारे में बता रहे हैं, जिनपर एक लाख रुपये से लेकर 10 लाख रुपये तक का डिस्काउंट मिल रहा है।

Tata की इलेक्ट्रिक कारों पर छूट

Punch

Tata Motors अगस्त 2025 में अपने पूरे लाइनपर पर 40,000 रुपये से लेकर एक लाख रुपये तक का डिस्काउंट दे रही है। कंपनी की इलेक्ट्रिक कारों की रेंज में Tiago, Punch, Nexon और Curve शामिल है, जबकि हाल ही में कंपनी की लॉन्च हुई Harrier EV पर भी ऑफर मिल रहा है। इस नए इलेक्ट्रिक कार Harrier EV पर केवल लॉयल्टी बोनल दिया जा रहा है, जबकि Tiago EV पर एक लाख रुपये तक की छूट मिल सकती है।

Hyundai Creta Electric

हुंडई क्रेटा इलेक्ट्रिक की मांग उतनी नहीं देखने के लिए मिली है, जितनी इसके पेट्रोल/डीजल की देखने के लिए मिलती है। Creta Electric की बिक्री को बढ़ाने के लिए कंपनी ने इसके कुछ वेरिएंट पर एक लाख रुपये तक का डिस्काउंट दे रही है। इसके स्टैंडर्ड और लॉन्ग-रेंज दोनों वेरिएंट पर छूट मिल रही है, जबकि निचले दो वेरिएंट पर कुछ नहीं मिल रहा है।

Citroen eC3

कंपनी अपने इस इलेक्ट्रिक कार पर 1.25 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दे रही है। यह Citroen C3 पर बेस्ड एक ऑल-इलेक्ट्रिक हैचबैक है। इसे भारतीय बाजार में 12.90 लाख रुपये से लेकर 13.53 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेस किया जाचा है।

MG ZS EV and Comet

MG की पहली इलेक्ट्रिक कार ZS EV पर 2.5 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। इस डिस्काउंट में नकद छूट, एक्सचेंज ऑफर और कॉर्पोरेट बोनस शामिल है। इसे भारत में 15.50 लाख रुपये से लेकर 18.00 लाख रुपये के बीच है। Comet EV पर भी 50,000 रुपये से लेकर 60,000 रुपये तक की छूट दी जा रही है।

Mahindra XUV400

अगस्त 2025 में महिंद्रा की इस इलेक्ट्रिक कार पर 3 लाख रुपये तक की छूट दी जा रही है। यह डिस्काउंट MY2024 स्टॉक पर दिया जा रहा है। 2025 Mahindra XUV400 को एक्स-शोरूम कीमत 15.49 लाख रुपये से लेकर 17.69 लाख रुपये के बीच ऑफर किया जाता है। इसे EC Pro और EL Pro के दो वेरिएंट में पेश किया गया है।

Kia EV6 Facelift

इसे भारतीय बाजार में मार्च 2025 में 65.90 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया था। इसके लॉन्च होने के 5 महीने बाद इसके फेसलिफ्टेड वर्जन पर 10 लाख रुपये से ज्यादा की छूट दी जा रही है। यह डिस्काउंट पर न केवल पुराने स्टॉक पर मिल रहा है, बल्कि 2025 Kia EV6 Facelift पर भी दी जा रही है। इस डिस्काउंट में नकद छूट, एक्सचेंज बोनस और कॉर्पोरेट डिस्काउंट भी शामिल है।

कृषि प्लास्टिक प्रदूषण

विजय गर्ग

कृषि प्लास्टिक प्रदूषण मिट्टी के स्वास्थ्य, पारिस्थितिक तंत्र और खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर निहितार्थ के साथ एक बढ़ती पर्यावरणीय चुनौती है। जबकि उत्पादकता और दक्षता बढ़ाने में उनके लाभों के लिए कृषि में प्लास्टिक का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, उनके निपटान और टूटने से महत्वपूर्ण समस्याएं पैदा होती हैं। सौभाग्य से, इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए अभिनव प्रौद्योगिकियों से लेकर नीति परिवर्तनों तक विभिन्न रणनीतियों को विकसित किया जा रहा है। कृषि प्लास्टिक के साथ समस्या कृषि में प्लास्टिक के उपयोग, मल्च फिल्मों और सिलेज रैप से लेकर सिंचाई पाइप और ग्रीनहाउस कवरिंग तक, एक अंधेरा पक्ष है। समय के साथ, ये सामग्री छोटे और छोटे टुकड़ों में टूट जाती है, जिससे माइक्रोप्लास्टिक और नैनोप्लास्टिक बनते हैं जो मिट्टी को दूषित कर सकते हैं। यह संदूषण कर सकते हैं:

मिट्टी की संरचना को बदलें और पानी को पकड़ने की अपनी क्षमता को कम करें।

केंचुए जैसे कठोर मिट्टी के जीव, जो मिट्टी की उर्वरता के लिए महत्वपूर्ण हैं।

कीटनाशकों और भारी धातुओं जैसे प्रदूषकों को सोखना और ध्यान केंद्रित करना, पारिस्थितिक तंत्र के माध्यम से उनके हस्तांतरण को सुविधाजनक बनाना।

खाद्य श्रृंखला दर्ज करें, क्योंकि पौधे मिट्टी से माइक्रोप्लास्टिक और अन्य दूषित पदार्थों को अवशोषित कर सकते हैं।

खाद्य सुरक्षा और मानव स्वास्थ्य को खतरा। समस्या से निपटने के लिए रणनीतियाँ कृषि प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने, कम करने, पुनः उपयोग करने, रीसाइक्लिंग करने और प्लास्टिक सामग्री को बदलने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक बहु-आयामी दृष्टिकोण आवश्यक है। 1.। कम करें और पुनः उपयोग करें पहला कदम प्लास्टिक की मात्रा को कम करना और मौजूदा उत्पादों के जीवनकाल का विस्तार करना है।

थोक खरीदः थोक में फ़ीड, उर्वरक और एग्रोकेमिकल्स जैसे इनपुट खरीदना एकल उपयोग बैग और कंटेनरों की आवश्यकता को कम करता है।

पुनः प्रयोज्य सामग्रीः पुनः प्रयोज्य बीज ट्रे, बर्तन और सिंचाई प्रणालियों में संक्रमण एकल उपयोग वाले प्लास्टिक कचरे पर काफी कटौती कर सकता है।

ऑन-फार्म प्रथाओंः खेत पर प्लास्टिक को ठीक से स्टोर करना और बड़ी मात्रा में खरीदने के लिए पड़ोसियों के साथ सहयोग करना भी मदद कर सकता है। 2.। अभिनव विकल्प दीर्घकालिक समाधान के लिए स्थायी विकल्प विकसित करना और अपनाना महत्वपूर्ण है।

बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिकः इन प्लास्टिक को मिट्टी में प्राकृतिक रूप से तोड़ने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिससे कोई माइक्रोप्लास्टिक अवशेष नहीं निकलता है। उदाहरण के लिए, मेटर-बी अक्षय कच्चे माल से बनी एक कम्पोटेबल मल्च फिल्म है।

जैव-आधारित सामग्रीः शोधकर्ता कृषि कचरे से ही पैकेजिंग और अन्य सामग्री विकसित कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, IIT मद्रास की एक टीम ने mycelium से एक बायोडिग्रेडेबल पैकेजिंग सामग्री बनाई है, जो कृषि और कागज के कचरे पर उगाई जाने वाली कवक की जड़ जैसी संरचना है।

प्राकृतिक फाइबरः पौधे आधारित मुल्च, खाद योग्य फिल्मों और प्राकृतिक फाइबर जैसी कार्बनिक सामग्रियों का उपयोग पर्यावरण की लागत के बिना प्लास्टिक को समान लाभ प्रदान कर सकता है।

पुनः प्रयोज्य पैकेजिंग सिस्टमः पुनः प्रयोज्य प्लास्टिक कंटेनर (आरपीसी), लकड़ी के बक्से और जूट के बोरे थोक कृषि उत्पादों के परिवहन के लिए मजबूत विकल्प हैं। 3। बेहतर पुनर्चक्रण और अपशिष्ट प्रबंधन कृषि प्लास्टिक को रीसायकल करना आसान और अधिक कुशल बनाना समाधान का एक प्रमुख हिस्सा है।

समर्पित रीसाइक्लिंग कार्यक्रमः कंपनियां और स्थानीय समुदाय हार्ड-टू-रीसायकल कृषि प्लास्टिक के लिए विशेष रीसाइक्लिंग कार्यक्रम स्थापित कर रहे हैं, नियमन के माध्यम से सरकारें और अंतर्राष्ट्रीय संगठन ड्राइविंग परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

प्रतिबंध और प्रतिबंधः कुछ देश विशिष्ट प्लास्टिक उत्पादों पर प्रतिबंध लागू कर रहे हैं, जैसे कुछ मल्च फिल्में या कीटनाशक कंटेनर।

विस्तारित निर्माता जिम्मेदारी (ईपीआर): यह सिद्धांत उत्पादकों, आयातकों और ब्रांड मालिकों को अपशिष्ट प्रबंधन और जीवन के अंत निपटान सहित अपने उत्पादों के पूरे जीवनचक्र के लिए जवाबदेह रखता है।

अपशिष्ट प्रबंधन नियमः विनियम अब कृषि कचरे को ₹व्यापार अपशिष्ट₹ के रूप में वर्गीकृत करते हैं, जो खुले जलने या दफनाने जैसी प्रथाओं को प्रतिबंधित करते हैं। यह जनादेश देता है कि किसान लाइसेंस प्राप्त साइटों पर अपने कचरे का निपटान या रीसायकल करते हैं।

प्रोत्साहनः सरकारें बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक और अन्य स्थायी विकल्पों के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान कर सकती हैं। इन रणनीतियों को मिलाकर, कृषि क्षेत्र दुनिया की खाद्य मांगों को पूरा करने के लिए पर्यावरण की रक्षा करते हुए, अधिक टिकाऊ प्रथाओं की ओर बढ़ सकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्

विवाह की प्रथा समय, स्थान और सामाजिक संदर्भ के अनुसार बदलती रही है

विजय गर्ग

चाहे वह बहुपत्नी विवाह हो या बहुपति विवाह, दोनों ही व्यवस्थाओं को समझने के लिए ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टिकोणों की गहराई में जाना जरूरी है मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, यह सार्वभौमिक एवं सर्वमान्य सत्य है । समाज विभिन्न प्रकार के सामाजिक संबंधों की एक जटिल संरचना है जिसमें परिवार को एक मूलभूत एवं महत्वपूर्ण संस्था के रूप में समाजशास्त्रियों ने परिभाषित किया है। परिवार को संस्था के रूप में स्वीकार करना, एक बेहतर, सशक्त और सभ्य समाज के निर्माण में इसकी भूमिका को रेखांकित करता है। मनुष्य अपनी प्रारंभिक सामाजिक शिक्षा परिवार से ही प्राप्त करता है और इसी कारण मां को प्रथम गुरु की संज्ञा दी गई है। इस सामाजिक संरचना में विवाह को भी एक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में देखा गया है, जो व्यक्ति को सामाजिक जीवन में प्रवेश का माध्यम प्रदान करती है। विवाह का मूल उद्देश्य संतान-उत्पत्ति और परिवार की स्थापना होता है। इस प्रकार, विवाह समाज की एक अनिवार्य इकाई है जो परिवार रूपी संस्था की नींव रखता है । समय, काल और परिस्थितियों के अनुसार विवाह और परिवार की अवधारणाओं में निरंतर परिवर्तन होता रहा है। एक समय में प्रचलित संयुक्त और संगठित परिवार की परंपरा अब धीरे-धीरे एकल परिवार में परिवर्तित हो गई है।

यह बदलाव केवल परिवार तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि समग्र सामाजिक ढांचा भी परिवर्तन की इस धारा से प्रभावित हुआ है। वास्तव में, परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है, जो शाश्वत सत्य है। हमारे समाज में विवाह की विभिन्न प्रणालियां प्राचीन काल से विद्यमान रही हैं। समय के साथ इनमें भी अनेक बदलाव आए हैं। एक समय में बहुपति तथा बहुपत्नी विवाह की प्रथा समाज में व्यापक रूप से प्रचलित थी,

किंतु धीरे-धीरे सामाजिक चेतना, धार्मिक मूल्यों तथा कानूनी व्यवस्थाओं के प्रभाव से यह स्वरूप बदलता गया और वर्तमान में एक पत्नी तथा एक पति विवाह प्रणाली को ही सामाजिक रूप से मान्यता प्राप्त है। वहीं, पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण आज 'लिव इन रिलेशनशिप' जैसी अवधारणाएं भी सामने आई हैं। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें बिना विवाह के दो व्यक्ति एक साथ सहजीवन व्यतीत करते हैं। हालांकि, इसमें भावनात्मक व शारीरिक सहभागिता तो होती है, किंतु वैवाहिक प्रतिबद्धता और सामाजिक मान्यता का अभाव रहता है। ऐसे में यह विचारणीय प्रश्न है कि क्या लिव इन जैसी व्यवस्थाएं विवाह संस्था के मूल उद्देश्य - सदैव के लिए प्रतिबद्धता, सामाजिक उत्तरदायित्व, परिवार की स्थापना तथा भावनात्मक स्थायित्व इत्यादि को पूर्ण कर पाने में सक्षम हैं? यह एक गूढ़ और जटिल प्रश्न है जिस पर समाज को गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। यदि हम इतिहास के पन्नों को पलटें तो बहुपत्नी विवाह (एक पुरुष की अनेक पत्नियां) के कई उदाहरण सामने आते हैं । जहां एक तरफ पटियाला के राजा भूपिंदर सिंह की 10 शादियां होने का उल्लेख मिलता है, वहीं रामायण में राजा दशरथ की तीन पत्नियां थीं, जबकि महाभारत में पांडु की दो पत्नियों- कुंती और माद्री का वर्णन मिलता है। यह विवाह की वह प्राचीन परंपरा थी, जो विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक कारणों से उस काल में प्रचलित रही।

हालांकि समय के साथ समाज और कानून दोनों में बदलाव आए । 1955 में लागू हुए हिंदू विवाह अधिनियम के तहत बहुविवाह एवं बहुपत्नी विवाह को अवैध घोषित कर दिया गया। अब एक समय में एक ही वैध पत्नी को मान्यता दी जाती है। यदि किसी विवाहित व्यक्ति ने दूसरा विवाह किया, तो केवल पहली पत्नी को ही कानूनी अधिकार प्राप्त होते हैं । संबंध विच्छेद (तलाक) के उपरांत पुनर्विवाह की स्वतंत्रता भी दी गई है। यह अधिनियम हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख धर्म के अनुयायियों पर लागू होता है, लेकिन मुस्लिम, ईसाई या अन्य धर्मावलंबियों पर इसकी बाध्यता नहीं है। जहां एक ओर बहुपत्नी विवाह का इतिहास व्यापक है, वहीं बहुपति विवाह (एक महिला के अनेक पति) भी कुछ क्षेत्रों में प्राचीन परंपरा का हिस्सा रहा है। हाल के दिनों में हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले शिलाई क्षेत्र में इस प्रथा की चर्चा फिर से सामने आई है जिसमें एक महिला ने स्वेच्छा से दो सगे भाइयों के साथ सहर्ष विवाह किया है। यह वाकया हमें पुराने रीति-रिवाजों की तरफ ले जाता है, जबकि नई पीढ़ी के लिए यह हैरत में डालकर सोचने पर विवश करता है। यद्यपि आज इसका प्रचलन सीमित रह गया है, परंतु यह प्रथा पहले उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्रों जैसे कि उत्तराखंड का जौनसार बावर, हिमाचल का शिलाई, किन्नौर और शिमला सहित अन्य इलाकों में सामान्य मानी जाती थी। महाभारत में द्रौपदी का विवाह पांच पांडवों से होना इस परंपरा का प्राचीन उदाहरण है। पांडवों के वनवास काल में इन क्षेत्रों में उनके निवास के संकेत मिलते हैं, जिससे माना जाता है कि बहुपति विवाह की परंपरा वहीं से प्रभावित हो सकती है। आज बहुपति विवाह लगभग विलुप्त हो चुका है, किंतु इस प्रथा के समर्थक और विरोधी दोनों ही अपने-अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं । समर्थकों का मानना है कि यह प्रथा नारी को आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा देती है। कई महिलाएं इसे एक वरदान मानती हैं, वे कहती हैं कि वे ' अक्षय सुहागिन हैं, उन्हें विधवा होने का डर नहीं रहता, और उनके बच्चों के सिर से पिता का साया नहीं उठता। वहीं इसके विरोधी इसे नारी की स्वतंत्रता, सम्मान और मानसिक स्वास्थ्य के विरुद्ध मानते हैं । उनका मानना है कि यह प्रथा आधुनिक समाज में महिलाओं की गरिमा और समानता के सिद्धांतों के अनुकूल नहीं है। दिलचस्प बात यह है कि न केवल भारत के कुछ पर्वतीय क्षेत्रों में, बल्कि चीन के सिचुआन प्रांत में रहने वाली गियांग जनजाति में भी यह प्रथा आज भी प्रचलन में है।

वहां की महिलाएं इसे अपनी संस्कृति का गौरव मानती हैं और इसे स्वेच्छा से अपनाती हैं । विवाह की प्रथा समय, स्थान और सामाजिक संदर्भ के अनुसार बदलती रही है। चाहे वह बहुपत्नी विवाह हो या बहुपति विवाह, दोनों ही व्यवस्थाओं को समझने के लिए ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों की गहराई में जाना आवश्यक है। आज के समय में जहां व्यक्तिगत अधिकार और समानता की बात की जाती है, वहां इन परंपराओं पर पुनः विचार करना एक बौद्धिक विमर्श का विषय बन गया है, क्योंकि कभी-कभी रूढ़िवादी विचार व कार्य भावी पीढ़ी के लिए परंपरा का रूप ले लेती है, जिसको न चाहते हुए भी कभी-कभार निभाना भी पड़ता है । रूढ़िवादी धारणा नहीं, अपितु तार्किक दृष्टिकोण अपन की जरूरत है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कौन थे डीएनए फिंगरप्रिंटिंग के जनक वैज्ञानिक पद्मश्री लालजी सिंह ?

विजय गर्ग

भारत को डीएनए और फिंगर प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित वैज्ञानिक लालजी सिंह की देन हैं, भारत को डीएनए और फिंगर प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित वैज्ञानिक लालजी सिंह की देन हैं, जिनका जनम आज के दिन ही 5 जुलाई 1947 को हुआ और 70 साल की उम्र में 10 दिसंबर 2017 को उन्होंने दुनिया को अलविदा कर दिया था, लेकिन उन्होंने भारत को डीएनए, ब्रीडिंग टेक्नोलॉजी और कृत्रिम गर्भाधान की तकनीक देकर मेडिकल की दुनिया में इतिहास रच दिया। लालजी सिंह को भारतीय डीएनए और फिंगरप्रिंटिंग का जनक कहा जाता है। उन्होंने लिंग निर्धारित करने वाले अणुओं, वन्यजीव संरक्षण, फोरेंसिक साइंस के क्षेत्र में भी काम किया। साल 2004 में इंडियन साइंस और टेक्नोलॉजी सेक्टर में उनके योगादान के लिए पद्मश्री पुरस्कार से नवाजा गया था। 10 दिसंबर 2017 को उन्होंने दुनिया को अलविदा कर दिया था । \ लालजी सिंह की उपलब्धियां डॉ. लालजी सिंह उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के कलवारी गांव में जन्मे थे। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) से बीएससी, एमएससी और पीएचडी की थी। उन्होंने भारत में डीएनए और फिंगरप्रिंटिंग टेक्नोलॉजी को विकसित किया, जिसने फोरेंसिक साइंस और क्राइम इन्वेस्टिगेशन को नए आयाम पर पहुंचाया। राजीव गांधी हत्याकांड, नैना साहनी तंदूर हत्याकांड, बेअंत सिंह हत्याकांड जैसे हाई प्रोफाइल केस इसी टेक्नोलॉजी की मदद से सुलझाए गए और आज फिंगर प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल आधार कार्ड बनाने के लिए पूरे देश में हो रहा है। सरकार फिंगर प्रिंटिंग के जरिए ही भारतीयों का रिकॉर्ड मेंटेन किए हुए है।

मेडिकल साइंस की दुनिया में योगदान देते हुए लालजी सिंह ने 1995 में हैदराबाद में सेंटर फॉर डीएनए फिंगरप्रिंटिंग एंड डायग्नोस्टिक्स (सीडीएफडी) की खोला। साल 1998 में वन्य जीव संरक्षण संबंधी टेस्टिंग के लिए लेबोरेटरी फॉर द कॉन्सर्वेशन ऑफ एंडेंजर्ड स्पीशीज (लाकोन्स) की स्थापना की। साल 2004 में अपने पैतृक गांव में जीनोम फाउंडेशन खोला, जिसका उद्देश्य गांवों में रहने वाले लोगों को जेनेटिक डिसिज का इलाज उपलब्ध कराना है। उन्होंने ही जीनोम बेस्ड पर्सनलाइज्ड मेडिसिन का सिद्धांत दिया, जो भविष्य में होने वाली बीमारियों की पहचान करने और उनका इलाज करने के लिए जरूरी है ।

लालजी सिंह के 50 से ज्यादा रिसर्च पेपर प्रकाशित हुए। साल 2011 से 2014 तक वे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। बतौर कुलपति उन्होंने केवल एक रुपये सैलरी ली थी। उन्होंने 1987 में हैदराबाद के सेंटर फॉर सेलुलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी (सीसीएमबी) के साथ अपने वैज्ञानिक जीवन की शुरुआत की थी। उनके द्वारा स्थापित जीनोम फाउंडेशन और डीएनए फिंगरप्रिंटिंग टेक्नोलॉजी ने भारत में वैज्ञानिक अनुसंधान को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है।

कैसे किया टेक्नोलॉजी का आविष्कार ? 1968 में जब वे एमएससी कर रहे थे तो उनकी रुचि भारत में पाए जाने वाले सांपों के साइटोजेनेटिक्स की स्टडी करने में थी। उन्होंने एक सांप की प्रजाति बैंडेड क्रेट में सेक्स क्रोमोसोम पर स्टडी भी की। इस स्टडी के दौरान उन्हें डीएनए सिक्वेंस मिले, जिसे उन्होंने बैंडेड क्रेट माइनर (बीकेएम) सिक्वेंस नाम दिया। डीएनए पर ओर रिसर्च की तो जानवरों कई प्रजातियों में यह मिले और इंसानों में कई रूपों में इनकी मौजूदगी पता चली। 1987 से 1988 तक हैदराबाद के सेंटर फॉर सेलुलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी (सीसीएमबी) में रिसर्च करते हुए उन्हें पता चला कि फोरेंसिक टेस्ट के लिए डीएनए मैचिंग के लिए सैंपल और फिंगर प्रिंट लिए जा सकते हैं। 1988 में माता-पिता से जुड़े विवाद को सुलझाने के लिए पहली बार टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया गया था।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

भारत में लिव-इन रिलेशनशिप एक जटिल सामाजिक वास्तविकता बन गई है

विजय गर्ग

भारत में लिव-इन रिलेशनशिप एक जटिल सामाजिक वास्तविकता बन गई है, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पसंद का प्रतीक तो है, लेकिन इसके कानूनी दायरे, खासकर संपत्ति के अधिकारों को लेकर, अक्सर भ्रम की स्थिति बनी रहती है। पारंपरिक विवाह के इतर इस रिश्ते में रहने वाले भागीदारों के लिए संपत्ति का अधिकार अक्सर एक अंधकारमय गलियारे जैसा होता है, जहां न्याय की राह आसान नहीं, क्योंकि सामाजिक मानदंडों में बदलाव और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बढ़ते जोर के साथ, यह व्यवस्था अब महानगरों तक ही सीमित नहीं रही है, बल्कि छोटे शहरों और कस्बों में भी इसका प्रचलन बढ़ रहा है।

हालांकि, इस बढ़ती प्रवृत्ति के साथ कई कानूनी और सामाजिक चुनौतियां भी सामने आ रही हैं, जिनमें सबसे प्रमुख है लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाले पार्टनर्स के संपत्ति के अधिकार का मुद्दा, जो एक ऐसा क्षेत्र है जहां स्पष्ट कानूनी ढांचे की कमी के कारण अक्सर जटिल समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

लिव-इन रिलेशनशिप में रिश्तों के टूटने पर संपत्ति के बंटवारे से जुड़ी कई चुनौतियां सामने आती हैं, जैसे कि संयुक्त संपत्ति का अभाव और वित्तीय योगदान साबित करने में मुश्किल। अक्सर पार्टनर संपत्ति अलग-अलग खरीदते हैं या एक कमाता है और दूसरा घर चलाता है, जिससे यह तय करना मुश्किल हो जाता है कि कौन सी संपत्ति किसकी है। भावनात्मक और सामाजिक दबाव भी महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए लड़ने से रोकता है। उत्तराधिकार का मुद्दा भी एक बड़ी समस्या है, क्योंकि वसीयत न होने पर लिव-इन पार्टनर का

संपत्ति में अधिकार जताना असंभव हो जाता है।

हमारे देश में लिव-इन रिलेशनशिप को लेकर कोई स्पष्ट और व्यापक कानून मौजूद नहीं है, जिसके कारण ऐसे रिश्तों में संपत्ति के अधिकारों पर अक्सर अस्पष्टता बनी रहती है। यद्यपि सर्वोच्च न्यायालय ने विभिन्न फैसलों में इसे 'विवाह जैसी प्रकृति का रिश्ता' माना है, खासकर घरेलू हिंसा से महिलाओं के संरक्षण अधिनियम, 2005 के तहत गुजारा भत्ता के मामलों में। फिर भी संपत्ति के बंटवारे या विरासत को लेकर कोई ठोस कानूनी दिशानिर्देश स्थापित नहीं किए गए हैं। भारतीय कानून पारंपरिक रूप से विवाह-आधारित संबंधों को मान्यता देता है, जहां पति-पत्नी के संपत्ति के अधिकार स्पष्ट रूप से परिभाषित हैं।

इस कानूनी अस्पष्टता का सीधा अर्थ यह है कि यदि एक लिव-इन पार्टनर की मृत्यु हो जाती है, या रिश्ता टूट जाता है, तो संयुक्त रूप से अर्जित संपत्ति के बंटवारे या विरासत को लेकर विवाद उठना तय है, जिससे अक्सर महिला साथी को खमियाजा भुगतना पड़ता है। वे अपनी कमाई या रिश्ते में किए गए योगदान का कानूनी प्रमाण पेश करने में कमजोर स्थिति में होती हैं। यह कानूनी लड़ाई लंबी और महंगी साबित होती है, जिसमें न्याय मिलना मुश्किल हो जाता है।

भारतीय न्यायपालिका ने विभिन्न फैसलों के माध्यम से लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाले पार्टनर्स के अधिकारों, खासकर संपत्ति के संदर्भ में, को परिभाषित किया है। एस. खुशबू बनाम कन्नियाम्मल (2010) मामले ने लिव-इन रिलेशनशिप की कानूनी वैधता को स्थापित करते हुए इसे जीवन के अधिकार का हिस्सा माना। डी. वेलुसामी बनाम डी. पचईअम्मल (2010) में सर्वोच्च न्यायालय ने 'विवाह जैसे रिश्ते' की अवधारणा को उजागर किया, यह स्पष्ट करते हुए कि यदि लिव-इन पार्टनर ने किसी संपत्ति के अधिग्रहण में प्रत्यक्ष योगदान दिया है, तो उस पर उनका अधिकार हो सकता है, हालांकि स्वतः विरासत का अधिकार नहीं होता। इंद्र सरमा बनाम वी.के.वी. सरमा (2013) में, घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005 के तहत लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाली महिलाओं को भरण-पोषण का अधिकार दिया गया, जो वित्तीय सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। धन्नूलाल और अन्य बनाम गणेशराम और अन्य (2015) ने यह स्थापित किया कि यदि एक पुरुष और महिला लंबे समय तक पति-पत्नी की तरह साथ रहते हैं, तो उन्हें विवाहित माना जाएगा, जिससे महिला को लिव-इन पार्टनर की मृत्यु के बाद संपत्ति विरासत में पाने का अधिकार मिला।

सबसे हालिया फैसला कट्टुकंडी इडाथिल कृष्णन तथा अन्य बनाम कट्टुकंडी इडाथिल वाल्सन और अन्य (2022) ने लिव-इन रिलेशनशिप से जन्मे बच्चों के संपत्ति अधिकारों को स्पष्ट करते हुए कहा कि ऐसे बच्चों को वैध माना जाएगा और उन्हें पैतृक संपत्ति में हिस्सा प्राप्त करने का अधिकार होगा, बशर्ते संबंध 'लंबे समय तक' और 'आकस्मिक' प्रकृति का न हो। इन फैसलों ने मिलकर भारत में लिव-इन रिलेशनशिप से जुड़े अधिकारों, विशेषकर संपत्ति और वित्तीय सुरक्षा के पहलुओं को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। निःसंदेह, समस्याओं से निपटने के लिए लिव-इन रिलेशनशिप के स्वैच्छिक पंजीकरण और भागीदारी समझौते 'पार्टनरशिप एग्रीमेंट' को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि संपत्ति और वित्तीय जिम्मेदारियां स्पष्ट रूप से परिभाषित हों। साथ ही, न्यायपालिका को भी स्पष्ट दिशानिर्देश बनाने चाहिए और लोगों को अपने कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूक करना चाहिए ताकि भविष्य में होने वाली समस्याओं से बचा जा सके।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

लघुकथा: "सूखे धागे"

लेखक: डॉ. सत्यवान सौरभ

शहर की सबसे ऊँची इमारत के चौदहवें माले पर स्थित अपने कार्यालय में बैठा राजीव कंप्यूटर स्क्रीन पर आंखें गड़ाए बैठा था, लेकिन उसकी उंगलियाँ बेवजह कीबोर्ड पर थिरक रही थीं। एसी की ठंडी हवा और बाहर भागती ट्रैफिक की आवाज़ों के बीच सब कुछ सामान्य था—पर आज कुछ असामान्य था।

टेबल पर एक छोटा-सा पीला लिफाफा रखा था, जिस पर साफ-साफ अक्षरों में लिखा था—₹भाई को — हर साल की तरह इस बार भी...₹ राजीव ने चौंक कर उसे देखा। जैसे लिफाफे ने कुछ याद दिला दिया हो।

यह वही राखी थी, जो हर साल की तरह इस बार भी उसकी बहन कृति ने भेजी थी। पाँच वर्षों से यह सिलसिला जारी था। कृति, उसकी छोटी बहन, जिसने बचपन में उसकी स्कूल यूनिफॉर्म पर बटन टांके थे, उसके झगड़ों में ढाल बनी थी, और जिसे वह कभी 'मोटी' कहकर चिढ़ाया करता था।

पहले साल राखी आई थी, तो राजीव ने फोन नहीं उठाया। व्यस्त था, एक जरूरी क्लाइंट मीटिंग थी। दूसरे साल ऑफिस की विदेश यात्रा पड़ गई, तो कॉल फिर टल गई। तीसरे साल कृति ने कहा था, ₹भाई, सिर्फ आ जाना, कोई गिफ्ट नहीं चाहिए₹, और उसने जवाब में सिर्फ 'देखता हूँ' कहा था, फिर भी नहीं गया। चौथे साल सिर्फ एक इमोजी भेजा—₹थैंक्स ₹। पांचवें साल बस एक "।

और इस बार फिर राखी आ गई थी। साथ में एक लिफाफा, जिसमें सिर्फ पाँच शब्द थे—₹हर साल की तरह इस बार भी...₹ कोई शिकायत नहीं, कोई उलाहना नहीं, कोई उम्मीद भी नहीं। बस एक चुप्पी, जो सीधे दिल के भीतर उतर गई।

राजीव की आँखों के सामने दृश्य बदलने लगे। कृति की बचपन की खिलखिलाहटें, रसोई में माँ के साथ मिठाई बनाना, वो धागा जो राखी के बाद महीनों तक उसकी अलमारी में रखा रहता था, और वो झूले, जिन पर कृति उसकी पीठ पर बैठकर हँसती थी।

आज उन सबकी जगह ले ली थी एक स्वचालित जीवन ने—जहाँ गूगल कैलेंडर रिमाइंडर देता है कि किस दिन किसे विश करना है, और राखियाँ ऑनलाइन ऑर्डर होकर सीधे दरवाज़े पर डिलीवर हो जाती हैं।

राजीव ने फोन उठाया। कृति का नंबर अभी भी फ़ेवरेट्स में सेव था। कॉल मिलाई घंटी बजी, फिर रुकी।

हाँ, बोलोर—कृति की आवाज़ आई। धीमी, थकी हुई, और शायद एक सीमा तक उदास।

राजीव कुछ कह नहीं पाया। फिर कुछ सेकंड की चुप्पी के बाद बोला, ₹मैं इस बार आ रहा हूँ।

उधर से कोई शब्द नहीं आए, लेकिन राजीव को महसूस हुआ जैसे फोन की दूसरी तरफ़ एक साँस थमी थी। जैसे उस राखी की डोर में बंधा कोई रिश्ता फिर से सांस लेने लगा हो।

उसने अपने कंप्यूटर की स्क्रीन देखी, एक मीटिंग कैंसिल की, और गूगल कैलेंडर में एक नया नोट लिखा—रक्षाबंधन — घर जाना है।

कलाई पर राखी बाँधने की रस्म तो हर साल होती रही, लेकिन इस बार पहली बार उसे उस धागे का असली अर्थ समझ में आया था। यह सिर्फ एक रिवाज नहीं था, बल्कि एक रिश्ता था जो बिना शोर के टूट भी सकता था और बिना कहे जुड़ भी सकता था।

वो जानता था, कृति कुछ नहीं कहेगी। शायद गले भी न लगे। लेकिन इस बार वह जाएगा—बस कलाई आगे बढ़ाने नहीं, बल्कि दोनों हाथों से उस रिश्ते को थामने, जो कभी अनमोल था और अब फिर से होना चाहता था।

प्रलोभन का परिणाम: जब प्रकृति निगलने लगती हैं

भारत में नदियों, पहाड़ों और जल स्रोतों के साथ हो रहा खिलवाड़ अब आपदाओं का कारण बन रहा है। लालचवश लोग नदियों के पाट में मकान और पहाड़ों पर रिसॉर्ट बना रहे हैं। एक टपकता नल प्रतीक है उस सोच का, जो पर्यावरण की उपेक्षा करती है। सेल्फी, पर्यटन और मुनाफ़े की इस भीड़ में प्रकृति दम तोड़ रही है। हमें चेतना की ज़रूरत है—विकास से पहले संवेदना। यदि अब भी नहीं रुके, तो अगली आपदा किसी की संवेदना नहीं देखेगी, बस सबकुछ बहा ले जाएगी। प्रकृति माफ़ नहीं करती, वह वापस लेती है।

डॉ. प्रियंका सौरभ

यह अजीब विडंबना है कि जब कोई प्राकृतिक आपदा आती है, तो हम सिर्फ़ मरने वालों पर शोक प्रकट करते हैं — जबकि जिनके लालच, उपेक्षा और मूर्खता से वह आपदा आई, उन पर सवाल उठाने का साहस नहीं करते। एक नदी के बहाव में बहे मकानों और दुकानों को देखकर हम आंसू तो बहाते हैं, लेकिन क्या हम उस कुकर्म पर विचार करते हैं जिसने नदी की गोद में घर बनवा दिए?

आज भारत के पहाड़ों से लेकर मैदानों तक, हर जगह मनुष्य का प्रलोभन ही विनाश का बीज बन चुका है। हाल की घटनाएं — उत्तरकाशी, जोशीमठ, केदारनाथ, किन्नौर या हिमाचल की तबाही — सभी हमें याद दिलाती हैं कि जब मनुष्य अपने हित में प्रकृति की रेखाएं मिटा देता है, तो नदी, पहाड़, बादल और धरती एक दिन सबकुछ वापस ले लेते हैं।

मेरे घर के पास एक छोटा सा रेस्तरां है। उसके नल से दिन-रात पानी टपकता रहता है। मैंने कई बार कहा, लेकिन उन्हें फर्क नहीं पड़ा। एक ढीला वॉशर बदलने से समस्या हल हो सकती है, लेकिन सौ-पचास रुपये की मरम्मत उनके लिए बेमतलब है। पानी बहता है, तो बहता रहे। क्या यह एक रेस्तरां तक सीमित लापरवाही है? बिल्कुल नहीं। यह प्रतीक है उस मानसिकता का जो कहती है — ₹जो हो रहा है, होने दो। हमें क्या फर्क पड़ता है?₹ इस सोच के कारण हर दिन लाखों लीटर पानी व्यर्थ जाता है, गाड़ियों से निकलती धुआं-संस्कृति जारी रहती है, कचरे में दम तोड़ती गायें खड़ी रहती हैं, और हिमालय की छाती पर रिसॉर्ट्स उगते रहते हैं।

भारत का हिमालय क्षेत्र न सिर्फ़ भौगोलिक, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी हमारी धरोहर है। परंतु अब वह पर्यटन का बाजार बन चुका है। पहाड़ों की आत्मा शांति थी, अब वह शोर में डूब चुकी है। दो दिन की छुट्टी मिलते ही लाखों लोग सेल्फी, शराब और शोरगुल की भूख लिए हिमालय पर टूट पड़ते हैं। वे वहां शांति खोजने नहीं जाते, बल्कि वहां भी उसी बाजार को बसाना चाहते हैं जिससे भागने का दावा करते हैं।

रिसॉर्ट, होटल, रेस्टोरेंट, पार्किंग, रोड—हर जगह अतिक्रमण है। पहाड़ की सीमित सहनशक्ति की कोई चिंता नहीं। जिस ज़मीन को सदियों से पेडों ने थामा हुआ था, वहां अब कंक्रीट की मोटी परतें बिछ गई हैं। जब बरसात आती है, तो वह ज़मीन अपने भीतर पानी को नहीं समेट पाती — परिणामस्वरूप, वही जल वेग बनकर जान लेता है।

बादल फटते हैं, बाढ़ आती है, और हम सोशल मीडिया पर दुख प्रकट करके आगे बढ़ जाते हैं। लेकिन क्या हम पूछते हैं कि उस बाढ़ ने रास्ता क्यों बदला? क्या वह प्राकृतिक था या उसे रोका गया था? नदियाँ सदियों से बहती आई हैं, उन्होंने अपने लिए रास्ता बनाया है। लेकिन जब हम घाटी में मकान बना लेते हैं, नदी के किनारे होटल ठोक देते हैं, तो वह नदी अपने रास्ते को reclaim करेगी ही।

उत्तरकाशी की हालिया त्रासदी में पूरा गांव बह गया। लेकिन वह गांव पहाड़ों की गोद में नहीं था — वह नदी के पाट में बना था। यह कोई आस्था नहीं थी, यह लालच था। और लालच कभी भी सुरक्षित नहीं रहता। कठोर शब्द हैं, लेकिन सच यही है कि हम एक मूर्ख और संवेदनहीन समाज में तब्दील हो चुके हैं। हम आपदाओं को रोकने के बजाय उनका इंतज़ार करते हैं ताकि मीडिया को दृश्य मिलें और सरकारें मुआवज़े का तमाशा कर सकें। हमने पर्यावरण को सिर्फ़ एक 'डॉक्युमेंट' बना दिया है। नीति आयोग से लेकर नगर पंचायत तक, हर स्तर पर विकास का मतलब अतिक्रमण हो गया है।

क्या यह दुखद नहीं कि पहाड़ों पर हो रही तबाही के बीच भी लोग 'डील' खोज रहे हैं — "इस सीजन होटल सस्ते मिल जाएंगे"? क्या हमने चेतना खो दी है?

दिल्ली के डीएनडी फ्लाईओवर पर एक ऑटो चालक ने मुझे बताया कि उसने किसी को यमुना में प्लास्टिक की बोतल फेंकते देखा और बहुत दुखी हुआ। एक छोटे इंसान की बड़ी भावना! लेकिन क्या उस भीड़ को कोई समझा सकता है जो हर नदी, हर घाट, हर पहाड़ को बस 'घूमने की जगह' समझती है?

हमारी आंतरिक यात्रा कभी शुरू ही नहीं होती। हम गाड़ी में बैठकर पहाड़ तक तो पहुंच जाते हैं, लेकिन हमारे अंदर का इंसान वहीं के वहीं मैदान में पड़ा रहता है — लालची, उपभोगी और शोरगुल में डूबा। रेस्तरां का टपकता नल भले ही प्रतीकात्मक हो, लेकिन यह उसी उपेक्षा का प्रतीक है जो हमने हिमालय और पर्यावरण के साथ बरती है। हम जिस संसाधन को रोज़ टपकने देते हैं — पानी, हवा, हरियाली, मिट्टी, हिमनद — वे एक दिन सूख जाएँगे। फिर नल नहीं टपकेगा, तब शायद उसमें से हवा भी न निकले।

हम गाय को कचरा खिला कर भी उससे दूध की उम्मीद रखते हैं। हम पेड़ काटकर भी चाहते हैं कि बारिश हो। हम नदी को नाला बनाकर भी उससे आचमन की कामना करते हैं। क्या यह पाखंड नहीं है?

अब समय मौन शोक का नहीं, चेतना का है। अगर हम नहीं चेते, तो अगली बार कोई नदी, कोई पहाड़, कोई हवा, कोई भूचाल हमें बख्शेगा नहीं।

हमें पुनर्विचार करना होगा कि: क्या हम अपने छोटे-छोटे प्रलोभनों को तिलांजलि देने को तैयार हैं? क्या हम पर्यावरणीय संतुलन को विकास की नींव बना सकते हैं? क्या हम 'घूमने' की जगह 'जुड़ने' की भावना से प्रकृति के पास जा सकते हैं? क्या हम एक नल टपकने से पहले उसे ठीक कर सकते हैं — ताकि एक पहाड़ गिरने से रोका जा सके?

मैं हिमालय नहीं जाती, न ही अपनी यात्राओं को पहाड़ों पर थोपती हूँ। यह कोई त्याग नहीं, सिर्फ़ समझदारी है। मैं विंध्याचल और अरावली की छोटी पहाड़ियों से संतुष्ट हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि हिमालय की छाती पहले ही विदीर्ण है — उसे और कष्ट देना अब पाप है।

जब तक हम विकास को सिर्फ़ भवनों और दुकानों में मापते रहेंगे, तब तक विनाश हमारा पीछा नहीं छोड़ेगा। हर बहता नल एक आपदा की दस्तक है। हर रिसता पहाड़, हर भरा हुआ नदी का पाट, हर टूटता पुल हमें चेतावनी देता है — कि प्रलोभन का परिणाम बहुत गहरा होता है। नदियाँ जब निगलने लगती हैं, तब देर हो जाती है।

देश का आधार : शिक्षा और स्वास्थ्य

डॉ. नीरज भारद्वाज

किसी भी विकसित राष्ट्र के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं बहुत महत्वपूर्ण हैं। दोनों ही देश के विकास के मजबूत पहिए भी हैं। कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। इस दृष्टि से हर व्यक्ति का स्वस्थ रहना और शिक्षा प्राप्त करना मूलभूत आवश्यकता है। हमारे देश के अलग-अलग राज्यों में शिक्षा की अलग-अलग स्थिति है। साक्षरता दर के आंकड़े भी अलग-अलग हैं। विचार करें तो देश के बालक और युवा शिक्षित होंगे तो वह रोजगार के लिए इधर-उधर नहीं भटकेंगे। शिक्षित युवा स्वयं के लिए रोजगार पैदा कर सकता है और दूसरों को भी रोजगार दे सकता है।

देश के अलग-अलग राज्यों में शिक्षा की स्थिति ठीक ना होने के कारण आज नगरों और महानगरों की ओर लोगों का मुख हो रहा है। गांव से पलायन हो रहा है, व्यक्ति कम खाकर या अपनी मूलभूत आवश्यकताओं पर अंकुश लगाकर अपनी आने वाली पीढ़ी को व्यवस्थित और सुंदर वातावरण में पढ़ाना चाहता है। इसी दौड़ के चलते महानगरों पर जनसंख्या का दबाव धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है जिसके चलते बहुत सारी अनचाही समस्याएं भी कई बार सामने आ जाती हैं।

महानगरों में जनसंख्या का अतिरिक्त बोझ होने के चलते झुग्गी-झोपड़ी का विकास होना, परिवहन समस्या और सड़क पर चारों ओर जाम जैसी स्थितियों का होना भी है। यदि सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की व्यवस्था को सुदृढ़ और व्यवस्थित तरीके से चलाएं तो बहुत से लोग गांव में ही रहकर अपना गुजर-बसर कर सकते हैं लेकिन जब समाचारों में देखते हैं कि दूर दराज के किसी गांव में स्कूल की छत गिर जाने से बच्चों की मौत हो गई। विद्यालय में सांप तथा जहरीले जीव निकल आए। बरसात के दिनों में विद्यालयों में पानी भर जाना, कहीं विद्यालयों में बिजली गायब होना। पीने के पानी की कमी, शौचालय न होना, अध्यापकों की भारी कमी आदि समस्याएं दिखाई देती हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति का निराश मन हार थक कर गांव छोड़कर कैसे भी गुजर-बसर करने पर मजबूर शहर की ओर आ जाता है।

इसके साथ ही स्वास्थ्य सेवा की बात करें तो भारतीय गांव में आज भी स्वास्थ्य सेवाओं की बहुत भारी कमी है। समय पर सही से इलाज न होने के चलते कितने ही लोगों की जान चली जाती है। एंबुलेंस ना मिलने के चलते चारपाई पर, कोई अपनी पीठ पर या गोद में अपने माता-पिता-बच्चे आदि को उठाकर ले जाते हुए, कितने ही समाचारों में दिखाएं जाते हैं। लोग अच्छे इलाज के लिए भी नगरों और महानगरों की ओर चल देते हैं। इससे भी महानगरों पर जनसंख्या का एक भारी दबाव बढ़ता है। महानगरों में महंगे इलाज की व्यवस्था है लेकिन वहां भी प्रशासन की लचर हालत ही है। कुछ लोग यहां से भी हार थक कर अपने गांव लौट आते हैं। किसी का पैसा और इंसान दोनों ही चले जाते हैं। वादे तो बहुत होते हैं लेकिन वह कितने पूरे होते हैं, इसके बारे में भी सोचने की जरूरत है।

सरकार फ्री शिक्षा और उचित स्वास्थ्य सेवाओं की बात अवश्य करती है लेकिन वह कितनी कारगर और सफल है, इस पर भी ध्यान देने की जरूरत है। विद्यालयों-महाविद्यालयों में शिक्षकों की भारी कमी दिखाई देती है। अस्पतालों में डॉक्टरों की कमी के चलते लंबी-लंबी लाइन लगी रहती हैं। एक दिन का काम महीनों में होता है। सरकार को शिक्षा और स्वास्थ्य के मूलभूत ढांचे में सुधार करने की आवश्यकता है। समय-समय पर शिक्षकों और डॉक्टर की भर्ती करते रहना होगा। देश सेवा में उनकी बहुत बड़ी भूमिका है। इनमें सुधार हुआ तो सभी में सुधार संभव है। कहा जाता है कि शिक्षक राष्ट्र का निर्माता है। राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा और स्वास्थ्य की अनदेखी न की जाए, बल्कि समय-समय पर इनमें सुधार की आवश्यकता है।

व्यंग्य : इंपोर्टेंस चाहिए तो बीमार बने रहें

विवेक रंजन श्रीवास्तव

मुसद्दीलाल बीमार पड़े तो एक दम से उनकी इंपोर्टेंस बढ़ गई। हमेशा ताने मरने वाली, बेबात नाराज रहने वाली पत्नी उनकी तीमारदारी में लग गई। सुबह पलंग पर ही बिन मांगे चाय, फिर घंटे भर बाद स्प्राउट्स का हेल्दी नाश्ता मिलने लगा। उनकी कमजोरी का ख्याल कर अपने नरम कंधे का सहारा देकर बीबी उन्हें नहलाने ले जाती, रोटी के फुल्के और परवल की सब्जी का रसा एक एक निवाला खिलाती। नाते रिश्ते के लोग उनसे मिलने आते, दोस्तों से प्यार भरे संदेश आते, ऑफिस से खुचड़ बॉस ने उन्हें गेट वेल सून के मैसेज के साथ फूलों का बुके भेजा। यह सारी खातिरदारी देख मुसद्दीलाल ने मन ही मन अपनी बीमारी के एक्सटेंशन का इरादा कर लिया। वे पलंग पर पड़े हुए बीमारी के लाभ चिंतन करते। वे सोचते यदि सब हमेशा स्वस्थ रहने लगे, तो डॉक्टरों का, दवा कंपनियों का, और ₹बीमारी सलाहकारों₹ का क्या होगा? मुसद्दीलाल बीमारी बनाये रखने की योजनाएँ बनाते, जिनसे किसी न किसी तरह, कोई न कोई रोग आपको घेरे रहेगा और आपको सबसे अटेंशन का वी आई पी स्टेटस मिलता रहेगा। मुसद्दीलाल के बीमारी के नुस्खों में पहला नुस्खा है कसरत को भूल जाइए! शरीर को जंग लगाने की सुनिश्चित तकनीक है, खाओ पियो पड़े रहो, आडे टेढ़े लेट कर मोबाइल या अख़बार में घुसे रहिए। मांसपेशियाँ ढीली पड़ जाएंगी, जोड़ों में जंग जमेगी, और मोटापा आपका स्थायी साथी बन जाएगा। यकीन मानिए, ये ₹एंटी-कसरत₹ थेरेपी हृदय रोग और डायबिटीज़ की गारंटी देती है!

सुबह-शाम घूमना? अस्वस्थता के लिए खतरनाक प्रवृत्ति है! विटामिन डी और ताज़ा हवा से बचाव कीजिए। पर्दे खींचकर, एसी चलाकर अंधेरे कमरे में दुबके रहिए। ऑस्टियोपोरोसिस और डिप्रेशन आपका स्वागत करने को तैयार बैठे मिलेंगे। प्रदूषित हवा ही बीमारी के लिए असली टॉनिक है।

पाचन तंत्र को ओवरटाइम काम पर लगाने की कला सीखनी चाहिए। व्रत रखेंगे तो पेट को आराम मिलेगा, डिटॉक्स होगा? यह नासमझी है! जब भी मन करे, जो भी मिले चटपटा, तला-भुना, मिठाई ठूँसिए। पेट को काम में लगाए रखिए। एसिडिटी, गैस और लिवर की शिकायतें आपके सेवन की प्रशंसा में गीत गाएंगी।

सबके साथ बैठकर खाने से परिवार जनों, दोस्तों में बातचीत होती है, प्यार बढ़ता है? क्या फायदा? अकेले फोन चलाते हुए खाइए। जल्दी-जल्दी खाना निबटाइए।

पत्नी के बनाए भोजन में मीन मेंख निकालिए, इससे मानसिक तनाव भी मुफ़्त में मिलेगा!

हँसने से एंडोर्फिन रिलीज़ होता है, तनाव कम होता है, ये तो स्वास्थ्य अपराध है! गंभीर, उदास, चिड़चिड़ा चेहरा बनाए रखिए। बोरियत और निराशा को पालिए। डिप्रेशन और सोशल आइसोलेशन आपकी इस समर्पण भावना का सम्मान करेंगे, और आपको दिमागी तौर पर पंगु बनाकर ही मानेंगे। देर रात तक जागिए। सोशल मीडिया स्क्रॉल कीजिए, टेंशन लीजिए। दिन में झपकियाँ लेकर रात की नींद उड़ाइए। अनिद्रा, चिड़चिड़ापन और कमज़ोर इम्युनिटी, बीमार बने रहने का तिगुना लाभ पाने का यह उत्तम मार्ग है। मन की बात मन में ही दबाए रखिए। गिले-शिकवे पालिए। अकेलेपन और मनोवैज्ञानिक उलझनों को निमंत्रण दीजिए, वे खुशी-खुशी आपका आमंत्रण स्वीकार करेंगे।

खुश रहने से जीवन आसान होता है, इसलिए हमेशा शिकायतें ढूंढिए। दूसरों से तुलना करके दुखी होइए। छोटी-छोटी बातों पर भड़किए। ग़लत जगह, ग़लत समय पर अपनी राय ज़रूर रखिए। अनावश्यक बहसों और दुश्मनियों का निर्माण करिए। यकीनन, यह आपके सिरदर्द और ब्लड प्रेशर को नया आयाम देगा।

कहावत है एक अच्छा दोस्त तो पूरी की पूरी दवाई की दुकान है?

इसलिए ऐसा साथी बनाए, जो गलत नकारात्मक सलाह दे, विषैला रिश्ता पूरा का पूरा ₹बीमारियों का सुपरस्पेशलिटी अस्पताल₹ होता है! वह आपको तनाव देगा, गलत सलाह देगा, और आपके सभी अस्वस्थ प्रयासों में हौसला बढ़ाएगा। उन्हें पकड़कर रखिए।

परंपरा, पर्यावरण और परिवर्तन: रक्षाबंधन का नया स्वरूप

[रिश्तों का उत्सव, भावनाओं का पर्व — रक्षाबंधन]

रक्षाबंधन वह पवित्र अवसर है, जब एक साधारण-सा धागा दो आत्माओं को प्रेम, विश्वास और अटूट बंधन की डोर में बांध देता है। यह राखी बांधने की रस्म से कहीं अधिक है—यह दिलों को जोड़ने का वह जादू है, जो समय, दूरी और परिस्थितियों को पार कर रिश्तों को अमर बनाता है। बहन की उंगलियों से बंधा वह सूत्र केवल कलाई को नहीं, बल्कि आत्मा को स्पर्श करता है, और भाई का वचन रक्षा के साथ-साथ सम्मान, समर्पण और स्नेह का प्रतीक बन जाता है। रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति का वह जीवंत स्वर है, जो भाई-बहन के रिश्ते को पवित्रता प्रदान करता है और हर मानवीय संबंध में विश्वास और एकता का संदेश देता है।

इस पर्व का महत्व पारिवारिक सीमाओं से परे जाकर सामाजिक एकता को मजबूत करता है। इतिहास में इसके कई प्रेरक प्रसंग दर्ज हैं। मध्यकाल में मेवाड़ की रानी कर्णावती ने 1535 में मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेजकर अपने राज्य की रक्षा की गुहार की थी। इस घटना ने रक्षाबंधन को रक्त-संबंधों से आगे बढ़ाकर विश्वास और सम्मान का प्रतीक बनाया, जो अनजान दिलों को भी जोड़ सकता है। इसी तरह, महाभारत में द्रौपदी द्वारा श्रीकृष्ण की उंगली पर साड़ी का टुकड़ा बांधने की कथा इस पर्व के आध्यात्मिक आयाम को उजागर करती है। यह एक साधारण कार्य नहीं था, बल्कि एक ऐसी आत्मिक प्रतिज्ञा थी, जिसे श्रीकृष्ण ने चीरहरण के समय द्रौपदी की लज्जा की रक्षा कर सार्थक किया। ये कथाएँ दर्शाती हैं कि रक्षाबंधन केवल परंपरा नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों का उत्सव है।

रक्षाबंधन का एक अनूठा पहलू इसका सामाजिक और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने वाला स्वरूप है। परंपरागत रूप से राखी को भाई द्वारा बहन की रक्षा से जोड़ा जाता रहा है, लेकिन आधुनिक भारत में यह पर्व लिंग की सीमाओं को तोड़ रहा है। आज कई बहनें अपनी सहेलियों, छोटी बहनों या अन्य महिलाओं को राखी बांधती हैं, जो प्रेम और समर्थन के दायित्व को लिंग से परे ले जाता है। 2023 के एक सर्वे (फेस्टिवल ट्रेंड्स, स्टेटिस्टा) के अनुसार, 28% महिलाओं ने बताया कि वे अपनी महिला मित्रों को राखी बांधती हैं, ताकि आपसी विश्वास और प्रेम को मजबूत किया जा सके। यह बदलाव रक्षाबंधन को एक समावेशी उत्सव बनाता है, जो हर उस रिश्ते को सम्मान देता है, जो प्रेम और विश्वास पर आधारित हो।

यह पर्व अनजान दिलों को भी जोड़ने की शक्ति रखता है। भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में, जहां बहनें अपने हाथों से बनाई राखियाँ सैनिकों को भेजती हैं, रक्षाबंधन एक भावनात्मक सेतु बन जाता है। रक्षा मंत्रालय के 2024 के आंकड़ों के अनुसार, देशभर से लगभग 1.2 लाख राखियाँ सैनिकों तक पहुंचीं, जो उनके मनोबल को बढ़ाती हैं। यह राखी केवल एक धागा नहीं, बल्कि वह भावना है, जो कहती है कि देश और समाज की रक्षा करने वाला हर शख्स हमारा भाई है। यह पहल समाज में एकता और भाईचारे को जीवंत करती है, जो रक्षाबंधन के सामाजिक महत्व को और गहरा करती है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, रक्षाबंधन का सूत्र संकल्प और आत्मबल का प्रतीक है। भारतीय दर्शन में सूत्र का गहरा महत्व है, जो जीवन के तत्वों को एकता में पिरोता है। उपनिषदों में "ब्रह्मसूत्र" की अवधारणा इस एकता को दर्शाती है, और राखी भी उसी तरह भाई-बहन के बीच प्रेम, विश्वास और कर्तव्य को बांधती है। यह धागा भले ही साधारण दिखे, लेकिन यह बहन की वह प्रार्थना है, जो भाई की शारीरिक, मानसिक और नैतिक मजबूती की कामना करती है। यह पर्व भावनात्मक बंधनों को गहरा कर तनाव और अवसाद को कम करने में भी मदद करता है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य को बल मिलता है।

आधुनिक युग में तकनीक ने रक्षाबंधन को और भी व्यापक बना दिया है। डिजिटल राखी, वीडियो कॉल और ऑनलाइन उपहारों ने दूर-दराज बसे भाई-बहनों को एक सूत्र में जोड़ा है। 2024 में, भारत के ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर 50 लाख से अधिक राखी-संबंधित उत्पादों की बिक्री ने इस पर्व की वैश्विक लोकप्रियता को दर्शाया। फिर भी, रक्षाबंधन की आत्मा वही है—प्रेम, विश्वास और अटूट बंधन। तकनीक ने इसे केवल अधिक सुलभ बनाया है, लेकिन इसकी मूल भावना को अपरिवर्तित रखा है।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता ने भी रक्षाबंधन को नया आयाम दिया है। 2023 में, उत्तराखंड के "रक्षासूत्र फॉर नेचर" अभियान ने बीजयुक्त राखियों की पहल शुरू की। ये राखियाँ कपास, जूट और बीजों से बनी थीं, जिन्हें मिट्टी में बोकर पौधे उगाए जा सकते हैं। यह पहल पर्यावरण संरक्षण, प्लास्टिक कचरे में कमी और स्थानीय महिलाओं को रोजगार देने का अनूठा प्रयास था। यह दर्शाता है कि रक्षाबंधन न केवल मानव रिश्तों को संवारता है, बल्कि प्रकृति के प्रति हमारे दायित्व को भी रेखांकित करता है।

रक्षाबंधन अब केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि वैश्विक मंच पर प्रेम और एकता का प्रतीक बन चुका है। भारतीय प्रवासियों ने इसे विश्व के हर कोने में जीवंत किया है। 2024 में न्यूयॉर्क में आयोजित एक रक्षाबंधन उत्सव में 5,000 से अधिक लोगों की भागीदारी ने इसकी सार्वभौमिक अपील को सिद्ध किया। यह आयोजन सांस्कृतिक एकजुटता का प्रतीक था और यह दर्शाता है कि रक्षाबंधन का संदेश—प्रेम, विश्वास और रक्षा—हर संस्कृति और सीमा को पार कर स्वीकार्य है।

रक्षाबंधन हमें सिखाता है कि सच्चा बंधन वही है, जो बिना शर्तों के पनपता है। राखी का वह नाजुक धागा एक ऐसी शक्ति है, जो न केवल दो व्यक्तियों को, बल्कि पूरे समाज को एकता के सूत्र में पिरो देता है। यह केवल रक्षा का वचन नहीं, बल्कि आत्मिक मित्रता और स्नेह का उत्सव है, जो भाई-बहन को जीवनभर का सहारा बनाता है। चाहे मध्यकाल की रानी कर्णावती हों, जिन्होंने हुमायूँ को राखी भेजकर रिश्तों की नई परिभाषा गढ़ी, या महाभारत की द्रौपदी, जिनके साड़ी के टुकड़े ने श्रीकृष्ण के साथ आत्मिक बंधन रचा, या आज की आधुनिक नारी, जो इस परंपरा को डिजिटल युग में जीवंत रखती है—रक्षाबंधन हर युग में प्रासंगिक रहा है। यह केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि मानवता की आत्मा का उत्सव है, जो हमें याद दिलाता है कि सबसे मजबूत बंधन प्रेम, विश्वास और सम्मान की अनदेखी डोर से बुने जाते हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

एक भाव है राखी, हर भाई-बहन को बांधती है स्नेह की डोर से

राजेश जैन

रक्षाबंधन हर साल आता है पर हर साल कुछ नया दे जाता है- नई यादें, वादे और भरोसे। यह त्योहार हमें याद दिलाता है कि रिश्तों की असली मिठास महंगे उपहार में नहीं बल्कि उस धागे में होती है जो प्रेम, विश्वास और अपनेपन से बुना होता है। इसलिए भले ही राखी का धागा है बहुत हल्का हो लेकिन जब बहन अपने भाई की कलाई पर इसको बांधती है तो स्नेह का बंधन और मज़बूत हो जाता है। रक्षाबंधन कोई साधारण पर्व नहीं है. यह रिश्तों के गहराते रंगों का उत्सव है जो साल में एक बार भाई-बहन के बीच उस अनकहे वादे को फिर से ज़िंदा करता है — ₹मैं हमेशा तुम्हारी रक्षा करूंगा।₹ लेकिन क्या यह सिर्फ एक रस्म है? नहीं। रक्षाबंधन असल में उस भाई के स्नेह, जिम्मेदारी और साथ के अहसास का नाम है जिसे शब्दों में बांधना मुश्किल है। जब बहन राखी बांधती है तो वह सिर्फ सुरक्षा की मांग नहीं करती. वह अपने भाई से यह भरोसा भी मांगती है कि जब दुनिया उसके खिलाफ खड़ी हो तो उसका भाई उसके साथ खड़ा रहेगा—बिना सवाल, बिना शर्त।

हर लड़की के जीवन में उसका भाई पहला ऐसा लड़का होता है जिससे वह बिना झिझक प्यार करती है। वह उसके साथ खेलती है, लड़ती है, शिकायत करती है, फिर उसी से सबसे ज़्यादा हंसती है। भाई वह होता है जो उसे स्कूल ले जाता है, कभी चुपके से मां से पैसे लेकर उसकी फेवरेट आइसक्रीम दिला देता है तो कभी उसकी गुड़िया के बाल खुद सँवार देता है। छोटे भाई के लिए बड़ी बहन मां जैसी होती है और बड़े भाई के लिए छोटी बहन उसकी दुनिया में सबसे कीमती और इस रिश्ते में जो चीज़ सबसे खूबसूरत है— वह है स्नेह। वह स्नेह जो कभी चॉकलेट के झगड़े में छिपा होता है, कभी खिलौनों की साझेदारी में और कभी उस वक्त में जब बहन चुपके से भाई के लिए उसकी फेवरेट शर्ट खरीद लाती है।

जैसे-जैसे समय बीतता है, भाई-बहन बड़े हो जाते हैं। उनके रास्ते बदल जाते हैं। कोई हॉस्टल चला जाता है, कोई शादी के बाद दूसरे शहर लेकिन जब राखी आती है तो बचपन की सारी यादें लौट आती हैं। भाई फिर से वही नटखट बच्चा बन जाता है जो राखी बंधवाकर बहन की थाली में सबसे पहले मिठाई उठाता था और बहन भी वही बन जाती है जो हर बार राखी बांधते वक्त बस इतना ही सोचती थी—मेरा भाई हमेशा खुश रहे।

भाई का स्नेह – एक अनकही ज़िम्मेदारी

भाई का प्यार अक्सर चुप होता है। वह ना तो हर दिन कहता है-आई लव यू सिस, ना ही सोशल मीडिया पर बहन की फोटो पर ढेरों दिल बनाता है लेकिन जब बहन बीमार होती है, तो उसकी दवाई लाने वाला पहला इंसान वही होता है। जब बहन किसी बात पर उदास होती है, तो उसे सबसे पहले समझने की कोशिश भी वही करता है — भले ही उसके पास कहने के लिए शब्द न हों।

भाई का स्नेह शब्दों में नहीं, कर्म में दिखता है। वह अपनी बहन की हर ज़रूरत को बिना कहे समझ जाता है। जब बहन के ससुराल में पहली राखी होती है तो भाई मीलों दूर से बस इसलिए आता है कि उसकी बहन अकेली महसूस न करे। जब बहन की शादी होती है तो सबसे ज्यादा भावुक उसका भाई होता है लेकिन वह आंसू छुपाकर सबको हंसाता है।

भाई का प्यार रक्षा तक सीमित नहीं होता। वह अपनी बहन के सपनों में भी उसकी ढाल बनता है। जब बहन डॉक्टर, इंजीनियर या कलाकार बनना चाहती है और समाज ताने देता है, तब उसका भाई उसके लिए आवाज़ उठाता है। वह सिर्फ उसका रक्षक नहीं, उसका चीयर लीडर भी होता है—वह चुपचाप पीछे खड़ा होता है लेकिन बहन की हर उड़ान में उसकी ताकत बन जाता है।

बचपन की राखी से ज़िंदगी के रिश्ते तक

बहुत से भाई-बहन बचपन में राखी को बस एक रस्म मानते हैं। फिर से वही राखी? या कितनी बार ये धागा बाँधोगी? जैसे डायलॉग्स अक्सर सुनाई देते हैं लेकिन जैसे-जैसे वक्त बीतता है और ज़िम्मेदारियां बढ़ती हैं —राखी सिर्फ केवल त्यौहार नहीं रह जाती, वह एक भाव बन जाती है। जो भाई कभी राखी को बोझ समझता था, वही कलाई बहन के आगे कर देता है। जो बहन पहले उपहार को लेकर झगड़ती थी, वही बाद में कहती है— कुछ मत देना भाई, बस तुम खुश रहना।

दरअसल, रक्षाबंधन वक्त के साथ बदलता नहीं, बल्कि और गहराता है। यह रिश्ता हर साल उस धागे से और मज़बूत होता है जो बहन अपने हाथों से प्यार से बांधती है। हर बार राखी भाई को उसकी ज़िम्मेदारियाँ याद दिलाती है — कि यह बहन तुम्हारी ताकत है, तुम्हारी गरिमा है, और तुम्हारी प्राथमिकता भी।

दूरी हो या मजबूरी, रिश्ता कमज़ोर नहीं होता

आजकल बहुत से भाई-बहन एक-दूसरे से दूर रहते हैं। कोई विदेश में पढ़ाई कर रहा है, कोई नौकरी के सिलसिले में शहर से दूर है। कभी-कभी बहन की शादी किसी ऐसे घर में होती है जहां राखी पर मायके आना मुमकिन नहीं होता। लेकिन तब भी, एक लिफाफे में भेजी गई राखी, एक वीडियो कॉल पर बांधा गया धागा, या सिर्फ एक ₹हैप्पी राखी भाई₹ का मैसेज भी वही भाव लिए होता है।

रिश्ते ज़मीन से नहीं, दिल से जुड़े होते हैं और राखी का रिश्ता तो दिलों में बसता है। कई बार भाई अपनी बहन से दूर रहकर भी हर छोटी-बड़ी चीज़ का ख्याल रखता है — कभी ऑनलाइन गिफ्ट भेजकर, कभी अचानक सरप्राइज़ देकर या कभी चुपचाप उसके अकाउंट में पैसे डालकर।

और बहन? वह भी हर बार राखी के दिन अपने भाई को याद करती है, चाहे वह साथ हो या नहीं। वह अपने मन में वही दुआ दोहराती है जो बचपन से करती आई है — मेरे भाई को लंबी उम्र मिले, उसका जीवन खुशियों से भरा हो।

बदलते समय में बदलते रूप पर स्नेह वही पुराना

समय बदला है, पर रक्षाबंधन का महत्व कम नहीं हुआ। अब बहनें भी भाइयों की रक्षा करती हैं— आर्थिक रूप से, भावनात्मक रूप से और जीवन के हर मोड़ पर। आजकल कई बहनें अपने भाइयों को पढ़ाती हैं, उन्हें सहारा देती हैं और ज़रूरत पड़े तो उनके लिए दुनिया से लड़ भी जाती हैं। इसलिए अब रक्षाबंधन का मतलब सिर्फ भाई की ओर से रक्षा नहीं बल्कि आपसी सुरक्षा, सहयोग और स्नेह का त्योहार बन गया है। यह रिश्ता अब बराबरी का है — जिसमें भाई-बहन दोनों एक-दूसरे के दोस्त, मार्गदर्शक और सहारा हैं। आजकल बहनें भी अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधते हुए बस इतना नहीं कहतीं कि तुम मेरी रक्षा करो, बल्कि वह ये भी कहती हैं — मैं भी तुम्हारे साथ खड़ी हूँ, हर हाल में।

एक डोरी जो जीवन भर साथ निभाती है

राखी एक ऐसी डोरी है जो वक्त, दूरी, उम्र और हालात — किसी भी चीज़ से नहीं टूटती। यह एक ऐसा रिश्ता है जो बिना शर्त के बना रहता है। भाई चाहे कितना ही गुस्सैल हो, लापरवाह हो या मज़ाक उड़ाने वाला — बहन के लिए वह हमेशा वही प्यारा भाई होता है, जिसकी कलाई पर राखी बांधना सबसे प्यारा एहसास होता है। और भाई? चाहे दुनिया के कितने भी झगड़े हो लेकिन राखी के दिन उसकी आंखों में नमी और दिल में नरमी ज़रूर होती है। वह चाहे जताए या नहीं पर हर भाई अपनी बहन को देखकर यही सोचता है— ये मेरी ज़िम्मेदारी है और मेरी ताकत भी। इसलिए इस रक्षाबंधन पर अगर आपका भाई दूर है तो उसे एक कॉल ज़रूर करें। अगर आपकी बहन व्यस्त है तो उसे एक सन्देश अवश्य भेजें और अगर आप दोनों साथ हैं तो एक साथ बैठकर उन बचपन की बातों को फिर से जिएं।

कहानी: डिजिटल राखी

डॉ. सत्यवान सौरभ

रक्षाबंधन की सुबह थी। मुंबई के एक छोटे से अपार्टमेंट में रहने वाली श्रद्धा की आँखें अलार्म के तीसरी बार बजने के बाद खुलीं। खिड़की से बाहर झाँका तो बादलों से ढका आसमान और हल्की फुहारें उसके मन की हलचल से मेल खा रही थीं। लेकिन आज कुछ अलग था—आज रक्षाबंधन था।

श्रद्धा की माँ हर साल इस दिन पर घर को फूलों से सजाती थीं, मिठाई बनती थी, और भाई को तिलक लगाकर राखी बाँधने के बाद आरती उतारी जाती थी। लेकिन इस बार सब कुछ बदल चुका था। अब वह अकेली थी। माँ-पापा को गए हुए दो साल हो चुके थे, और भाई ऋषभ अमेरिका में था।

श्रद्धा ने अपने मोबाइल पर व्हाट्सएप खोला और भाई को ₹हैप्पी राखी भैया₹ का मैसेज भेज दिया। थोड़ी देर बाद उसने अपने लैपटॉप पर ज़ूम मीटिंग का लिंक खोल लिया — यह ऑफिस मीटिंग नहीं, भाई के साथ एक वर्चुअल राखी सेरेमनी की थी।

लिंक पर क्लिक करते ही स्क्रीन पर ऋषभ की मुस्कुराती हुई शक्ल आई।

₹हाय दीदी! कैसी हो?₹

₹ठीक हूँ भैया... तुम्हें राखी की ढेर सारी शुभकामनाएं।₹ श्रद्धा ने कैमरे के सामने एक राखी दिखाई, और फिर पास रखे एक छोटे से थाल में तिलक, चावल और मिठाई का इंतज़ाम कर लिया।

ऋषभ मुस्कुराया, ₹इस बार कुछ खास किया है मैंने।₹

₹क्या?₹

₹तूने जो राखी मुझे मेल से भेजी थी, वो मैंने 3D प्रिंटर से प्रिंट की... और फिर उसको फ्रेम में लगवा लिया। मेरे वर्कडेस्क पर है।₹

श्रद्धा की आँखें भीग गईं। उसने जानबूझ कर राखी इस बार अमेरिका भेजी थी, भले ही हर साल भाई मना करता था। आज पहली बार उसे लगा कि डिजिटल दूरी के बावजूद रिश्ता ज़िंदा है।

श्रद्धा ने तिलक किया, मिठाई खिलाई (स्क्रीन पर ही सही), और राखी बाँधी। ऋषभ ने भी डिजिटल गिफ्ट कार्ड भेजा, साथ में एक लंबा सा ईमेलः

>₹दीदी, हर साल तेरा बिना बोले सब कुछ समझ जाना, मेरी छोटी-छोटी बातों पर मुस्कुरा देना, और बिना कहे ही मेरी दुनिया को ठीक कर देना...

इन सबका कोई मोल नहीं है।

मैं जानता हूँ, तू अब अकेली है। पापा-मम्मी के जाने के बाद ये त्यौहार भी जैसे बेमानी हो गया था, लेकिन तूने कभी मुझे फील नहीं होने दिया।

तू मेरी सबसे बड़ी ताक़त है। राखी केवल धागा नहीं है, ये एक वादा है — कि चाहे मैं कितनी भी दूर रहूँ, तुझे हमेशा अपनी हिफाज़त में रखूँगा।

और हाँ... अगली बार राखी पर मैं इंडिया आ रहा हूँ। रियल राखी के लिए।

– तेरा ऋषभ₹

श्रद्धा की आँखों से आँसू बह निकले। उसके मन की सूनी राखी अचानक सबसे खूबसूरत हो गई।

श्रद्धा एक मल्टीनेशनल कंपनी में सीनियर डिजाइनर थी। वह अपने काम में माहिर थी, आत्मनिर्भर और संवेदनशील भी। लेकिन हर बार रक्षाबंधन आते ही वह एक बच्ची बन जाती थी। माँ के हाथों की बनी खीर, पापा की शरारतें, और ऋषभ का मिठाई के लिए जिद करना — ये सब यादें आज भी ताज़ा थीं।

आज उसने ऑफिस से छुट्टी ली थी। एक ओर ज़ूम कॉल से भाई को राखी बाँध दी थी, पर दिल का कोना अब भी अधूरा था। वह बालकनी में बैठी

थी, आसमान की ओर देख रही थी।

तभी दरवाज़े की घंटी बजी।

कौन हो सकता है?₹ उसने मन में सोचा।

दरवाज़ा खोला तो सामने डिलीवरी बॉय खड़ा था। हाथ में एक खूबसूरत पैकेट था।

मैम, यह आपके लिए अमेरिका से है।

श्रद्धा ने हस्ताक्षर किए और पैकेट खोला। उसमें एक छोटा सा म्यूजिकल बॉक्स था। जैसे ही उसने ढक्कन खोला, एक प्यारी सी धुन बजने लगी — वही गाना जो वो और ऋषभ बचपन में मिलकर गाते थेः ₹फूलों का तारों का, सबका कहना है, एक हज़ारों में मेरी बहना है₹—

बॉक्स के अंदर एक पेंडेंट था, जिसमें उनके बचपन की फोटो जड़ी थी, और एक छोटा सा कार्डः

दीदी,

यह हमारे बचपन की आवाज़ है। ताकि जब भी तू खुद को अकेला महसूस करे, यह तुझे याद दिला दे कि मैं हमेशा तेरे साथ हूँ।

ऋषभ

श्रद्धा ने वह पेंडेंट अपने गले में पहन लिया। वह अब मुस्कुरा रही थी, और उस मुस्कुराहट में आँसू भी थे, सुकून भी।

शाम को श्रद्धा अपनी कॉलोनी के बच्चों के साथ मिलकर एक छोटा-सा राखी समारोह आयोजित करती है। वह जानती है कि बहुत से बच्चे ऐसे हैं जिनके भाई दूर रहते हैं या हैं ही नहीं। वह उन बच्चों को राखी बाँधने का अवसर देती है और उन्हें बताती है कि भाई-बहन का रिश्ता केवल खून का नहीं होता, भावनाओं का भी होता है।

वहाँ एक छोटी बच्ची, सिम्मी, उससे पूछती है, ₹दीदी, अगर मेरा कोई भाई नहीं है तो क्या मैं किसी को राखी नहीं बाँध सकती?₹

श्रद्धा मुस्कुरा कर कहती है, ₹तू जिसे अपना मीत समझे, उसे राखी बाँध सकती है। रक्षा का रिश्ता प्यार का होता है, खून का नहीं।

वह बच्ची अपनी एक सहेली को राखी बाँधती है और सब तालियाँ बजाते हैं। श्रद्धा की आँखों में चमक थी। उसने महसूस किया कि रक्षाबंधन अब केवल भाई-बहन तक सीमित नहीं, यह एक सामाजिक भावना बन गया है — एक-दूसरे की रक्षा का संकल्प।

रात को जब श्रद्धा ने अपने कमरे की लाइट बंद की, तो दीवार पर उस पेंडेंट की छाया थी। जैसे उसकी स्मृतियाँ अब भी उसके पास थीं। मोबाइल पर ऋषभ का एक और मैसेज आयाः

>₹दीदी, अगली बार जब तू राखी बाँध रही होगी, मैं तेरे सामने बैठा रहूँगा... कोई स्क्रीन नहीं, कोई दूरी नहीं।₹

श्रद्धा ने रिप्लाई कियाः

>₹मैं इंतज़ार करूँगी, भैया। इस बार राखी सिर्फ डिजिटल नहीं होगी... असली होगी, गर्माहट के साथ।

वह मुस्कुराई, और चैन से सो गई।

सीखः रिश्ते बदलते दौर के साथ अपने रूप बदल सकते हैं, लेकिन उनकी आत्मा हमेशा वही रहती है। डिजिटल दुनिया में भी अगर भावनाएँ सच्ची हों, तो दूरी कोई मायने नहीं रखती।

पट्टामुंडई में युवती ने की आत्महत्या: पीड़िता के पिता का चौंकाने वाला बयान

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: केंद्रपाड़ा ज़िले के पट्टामुंडई में एक युवती ने आत्महत्या कर ली। सस्पेंस गहरा गया है। पीड़िता के पिता ने एक चौंकाने वाला बयान दिया है। उन्होंने कहा, मेरी बेटी को बाँधकर जला दिया गया। मुझे लगता है कि उसे बिजली के तार से बाँधा गया था। इस बयान के बाद, क्या पीड़िता ने खुद को जलाया या किसी ने उसकी हत्या की?अब इस पर सवालिया निशान लग गया है। पीड़िता के पिता ने भी कहा है कि लड़का उन्हें बार-बार प्रताड़ित करता था। वह मुझे और मेरे बेटे को अश्लील तस्वीरें भेजता था। मैं दो बार पुलिस स्टेशन गया था। मैं सरपंच के साथ भी पुलिस स्टेशन गया था। मैंने अश्लील तस्वीरें छोड़ने, परेशान करने और गाली-गलौज करने की शिकायत की थी। उसने पत्र में बच्चे का नाम नहीं लिखा था। मुझे कुछ याद नहीं है। उसे पुलिस में स्थानांतरित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि निलंबित किया जाना चाहिए।

इस बीच, युवती के शव को पोस्टमार्टम के लिए कटक बड़ा मेडिकल कॉलेज भेज दिया गया है। अधिक तकनीकी सहायता और अनुभवी डॉक्टरों के सहयोग के लिए शव को कटक स्थानांतरित कर दिया गया है। घटना की निष्पक्ष जांच के लिए ग्रामीण पुलिस स्टेशन के एएसआई सौलेंद्र नारायण पलेई का तबादला जिला पुलिस मुख्यालय में कर दिया गया है।

जानकारी के अनुसार, युवती का कथित प्रेमी ब्रेकअप के बाद से उसे ब्लैकमेल कर रहा था, उसकी तस्वीरें वायरल कर रहा था, उसे परेशान कर रहा था और मानसिक रूप से प्रताड़ित कर रहा था, और वह 6 से 8 महीने पहले अपने परिवार के सदस्यों के साथ स्थानीय पुलिस स्टेशन गई थी। थाने में शिकायत दर्ज कराने के लिए उसे घंटों इंतजार करना पड़ा। लेकिन पुलिस के एएसआई सौलेंद्र मोहन पलेई ने हार नहीं मानी। जिम्मेदारी से बचने के लिए युवती के कथित प्रेमी ने, जो उसे ब्लैकमेल कर रहा था, उससे युवक का फोन नंबर ब्लॉक करने को कहा। उसने उसे ब्लैकलिस्ट में डालने की बात कही। मृतक छात्रा के पिता ने आरोप लगाया कि पीड़िता के परिवार ने मामला दर्ज करने से इनकार कर दिया। इसके बाद उन्होंने पुलिस को फोन पर मौखिक रूप से इसकी जानकारी दी, लेकिन पुलिस की ओर से कोई सहयोग नहीं किया गया। पुलिस द्वारा शिकायत दर्ज करने से इनकार करने के बाद छात्रा पूरी तरह टूट गई। प्रेमी की यातना दिन-ब-दिन असहनीय होती जा रही थी। जिसे वह अब और सहन नहीं कर सकती थी। चर्चा है कि उसने आत्मदाह करने का फैसला किया। इस घटना ने एक बार फिर पुलिस पर उंगली उठाई है।

माँ की जान बचाने बेटी जाती तड़प...!

कंधमाल के गांव में अभी तक नहीं बनी है सड़क,
पीठ पे लाद माँ की जान बचाने बेटी जाती तड़प।
डुमेरी पाड़ा गांव में बालामादु नामक एक महिला,
सोते समय 'जहरीले सांप' ने काटा परिवार हिला।
महिला को अस्पताल पहुंचाने एंबुलेंस फोन किया,
गांव में सड़क नहीं एंबुलेंस का सारामुंडी में ठिया।

कंधमाल के गांव में अभी तक नहीं बनी है सड़क,
पीठ पे लाद माँ की जान बचाने बेटी जाती तड़प।
वह जंगल के रास्ते 'पांच' किलोमीटर पैदल चली,
भले व्यक्ति की मदद मिली तीन किलोमीटर बढ़ी।
मोटर साइकिल पर बिठा एंबुलेंस तक पहुंचवाया,
दुर्गम रास्तों से अस्पताल जाते उठा माँ का साया।

कंधमाल के गांव में अभी तक नहीं बनी है सड़क,
पीठ पे लाद माँ की जान बचाने बेटी जाती तड़प।
क्या? हुआ सड़क न बनी सत्तर साल तक दरकार,
कितनी पीढ़ियां निकलीं अभी रहम करों सरकार।
ग्रामीण प्रशासन से कर रहें सड़क बनाने की मांग,
सत्ता की चाबियां न उछालो न जाओं सीमा लांघ।
(संदर्भ-इलाज हेतू माँ को पीठ पे लाद 5 किलोमीटर पैदल चली बेटी)

संजय एम तराणेकर

जमशेदपुर में ज्ञानचंद जायसवाल के याहां ईडी का 750करोड सीएसटी घोटाले पर रेड

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर, झारखंड में इन दिनों ईडी पुनः सक्रिय हो गयी है ।अबकी। बार इसके शिकार नेता नहीं वल्कि पुलिस माफिया की दवंगई से कारोबार करने वालों 750 करोड़ घोटालेबाजों पर. जमशेदपुर में प्रवर्तन निदेशालय वृहस्पतिवार को व्यवसायी ज्ञानचंद जायसवाल उर्फ बबलू जायसवाल के कई ठिकानों पर एक साथ छापेमारी की. ईडी की टीमें बिष्टुपुर, बर्मामाइंस, जुगसलाई और आदित्यपुर औद्योगिक क्षेत्र स्थित प्लांट में सुबह एक साथ पहुंची. आदित्यपुर हथियाडीह स्थित शारदा एंडेवर्स फैक्ट्री और बिष्टुपुर स्थित कांट्रैक्टर्स एरिया में जायसवाल के आवास पर ईडी की टीम की छापेमारी चल रही है. छापे के दौरान अधिकारियों ने दस्तावेजों की गहन छानबीन की और इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस समेत कई महत्वपूर्ण कागजात जब्त किये हैं.

यह कार्रवाई लगभग 750 करोड़ रुपए के जीएसटी घोटाले से जुड़े मामले में की जा रही है. इससे पहले भी स्क्रैप व्यवसाय से जुड़े ज्ञानचंद जायसवाल को जीएसटी घोटाला मामले में गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था. बबलू पर फर्जी बिलिंग और टैक्स चोरी के माध्यम से करोड़ों की हेराफेरी का आरोप है.

प्रवर्तन निदेशालय के अधिकारियों द्वारा फिलहाल इस मामले में मीडिया से कोई जानकारी साझा नहीं की जा रही है.

ज्ञान चंद्र जायसवाल पर पूर्व में 55.66 करोड़ रुपए के जीएसटी घोटाले का आरोप लगा था. इसमें मेसर्स जय भोलानाथ कंपनी, मेसर्स मां शारदा एंडेवर, मेसर्स मेकर्स कास्टिंग प्राइवेट लिमिटेड कंपनी से 22.31 करोड़ रुपए, मेसर्स केदारनाथ ट्रैक्सीन, ज्ञानदीप आयरन प्राइवेट लिमिटेड व मेसर्स विभ्रान स्क्रैप कंपनी आदि कंपनी से 33.35 करोड़ का इनपुट टैक्ट क्रेडिट लेने का आरोप लगा था।

राजस्थान के पाली मारवाड के ग्राम खारडी मे स्थित मा गायत्री गौशाला मे महिला भजन मंडली के सहयोग से गौमाता के लिए मोक्ष वाहिनी गौशाला के अध्यक्ष खीवाराम मुलेवा व समस्त कार्यकारिणी के सानिध्य मे भेंट की ,कार्यकारणी ने समस्त महिलाओ का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सरायकेला मे अवैध बालू ,क्वाट्र्ज खनन - परिवहन पर विभाग का जोरदार दबिश

भोर 4 बजे मांजना घाट पुल पर ट्रेक्टर जप्त तो दिन में नीमडीह मे हायवा जेसीबी पर प्राथमिकी दर्ज

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला। खनन विभाग सरायकेला द्वारा पौ फटने के पहले मांजना घाट पुलिया के समीप एक ट्रैक्टर वाहन को अवैध रूप से बालू का परिवहन करते हुए जप्त किया गया है । भोर चार बजे खनन विभाग के निरीक्षक ने कर्मठ जिला खनन पदाधिकारी ज्योति शंकर सतपथी के निर्देश पर एक कंट्रेक्ट को पकड़ा पर चालक गाड़ी खड़ी कर कहीं भाग निकला। बताया जाता है कि ट्रेक्टर नंबर विहीन था ।

इसके बाद खनन विभाग के अधिकारी अपना ड्रायवर के साहरे उसे थाने में ले गये । प्रकरण से संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध सुसंगत धाराओं एवं प्रावधानों के अंतर्गत अग्रेतर कार्रवाई जारी है ।

आज ही नीमडीह थाना अंतर्गत झिमरी में क्वार्टजाइट खनिज के अवैध खनन/परिवहन से संबंधित शिकायत के आलोक में जिला खनन विभाग की टीम तथा नीमडीह थाना की टीम के द्वारा संयुक्त निरीक्षण किया गया। स्थलीय निरीक्षण में अवैध खनन के साक्ष्य मिलने पर जमीन मालिक, संविद धारित व्यक्ति तथा अन्य संलिप्त व्यक्तियों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की गई। इसी क्रम में उक्त स्थल से जब्त जेसीबी वाहन- JH05W9604 तथा अवैध क्वार्टजाइट लदे ट्रक WB37E4245 के विरुद्ध करवाई करते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई गयी ।

जिला खनन पदाधिकारी ने यह स्पष्ट किया है कि खनिज संसाधनों के अवैध उत्खनन एवं परिवहन की गतिविधियों को किसी भी स्थिति में सहन नहीं किया जाएगा। इस प्रकार की गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण हेतु प्रशासन द्वारा लगातार निगरानी की जा रही है तथा दोषियों के विरुद्ध कठोर विधिक कार्रवाई सुनिश्चित की जा रही है ।

ओडिशा राज्य चिकित्सा निगम द्वारा रोगी सेवाओं में निविदा धोखाधड़ी

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर: राज्य के सभी मेडिकल कॉलेजों एवं अस्पतालों तथा जिला मुख्यालयों के अस्पतालों में इलाज के लिए आने वाले मरीजों के रक्त परीक्षण हेतु आवश्यक चिकित्सा उपकरणों की खरीद हेतु ओडिशा चिकित्सा निगम द्वारा निविदाओं के चयन में व्यापक अनियमितताएँ और अवैध गतिविधियाँ सामने आई हैं। इसलिए, ओडिशा के नागरिक संगठनों द्वारा इसकी सतर्कता जाँच की माँग की जा रही है।

गौरतलब है कि राज्य में 8 मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल हैं, जिनके नाम हैंः श्री रामचंद्र भांजा मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, भीमसर बुर्ला, महाराजा कृष्णचंद्र गजपति मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, बरहामपुर, शहीद लक्ष्मण नायक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, कोरापुट, आदि। शिशु भवन, आचार्य हरिहर कैंसर उपचार केंद्र, 30 जिला मुख्यालयों और अन्य सरकारी अस्पतालों में प्रतिदिन हजारों मरीज इलाज के लिए आते हैं। सरकार उन्हें निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान करती है। न केवल निःशुल्क उपचार, बल्कि सभी मरीजों को निःशुल्क दवाएँ भी प्रदान की जाती हैं और सरकार उपचार के लिए आवश्यक सभी प्रकार की चिकित्सा जाँचें भी निःशुल्क करती है। और इसके लिए सरकार आवश्यक चिकित्सा उपकरण भी उपलब्ध कराती है। ओडिशा राज्य औषधि निगम के माध्यम से। हर साल सभी दवाइयाँ और चिकित्सा उपकरण खरीदे जाते हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि राज्य औषधि निगम द्वारा दवाइयों और चिकित्सा उपकरणों की खरीद के लिए निविदाओं के चयन में व्यापक अनियमितताएँ हैं।

जिसका स्पष्ट प्रमाण रक्त परीक्षण उपकरण निविदा के चयन से मिलता है। हालांकि, औषधि निगम की मनमानी और अवैधानिक कार्रवाइयों का विरोध करते हुए, पिछली निविदा में सभी योग्यताएँ होने के बावजूद एकल बोली में चयनित न होने वाली कंपनी ने ओडिशा उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। उच्च न्यायालय ने इस मामले में राज्य औषधि निगम को नोटिस जारी किया है। इसके अलावा, राज्य औषधि निगम ने नोटिस का जवाब दिए बिना अपनी पसंद की कंपनी से मशीनें खरीदने का क्रय आदेश दे दिया है। यदि मशीनें तत्काल आवश्यकताओं के लिए खरीदी जानी थीं, तो पिछले दो वर्षों की निविदा किसी तरह रद्द कर दी गई। वित्तीय वर्ष 2023-2024 के लिए आमंत्रित निविदा अगस्त 2025 तक अंतिम रूप नहीं दी गई। ओडिशा के एक नागरिक संगठन ने इस बात की सतर्कता जांच की मांग की है कि दवा निगम उच्च न्यायालय को जवाब दिए बिना मशीनें कैसे खरीद रहा है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023